ज्योतिष

रणवीर विजयम्
यज्ञविषयम्

खंडितम्

१५२



रल ॐ श्रीगणेशाय नमः ग्रंथनिर्वि
वि॰ घ्नसमाप्तिके वास्ते नमस्काररूप
१ मंगल करते हैं श्रीगणेशं नम
स्कृत्येति श्रीप्रभाकरके पूज्य जो
गणेशजी हैं तिनोंको नमस्कार
करके कैसे हैं गणेशजी मनका

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ श्री
गणेशं नमस्कृत्य वांछिता
र्थफलप्रदं वाणीं दिवाकरं
चापि देवकृष्णाभिधं गुरुं १

वांछित जो ग्रंथ प्रयोजन है
तिसके फलको देनेवाले हैं हो
र वाणी जो सरस्वती है दिवाक
र जो सूर्य है होर देवकृष्णना
मवाले योग्य हैं तिनको नम
स्कार करके इस ग्रंथको वर्ण

नाहो १ यस्येति जिसका स्मर॰
णमात्रकरणेष्ठा वीरपुरुष यु
द्धरूपी समुद्रको तरतेहैं अर्था
त् जयको प्राप्त होतेहैं अस्मि॰

यस्य स्मरण मात्रेण वी
रा युद्धे तरंतिते सास्मि
तूण यत्र बाण पाणिः
वंदे रघूत्तमम् २ यही
ना राज विजया ऋजंद॰
विजया तथा श्रीमः पर
भवाब्धेश्च मारुतजया
र्णवात् ३

धनु तूणतुरी पकड होर बा
ण पकडे पाणी हाथों विषे
जिनके ऐसे रघूत्तम श्रीरामचं
द्रजीको वंदना प्रणाम करता

रण हो २ इसग्रंथविच जिनग्रंथों
वि. के वीचमें निकालकर संग्रह
२ कियाहै उनग्रंथोंकेनाम लिखे
तेहैं रणहस्तिकनाम आचार्यने
बनाया राजविजयग्रंथहै १॥

2

नरपत्यादिकेभ्योऽर्थ इहो
क्ता सारउक्तमें भाषा व्या
ख्यान सहित सुबोध १॥
इ समाप्ते ४

औद विजयनामाकजो ग्रंथ
है शत्रुपराभवाख्य जो ग्रंथ
है युद्धजयार्णवजो ग्रंथहै २
हौरनरपतिजयचर्या आदि
क विजयकल्पलता समर
मंजरी समरसार होरखी १॥

इष्टे उपयोगी यो मंत्र यंत्र ।
तंत्रादिकजोहै इना समग्रं ।
थोंमें सुइष्टे उपयोगी सार
निकालकर भाषा व्याख्यान
कराभाषाटीका सहित ४

विश्वेश्वरः प्रकृते रण
वीर नृपाज्ञया रणवीर
त्नविजयं नृपाणां हित
काम्यया ५

टीका श्रीमहाराजाधिराज
जम्बू काश्मीर तिब्बतादि ।
अनेकदेशाधीश परमका
रुणिक श्रीरणवीरसिंहजी
की आज्ञासे विश्वेश्वरनामक
जो ज्योतिषी है उसने रणवी

रण॰ र विजयनामक इहग्रंथवना
वि॰ या राजयोंकेहितकेवास्ते इस
१ ग्रंथकानाम रणवीरविजय
इसवास्ते रखाहै कि इसको
अछेतरह विचारलेसे युद्ध॰
मेविजयहोताहै अथवा॰
श्रीरणवीरसिंह महाराज
की आज्ञासे वनाया इसवा
स्ते इसदानामरणवीरवि॰
जयहै ५ बहुधाइति सदा
शिवजीने बहुतप्रकारकेके
स्वरशास्त्र वनायेहैन उनो
की एकवाक्यता को भगवा
न शिवजीही जानतेहै स
म्यक् अछीतरहसे होरलो
क संपूर्ण शुभमार्गोंदे अत्र॰

3

गतहे जैसा गरूने रस्ता ब-
नायाहे तिसकेपीछे चलते
हैं १ जोऊच्च इसरणवीरवि
नयमें संग्रहकियाहे इसी-
को विचारकरके यो राजाप्र

वऊया विदधे महाशिवा
त्र स्वरतंत्राणि तदेकवा-
कालोत भगवा नयमेव
वेद सम्य गुरुमार्गाढुग
तो परतलोकः १ सद
हीने यदत्राप्ति तावदेव
विचार्ययः ।

इकेवास्ते यतनकरताहे-
सो अल्पथोडी सेनाकरके
युक्तहोव तद विजयकोपा
महोताहे अर्थोत स्वरशा

रा॰ स्वका बल वर्णाहै १ मत्तद्वि
वि पाइति मदमत्त द्विप हाथी
४ होर वाय नल्प वेगवाले ।
घोडे होर हजारो पयादे म
नुष्य होवे परंतु स्वरोदय ब

५

युद्धाय पतते राजा सो
ल्पा पि जयति ध्रुवम्
मत्तद्विपा वाय नवा ल्प
वेगाः सहस्रशः संत प
दातयश्च ।

नकर के युक्त जो विश्वंभरे
श विश्वंभरा पृथिवी का ।
स्वामी राजा है सो जय को
प्राप्त होता है अर्थात हा ।
थी घोडे सेना युक्त भी ।

होवे परंतु स्वरबलसे रहित
होवे तो पराजयको प्राप्त।
होताहै ॥ टीका उत्साहेति
उत्साहशक्ति प्रभुत्वशक्ति।

स्वरोदयाध्व: स्वल यस्त्व
युद्धे विश्वभरेशो विजेय
भवेत्स: ॥ उत्साह प्रभु
शक्ति मंत्र सहित: श्री
मा विलीनेंद्रियो नित्य
य मयवि त्तमी व नल
स: प्राप्त: प्रजारंजक:

मंत्रशक्ति इनोत्रयशक्तियों
करकेयुक्तहोवे श्रीमान् शो
भायुक्तहोवे विलीनेंद्रिय:
का जितेंद्रीहोवे नित्याय।

२० य श्रयवित रोज रोजका श्रापने
वि० श्रामदनी श्रथ खरचको जान
५ नेवाला होवे कि हमारा श्राज
का खरचा होयाहै श्रोर श्राम

5

धीरः सच्चरित शुचै रजुरि
ने विज्ञान लोकस्थितिः
नित्यो योगकरः स्तिती
शा तिलकः स्या सम्पदा
मास्पदम् ॥

हने क्या होईहै इसकोजाने
श्रोर ज्ञमावालेहोवे श्रालस
में रहितहोवे सात बुद्धिवान
होवे श्रोर प्रजाको प्रसन्न र
खने वालाहोवे धीरका ।

अविचारित कार्य नहीकरे ।
होर श्रेष्ठ चरित्र वालाहोवे
होर वरयो हूतेहे उनोंकरके
लोकोंकि स्थितिकोजाने हो
र नित्य उद्योगको करणे वा
ला जो राजोंका तिलकरूप
शिरोमणि राजाहै सो संपूर्ण
संपदा का स्थान होताहै ८

रण वि. १ टीका पतियोंहै पयादे अ
श्व घोडे गज हाथी भूपाल
राजे इन्हों करके संपूर्ण
भरीहुई यो वाहिनी सेना।

6

पत्य श्व गज भूपालैः
संपूर्णा यदि वाहिनी
तथा पि भंग माया
ति नृपो हीनः स्वरो
दये १०

होवे तदभी भंगको प्राप्त
होती है यद सेनाका स्वामी
राजा स्वरोदय शास्त्रके
ज्ञानसे हीन होवे १० ॥

तावत उतने तक सो वीरभज्जो करके आहव युद्ध रूपी समु द्र को तरते हैं यावत जवत कस्खराल वडवानल चक्र विषे नेपोंदे जैसे समुद्र विषे वडवानल अग्नि के चक्र मे जो

तावत वे नितेवीरा टोर्भा माहव सागरे याव त्प नेति नो चक्रे स्वराल व डवानले ॥ ॥

पोंदे हैं सो नहीं बचदे तैसे ही योभ्रस्त खर स्तन खर आदि निषिद्ध खरों में शब्द के वाले प्रवृत्त होते हैं सो जय को प्रा प्त नहीं होंदे ॥ ॥

रण
वि॰
७

और कथंचित का दैवयोग
मे स्वरशास्त्र के जाननेवाले
यों विना की राजा युद्ध मे विज
जय को प्राप्त होवे तद्वह ज
य घुनवर्णी की उपमा दे तुल्य
है जैसा घुण लकडी को काट

कथंचिद्विजयी युद्धे स्व
रज्ञेन विनान्नृपः घुण
वर्णोपमं तत्र यथा ध
वटकयक्षरः १२ ॥

ता है तो अक्षर बन जाता है
परंतु घुण अक्षर नहीं जा
नता था हो र जैसे शस्त्रधार
मी चिडे को पकड लेवे तो सह
ज मे विना जय वी है १२ ॥

इसराजाकेराष्ट्रमें इकवी।

खरशास्त्रकापारंगमनेहै

उसदाराज्यरेभासारोपमाहै

अर्थात् केलेदीन्याई पोला

यस्यैकोपिराष्ट्रेनास्ति ख

रशास्त्रस्यपारगः रेभा

सारोपमंराज्यंनिश्चितं

तस्यभूपतेः ॥२॥ स्वरशा

स्त्रेसदाभ्यासी सत्यवादी

जितेन्द्रियः तस्यादेशस्य

यःकर्त्ता जयश्रीस्तंरपं

भजेत् ॥३॥

है हठनहीहै निश्चयकर्के ॥२॥

योस्वरशास्त्रविषेसदाअभ्या

सकरेहोरजितेन्द्रियवीहो

वे उसदेआदेसआज्ञाको ।

रल॰ करणेवालाजोराजाहै उस
ति॰ कोजयश्रीप्राप्तहोतीहै १४
८ स्वरदेवलकने इकसेदश॰
कोमारताहै दशाकने सौ
सौवेकने हजारकोमारता॰

8

दशोकेनशतंहंति सह
स्त्रशतसख्यया स्वरोद
येवलीराजा दशाब्रेहे
तिलीलया १५ ॥

है जोराजास्वरोदयकेवल
करके युक्तहोवै सोदशट
शतहजारदे सेनावालेशत्रु
को लीलाकरकेमारताहै
१५ ॥

पुष्टोंकरकेवीयुद्धनहीं
करणा जवतकहीनस्वर
दाउदयहोवे होरस्वरोदय
वलदेप्राप्तहोइ देकोडोंश
त्रोंमेवीयुद्धकरणा ९ इति
स्वरप्रशंसा अथस्वरोंकेभेद

पुष्टैरपिनयोद्धव्यं या
वद्धीनस्वरोदयः स्वरो
दयवलेप्राप्ते योद्धव्यं
शत्रुकोटिभिः ९ स्व
राषोडशसंख्याता मा
त्रकायाप्रगतेनैः ॥

कहतेहैं ब्रह्मादिकोनेवर्णा
वलीमेषोलास्वरकहेहैं
अआइईउऊऋॠलृॡए

रत्न॰ ऐ ओ औ अं अः तिनोंमें ऋ ॠ
वि॰ ऌ ॡ नष्टसकै है होरअंत॰
८ के दो स्वर अं अः एहके स्वर
विद्वानोंने त्यागदिये है १७
बाकीजोशेष अआइई उऊ
एऐ ओऔ दशस्वर है तिना

9

ऋॠऌॡनेअंअःहा
वेस्योचत्यजेद्बुधः १२ शे
षाद्दशस्वरास्तेषु स्यादेके
केहिकेद्विके ग्राह्याःपंच
स्वरानेयास्वरशास्त्रोपयो
गिकाः १८
सेएकएकमेदोदोजानने जे
मेअह्रस्वकेउच्चारणकरणे॰
योंदीर्घआवीजाननाचाहि
ये इहपंचस्वरशास्त्रविबेकमें १८

अकारवासुदेवविष्णुहै इस
वास्तेपहिलेअकारलिखाहै
इकारविष्णुदीप्रियाहैलक्ष्मी
इसवास्ते अकारथोंआगेलि
खीहै उकारशिवरूपहै ए·

अकाराद्याःस्वराःपंच
ब्रह्माद्याःपंचदेवताः।
निवृत्याद्याकलाःपंच
इच्छाद्येशक्तिपंचकं ॥

कारसूर्यहै ओकारचंद्रमा·
है अवइनकीदेवतालिखते
है अकारदास्वामीब्रह्महै ।
इकारदाविष्णु उकारदाशि
व एकारदासूर्य ओकारदा
चंद्रमा इनकाप्रयोजनयह

वल है किं जिसस्वरविचकमक
वि॰ रनीहोवे उसदेदेवताध्यान दा
९॰ करीलेना अथवा माउस्वर
होवे नोउसदेदेवतादापूजन
करणा होर अकारदीनिवृ॰
तिनामकलाहै इकारदीप्र
तिष्ठानामकलाहै उकारदी
वियाकलाहै एकारदीशां
तिकलाहै ओंकारदीअति
शांतिकलाहै निवृतिकरके
यात्राथींनिवृतिजाननी ।
जदकोई अकारदेउदयमें
प्रश्नपुच्छे यात्रादा नदनिवृ
तिकहनी क्याहवेकने ।
श्रवेगा इसेनरहउकारदे
उदयमेंप्रतिष्ठाप्राप्तहोतीहै

उकारदेउदयमेविद्याज्ञानकी
प्राप्तिहोतीहै एकारदेउदय
मेंशांतिकाशुभहोताहै ऐं
कारदेउदयमेंशांतिशांतिका
वदाज्ञानमोक्षहोताहै ऐसेश
ब्दाफलकहणा होरइकाना
नप्रभाशुद्धा मेथा इहक्रमसे
अकारादि स्वरादिया पंजशक्ति १९
एषांपंचस्वराणांच भेदावक्ष
मितामताः मात्रावर्णोग्रहोजी
वोराशिभेपिंडयोगको १

इक्षापूर्वोक्तपांचस्वरादे अष्टभे
दहेन मात्रास्वर वर्णस्वर ग्रह
स्वर जीवस्वर राशिस्वर नक्षत्र
स्वर योगस्वर पिंडस्वर २ ॥

रए०
वि०
११

इसतादा आदमी जिस नामके
बुलानेसों उद्दे और जिसनाम
के कहनेसोंकमकरे उसनाम
के आदिवर्णमे यो स्वरहोवे
सोमात्रास्वरजानना और जि
सकेनामदे आदविषे केवल।
स्वरहीहोवे उसदा वहि मात्रा
स्वरहोंदाहै जैसादेवदत्तदेना
प्रहमेवोध्यतेयेन येनोकः
कुरुतेक्रियो तत्रनामादि
वर्णया मात्रा मात्रास्वरः
सहि २१
मदे आदविषे देअत्तरहै उ
सविच एकारस्वरहै तो देव
दत्तदा ए मात्रास्वरहोया ।
होर किसीकानाम ईश्वरदास

ते उसदा मात्रा स्वर इ जान
णा २१ मात्रास्वरचक्रम

अ	इ	उ	ए	ओ
क	कि	कु	के	को
ख	खि	खु	खे	खो

अथ वर्ण स्वरकहे नेहे च्छे रेखा खिड़ियां देणियां अह तिर्यक रेखियां देणियां उनाथों पंजी कोठेवाला चक्र वणेगा उस विच ऊपरके पांच कोठे विच २ स्वर लिखणे उनोंदे हेह कां थोंलेके हानवर्ण लिखणे पुह सभ तिर्यक पंक्ति दे क्रमकने लिखने इना वर्णविच ऊत्रण नहीं लिखणे २४

रल॰ जिसदेनामदा आदिवर्ण
वि॰ आददा अक्षर जिस स्वरदेहे
१२ हआवे उसदावर्णस्वर ओह
जानना एह स्वरशास्त्रकेजा

इतिमात्रास्वरकथने
अथवर्णस्वरचक्रम्
चतुर्द्धं मण्डलंनिधेहक वे
लाकार्यो प्रयत्नतः पं
चविंश नवकोष्ठाः भव
न्त्यपरिचक्रे २३ स्वरा।
लिखेनतस्त्वाधः कादि
हान्तान्वर्णकान्नि
यकोष्ठि क्रमेणैव ङञ
णवर्जितान्सदा २४।
ननेवालोंनेकहाहै जैसेदेव
दत्त दा नामदा आदकाअक्षर

रटकारेहै पहटकारचक्र
विच होसवरटेफेटआयाहै इस
वास्ते देवदत्तदा`` स्वर ओका
रहोआ २४ इसचक्रमें ऋ ऌ

यस्य नामादिमो वर्णो
यत्स्वराद्यः स्थितो भवे
त्. तस्य वर्णस्वरः सम्य
गित्युक्तं स्वरवेदिभिः २५

ङ ड. ञ ण पहवर्णनहीकहे
क्यों कि नामकेआदविषे पह
वर्णनहीहोंदे जोहोन तो इ
नकीजगाक्रमसे इउपगज
सम आणेचाहिये २५ ॥

ऋ	ऌ	ङ	ड·	ञ	ण	
इ	उ	प	ग	ज	उ	

वण यो नाम के आदि में संयुक्त अ॰
वि॰ क्षर होवे तो सयोका आदि
५ अक्षर लेना परन्तु इस या
मल में लिखो है ४५ जैसा कि
मी के नाम का आदि वर्ण क्ष॰

13

अगउस्वारऊ॰ नएण नाम
दोन भवेतिने चेडवेति
तदा ज्ञेया डउपगजडा ।
क्रमात् ४५ यदिनाद्विम
वेहणैः संयोगाक्षरलक्षि
तः आद्यस्तदादिमो वर्ण
इत्युक्तं इस यामल ४३

होवे तो उसका आदि वर्ण ज
समझना क्यों कि जज्ञ मि
लीके क्ष वर्ण पादा है जैसा

ज्ञानसिंहकावर्णस्वरदेखणा
होवे जकारश्रोंदिखों जिस
केनामकेआदमेकेवलस्वरही
होवे उसकावर्णस्वरवहिजा
नणा जेसेईश्वरदासदावर्ण
स्वर इकारहीहोवेगा २१

यस्यस्वरादिकेनाम त
स्यवर्णस्वरः सहि इतिव
र्णस्वरकथनम् ॥

अ	इ	उ	ए	ओ	
क	ख	ग	घ	च	
छ	ज	झ	ट	ठ	
ड	ढ	त	थ	द	
ध	न	प	फ	ब	
भ	म	य	र	ल	
व	श	ष	स	ह	

इति वर्णस्वरचक्रम्

स्व. अथराशिस्वरग्रहस्वरकहते
वि. हैं मेष सिंह वृश्चिक इनरा
१४ शियोंका अकारस्वरहै क.
न्या मिथुन कर्कट इनका
स्वामी इकारस्वरहै २॥ धन
मीनकास्वामीउकार तुल

अकारे मेष सिंहालिरिः
कन्याद्वंद्व कर्कटा २॥
धन्त्र मीना उकारश्च ए
कारश्च तुला वृषौ ग्रह
स्वरा राशिनाथा ओस्व
रो मृग कुंभको ३. ।

वृषका एकारस्वामीहै मक
र कुंभकास्वामी ओकारहै
येराशियोंके स्वरकहेहैं ३

14

हस्वर उनराशियोंकेस्वामी
योग्रह उनकेजानने इ. ॥

इतिग्रहस्वरकथने

अ	इ	उ	ए	ओं
मेष भोम	कन्या बुध	धन वृहु	तुल	मकर
सिंह सूर्य	मिथुन बुध	मीन	वृष	कुंभ
वृश्चि क भोम	कर्क चंद्र	वृह स्पति	शुक्र	शनि

इतिग्रहस्वरचक्रं

अथजीवस्वरकहतेहो ।
आदिवर्गका अकारादि सो
लाखरलेने अआइई उऊम

रण वि॰ १५

ऋ ऋ लृ लृ ए ऐ ओ औ अं अः क॰ वर्गादि पंज पंज वर्णजानने वर्गकी चारसंख्या शवर्गकी वी चारसंख्या इनसभसंख्या कानामके वर्ण ओर स्वरोंसे मिलके इकट्ठे करना उसवि

अादिषोडशको वर्गः
कादिवर्गास्तु पंचकः
यशो वर्गो चतुः संख्या
नाम्नि वर्णे स्वरादिजा
संख्या पिंडीकृता पंच
तष्टा जीवस्वरो मतः ॥

च पंचका भाग देना यो शेष
बचे सोजीवस्वरजानना उ
दाहरण रामनामकाजीव
स्वरदेखणाहै तोरादेविच

दोर्वेआकारहै सो अकारा॰
दिगलनामे दूसराहै उसकी
संख्या २ रकार यवर्गका दू
सराअक्षरहै उसकीसंख्या २
मकारकेवीचमे यो अकार
उसकी संख्या १ मकारकी
संख्या ५ इनसभकायोग १०
इसविच पंजकाभागदिता
तो शेष किछुनेवचया क्यों
कि पंजदूने दशहोतेहै पर
जिसे शेषनेवचे उसे शेषदा
प्रयोजनहोवे तो जितनेदा
भागदेयो उतनाही शेषजा
ना इसे पंजादा भागदिताहै
इसवास्ते पंजवचे ५ वचे
इसवास्तेरामकाजीवस्वरउ

र.ल. ह्रीश्री अथ नवांशस्वराः

वि.

१६

16

जीवस्वरचक्रं

अ १	आ २	इ ३	ई ४
उ ५	ऊ ६	ऋ ७	ॠ ८
ऌ ९	ॡ १०	ए ११	ऐ १२
ओ १३	औ १४	अं १५	अः १६

जीवस्वरचक्रं ॥

क १	ख २	ग ३	घ ४	ङ ५
च १	छ २	ज ३	झ ४	ञ ५
ट १	ठ २	ड ३	ढ ४	ण ५
त १	थ २	द ३	ध ४	न ५
प १	फ २	व ३	भ ४	म ५
य १	र २	ल ३	व ४	०
श १	ष २	स ३	ह ४	०

मेष वृष राशी सावी अर्था
त नौनौ अंश होर मिथुनके
आरदेके नवांश इन चोवी
नवांसोका अकार स्वामीहै ३२
मिथुनदेअनदे नयअंश हो
र कर्क सिंह इन इकी नवां
सोका स्वामी इकार जाणे

वृष मेषा वकारेच मि
थुनादि षडंशकाः ३२
मिथुनांश नयेवान्त्य मि
कारो सिंहकर्कटो कन्या
तुल उकारेच वृश्चिकाध
स्वयोंशकाः ३३

कन्या तुल और वृश्चिकके
आदि मे नवांश इनका स्वा
मी उ स्वरहै ३३ ॥

रण वि. १७ वृश्चिकके अंतदे के नवांश
धनस्वारा मकरके आदिके
नवांश इनका ए स्वर है मक
रके अंतके के नवांश और कुं
भ मीन इनका ओ स्वर जान

वृश्चिकांत्य षडंशाश्च
धनुर्मृगादि षट्चैव
मृगांत्यास्त्रयोंशाश्च
कुंभमीनौ तथोस्वरे या
नवांशकेन ज्ञेया राशी
नामीस्वराः स्वराः ३४

ए। ३३ जिसके नामका अक्ष
र जिस नवांश विच आया है
उसदा योस्वर सो राशिस्वर
जानना जैसे रामनामदा।

अकार अक्षर है तुलराशि के पहिले नवांशविच आया है इसका राशिस्वर उकार है ।

राशिस्वरचक्र

अ	इ	उ	ए	ओ
वृ १ मे ९	मि ३	कं ९	वृ १	मं ३
मि १ त्रे	सिं ९	तु ९	ध ९	कुं ९
त. २४	कं ९	वृ ३	म ९	मी ९
शेष	तु २.			

अथ नक्षत्रस्वर कहते है रेवतीयों आदि लेकर सत नक्षत्रों का रेवती अश्विनी भरणी कृतिका रोहिणी मृगशिर आर्द्रा अकारस्वामी है इति उनर्वस्यो लेके पंज उनर्वस ७७ श्लेषा मघा ।

रण. पूर्वाफाल्गुणी नक्षत्रोंका ।
वि स्वामी इकार है अर्यमा उत्त
ए राफाल्गुणीछोलेके उत्तरा
फाल्गुणी हस्त चित्रा स्वाति
विशाखा पंजनक्षत्रोंकास्वा
मी उकार है मैत्र अनुराधा

रेवत्यादि समकेषु च ।
कारो नायकाः स्मृताः
हस्तादि पंचनक्षत्रे ।
इकारः कथित स्तथा

ज्येष्ठा मूला पूर्वाषाढा उत्त
राषाढा थी पंज नक्षत्रोंका
एकार स्वामी जानना श्रव
णादि पंचनक्षत्रोंका श्रव
ण धनिष्ठा शतभिषा पूर्वा

18

भाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा
ओकारस्वामीहै अथयोग-
स्वरकहतेहै मात्रास्वर व-
र्णस्वर ग्रहस्वर जीवस्वर
नक्षत्रस्वर राशिस्वर और
पिंडस्वर इनसभकी संख्या
कोजोडीकरी पंजाराभाग

अर्थमात्रेच नक्षत्रे
उकारो मेत्रभाद्रप ओ
कारो श्रवणाद्येच पंच
वे वर्त्तनायका ॥

देके जोशब्दवचे सोयोग
स्वरजाने जैसा रामनामका
योगस्वरवनाणाहै इसवि
चमात्रास्वर आकारहै उस

रण कीसंख्या २है वर्णस्वर प
वि· कारहै उसदीसंख्या ४ राम
१९ का जीवस्वर ओकारहैउसदे
संख्या ५ नक्षत्रस्वर उकारहै
उसदीसंख्या ३ राशिस्वरबी
19 उकारहै उसदीसंख्या ३ पिं

इतिनक्षत्रस्वरचक्रम्
मात्रावर्णग्रहोजीव रा
शिनक्षत्र पिंडजान् सं·
योज्य पंचभिःशेषे योग
मन्त्रास्वरो भवेत्

उस्वर अकारहै उसदीसंख्या १
समकायोग २२ पंजांदा भा
गदिना तांशेषबचे २ इसवा
स्तेरामनामका योगस्वरइ·

कालहोरा ३१

अथनक्षत्रस्वरचक्रम

अ	इ	उ	ए	ओ	
रेव	पु	उ	अं	अ	
अ	पू	ह	ज्ये	श्र	
भ	श्ले	चि	मू	ध	
कृ	म	स्वा	पू	पूभा	
रो	पू	वि	उ	उभा	
मृ					
आ					

अथपिंडस्वरकहतेहैं नामके
वर्णस्वरदीये संख्या औरमा
त्रास्वरदीये संख्या दोनोंका
योगकरीके पंजकाभागदेने
से जोशेषबचे सोपिंडस्वरजा
नणा जैसे रामनामकेवर्ण।

रल स्वरप्रकारहै उसकीसंख्या ४
वि है मात्रास्वर आकारहै उसकी
२: संख्या २ इनोंकायोग ६ होआ
इसविच ५ का भागदिया तो

20

नाम्नवर्णे स्वरात्संख्या
संख्यामात्रास्वरा न्यथा ।
पिंडनेशावशेषेव पिंडस
वइस्रोच्यते श्रेष्ठेषा शद ।
यान्वेत्त प्रभवादिक्रमेण
व

शेष १ बचया इसवास्तेराम ।
का पिंडस्वर अकारहोआ ॥
अथइसकेउपरेनइनकेउदय
कहतेहै प्रभवआदिसहासंव
तोके क्रमसे प्रभवआदिवा

होताहै संवतोंके अकारादि
पंचस्वरस्वामीहै इसद्वादशा
ब्दस्वरको अंतरमें एकवर्ष ।
एकमास दोदिन तताली ।
घटी छयालीपल प्रत्येकस्वर

अकाराद्याः स्वराः पंच
प्रत्येकं द्वादशाब्दकैः अ
भ्यंतरेऽब्दयोर्वर्षमेकमा
सो दिनद्वयं रामाब्धिना
डिकाः प्रोक्ता रसाब्धिवि
पलानि च ।

भोगताहै एकएकस्वरक्रम
में भोगताहै अवप्रभआदि ।
संवतोंके स्वामीस्वरकहतेहैं
प्रभवआदिकसंवतोंकेक्रम
में एकएकसंवतमें अकारा

रम दि एकएकस्वरदाउदयहोता
वि है जैसेप्रभवसंवतमें अकार
श दाउदयहोताहै विभवमेंइका
रदाउदयहोताहै शुक्लसंवत
मेंउकारदाउदयहै प्रमोद

अथप्रभवादिसंवत्सरा
णामधिपतीनाहू प्रभ
वाद्यह् मेकैक उदयस्व
स्वरादिकः द्वादशाहस्व
वर्णाणां नकुलिवर्षिक
स्वरे ॥

नामा संवतमें एकारदा उद
यहोताहै प्रजापतिसंवत
मे ऐकारदाउदयहोताहै
इसीतरह फेर अंगिरा संव.
तमें ओकारदा उदय होताहै

आगेबीइसेतरहसेंजानो
सठ १० संवतोंमें पंजस्वर
वारावारी उदयहोतेहैं इस
ही अंतरदशा होटशाहै स्व
रोंदे अंतरदशाविच जाणे

मासमेकं दसदिने च
होश्च खिमिता स्तथा
वसुरामा दिनासप्त
काष्ठिना वार्षिकांतरे

दा भागदेणेथीं होंदीहै
सोआगे लिखीहै वार्षिक
स्वरके अंतरमे इकमास
देदिन तताली घटी अठ
वीपल इकइकस्वर क्रम

रण में भोगताहै अथअयनका
वि॰ रकहतेहैं दक्षिणायनमें
४२ अकारका उदयहोताहै
उत्तरायणविषे इकारका

22

याम्यायने अकारस्या
दिकारश्चोत्तरायणे
वर्ष भुक्त्या प्रमाणेन
भोगः षाण्मासिके स्मरे

उदयहोताहै वर्षदेअंतर
थों आधाइसतरा अंतरहो
ताहै अर्थात दिन ९ घ
टी ४४ फल ४४ ॥

अकारादिक पंचस्वर वसं
तादिऋतुविषे बहत्तर ब
हत्तर दिनोंकेकै उदयहो
तेहैं सायन मेषादि दोदो।
राशि सूर्यदे भोगकरने।

अकारादिस्वराः पंच व
सन्तादिऋतूदये उदये
त क्रमेणैव द्विसप्तति
दिनोदयैः। अस्यांतरे
षट् दिनानि रसानाड्यः
पलानि च राम वेद मि
तानि स्युः ऋतु नाभि
स्वरोदये

थे। वसंतादिक छे ऋतु हो
तीहै इसवक्त अयनांश २२
अंश ३१ कलाहै तद वेचरे

२ण अठअविद्यामें साधन मेष
वि० ही संक्रांतिहोतीहै सठवर्ष
२३ में एकअंश अयनांशवध
ताहै इसमेष संक्रांतिसों
23
लेके चौह ३० दिनमेघटे ३०
चौहहघटे १२ वारोमिथुन
दे एह ३२ वहत्तरदिनोंदा
अकारस्वामीहै अर्थात
अकारदा उदयहोताहै इ
सीतरह आगेभी वहत्तर व
हत्तर दिनोंमें इकारादि स्व
रोंका उदयजानना चक्र
देखणेमें स्पष्टमालूमहोगा
इनदिनोंकेबीचमें छोदिन
बचीयचादि और तिताली
पल एकएकस्वरकी ॥

अंतरदशाहै । वैशाख भा
द्रपद मार्गशीर्ष इनमहीन
यों विषे अकारस्वरका उद-
य होताहै और आषाढ ।

वैशाखे भाद्रमार्गेषु
अकारस्यो दयो भवेत
आषाढे श्रावणे चाश्वि
युजेष्वीकार नायकाः

श्रावण अश्वियुज अश्विन
इनोंमहीनयाविषे इकार
का उदय होताहै ॥

रल
वि.
२४

24

ऋतुस्वरचक्रम्

अ	इ	उ	ए	ओ
मेष दि ३.	मिथु दि १८	सिंह दि. ९	वृश्चि २४	मकर १२
वृष दिन ३.	कर्क दि ३.	कन्या ३. तुल ३.	धन ३.	कुंभ ३.
मिथु दि. १२	सिंह दि २४	वृश्चि ९	मकर १८	मीन ३.
१२ दिन	१२ दिन	१२ दिन	१२ दिन	१२ दिन
वसंत	ग्रीष्म	वर्षा	शरत्	हेमंत

अन्तेतरभुक्ति

अ	इ	उ	ए	ओ	
९	९	९	९	९	दिन
३२	३२	३२	३२	३२	घटी
४३	४३	४३	४३	४३	पल

मासस्वरचक्रे

अ	इ	उ	ए	ओ
वैशाख	आषाढ	चैत्र	ज्येष्ठ	माघ
भाद्र	आश्विन	पौष	कार्तिक	फाल्गुन
मार्ग	श्रावण			

रा. वि. २५

25

द्वादशवार्षिकचक्रम् ।

अ	इ	उ	ए	ओ	१
प्रभव	प्रमाथी	खर	शोभन	राक्षस	१
विभव	विक्रम	नन्दन	क्रोधी	अनल	२
शुक्ल	वृषभ	विजय	विश्व	पिंगल	३
प्रमोद	चित्रभानु	जय	वसु	कात	४
प्रजापति	स्वभानु	मन्मथ	प्लवंग	सिद्धार्थ	५
अंगिरा	तारण	दुर्मुख	कीलक	रौद्र	६
श्रीमुख	पार्थिव	हेमलम्ब	सौम्य	दुर्मति	७
युवा	सर्वजित्	विकारी	विरोधक	रुधिरोद्गारी	८
भाव	व्यय	विलम्ब	साधारण	दुन्दुभिः	९
धाता	सर्वधारी	सर्वधारी	परिधावी	रक्त	१०
ईश्वर	विरोधी	प्लवर	प्रमादी	क्रोधन	११
बहुधान्य	विकृत	शुभकृत	आनन्द	क्षयकृत	१२

द्वादशावर्षिकांतर

अ	इ	उ	ए	ओ	नाम
१	१	१	१	१	वर्ष
१	१	१	१	१	मास
२	२	२	२	२	दिन
४३	४३	४३	४३	४३	घटी.
३८	३८	३८	३८	३८	पल.

वर्षांतरभुक्तिः

अ	इ	उ	ए	ओ	
१	१	१	१	१	मास
२	२	२	२	२	दिन
४३	४३	४३	४३	४३	घटी
३८	३८	३८	३८	३८	प.

त्रल चैत्र पोष महीनेमे उकार
वि॰ का उदय होताहै ज्येष्ठ का
२१ र्तिक महीनेका पकार।
स्वामीहै माघ और फाल्गु

26

उकार चैत्र पौषे स्या
देकारो ज्येष्ठ कार्तिके
ओकार उदये याति मा
घ फाल्गुण मासयोः
हेचस्ये ऋखिर्घटिका
नागराम पलानिच
उक्तौतरो दयस्वात्र
मासिकाख्ये स्वरोदये

णमहीने विषे ओकारस्व
रका उदय होताहै हेचस्ये
का दो दिन तितय ऋखिना

र अर्थात त्रितालीघटी ना
ग अठ राम गय अर्थात अठ
वीपल पर महीनेदेस्वरदी
अन्तर्दशा होती है ॥

अथनोतषेकिः

अ	इ	उ	ए	ओ	
१६	१६	१६	१६	१६	दिन
२१	२१	२१	२१	२१	घटी
४९	४९	४९	४९	४९	पल

मासांतरस्वरचक्रम ॥

रा.
वि.
२१

अ	इ	उ	ए	ओ	
११	११	११	११	११	दिन
२१	२१	२१	२१	२१	घड़ी
४९	४९	४९	४९	४९	पल.

27

अथपञ्चस्वरकथने कृष्ण
पक्षकास्वामी अकारहै शु
क्लपक्षकास्वामीइकारजा
नना महीनेदे अंतरदशा
दा अर्थपञ्चस्वरदी अंतरद
शाकहीहै । नंदाआदिति
थियो पजहै नंदा भद्रा ज
या रिक्ता पूर्णा पह प्रतिप

दारि क्रमकर्के पत्त विव
रेवारी श्राउंदीयोहेन प्र।
तिपदा षष्ठी एकादशी नं
दासंज्ञकहेन द्वितीया स

अस्वरः कमपत्तेशः शु
क्लपत्तेशः स्वरः मास
अकार्थ मानेन पत्तअ
क्ति रुदाहृतः । अका
रादी क्रमात्तेये नंदा
दि तिथिपंचके दिन स
रोदयो नित्यं तिथ्यादौ
स्वस्य जायते ।
प्तमी द्वादशी भद्रा संज्ञक
हे तृतीया अष्टमी त्रयोदशी
जया संज्ञकहै चतुर्थी न

स्व. वमी चतुर्दशी तिका संज्ञ॰
वि. कहै पंचमी दशमी पूर्णिमा
२८ सी अमावास्या पूर्णा संज्ञक
तिथीहै इनोंतिथ्योंविच क

28

घटी स्वरोदये पंच प॰
लानि सप्तविंशतिः ।
अंतरो दय उक्तोसौ
दिनस्वरस्य सूरिभिः

मसें अकारादिकस्वरोंका
उदयहोताहै जिस तिथी
विषे जोवारहोवे उसस्वर
के दिनस्वर संज्ञाहै यातिथी
कास्वरहोवे उसदी पंज घटी
होर सताईपल तिथिस्वरदा

अंतर पंडितोनेकहाहै ।
पलस्वर

अ	इ	उ	ए	ओ	
१	१	१	१	१	दिन
२१	२१	२१	२१	२१	घटी
४९	४९	४९	४९	४९	पल

तिथ्यंतरअकीस्वरदीअंतर
दशाहै

अ	इ	उ	ए	ओ	
५	५	५	५	५	घटी
२७	२७	२७	२७	२७	पल

रण
वि
२९

अथ घटी स्वर कहते हैं निथ्थ
हे आदथों लेके पंज घटी हो
र मतांई पल तक इक इक
स्वर उदय होता है इसदा
अंतर अथी घटी होता है ।

अथ घटी स्वर कथनम्
निथ्याहो घटिका पंच
पलानि सप्तविंशति
अस्यान्तरोदयः प्रोक्ता
घटिकार्धं प्रमाणतः

जिस तिथी को जो स्वर उ
दय होवे उसथों क्रम ले
ना चाहिये । द्वादश
वार्षिक स्वरथों आदलेके
यो स्वर है उहों का यो अक

होवे उसदे पलवनायकके
उसविच अपने प्रमाणदा
भागदेणा योलब्धीमिले
उतने अंकस्वर जानणे ।

द्वादशाहृ स्वरादीनां
अंके पलमये हृते ।
तदंके स्वस्वभोगेन
लब्धशेषं हि के भवेत्
लब्धे अंक स्वरा ज्ञेयाः
शेषा शुद्धोदित स्वराः
अस्मि षष्ट्यादि भक्तेच
अंकेस्या उदितस्वरे

योशेषबचे सो उदितस्वर जा
नणा इसविच सठआदि अप
ने अपने प्रमाणदा भागदेना
तो उदितस्वरदा अंक मिलेगा

स्व० उदितस्वरदियां नामस्वरदे
वि० वसयों पंजवालादिक अ
३० वस्था होदियांहें इनकाअ
माण अपने अपने स्वरदेअ
36 माणदे तुल्यहें । जिसदे

उदितस्य स्वरस्यया ञा
मस्वर वशेनता पंचबा
लादिकावस्था स्वस्वका
ल प्रमाणतः । आद्यो
बालः कुमारश्च युवावृ
द्धो मृतस्तथा निजाव
स्था स्वरूपेण फलदाता
नेमश्रयः

नामका योमात्रा लब्ध होवे
मात्रा स्वरदे विचारमें औरह
वालस्वरजाननां उसयों अ

गला कुमार श्रागे युवा उ
सथों श्रागे हद्द श्रागे स्तनसं
ता है ऐसेही जिसका यौव
णस्वर होवे उसको श्रोहवा
लस्वर होंदा है उसके श्रागे
यौस्वर होवे उसदी कुमार
सत्ता है उसथों श्रगले दी।
युवा सत्ता उसथों श्रागे ह
द्धनाम होता है उसथों श्रा
गे यौस्वर है उसदी स्तनसं।
ता है उनोंविचा इस तरह
मात्रादि श्रठमो स्वर है जि
सनाम दा यौस्वर होवे उस
दा श्रोहवाल स्वजानना।
जैसे देवदत्त दा मात्रा स्वर
एकार है तो देवदत्त को।

रण प बालउ अकुमार अथवा इ
वि॰ वृद्ध उ स्तन स्वर है सोरदेव
श्र॰ दत्तदा व ऐ स्वर औ कार है
तदा व ण स्वर द विचार में औ
3 बाल अकुमार इ युवा उ वृ
द्ध ए स्तन है ऐसे ही सोर जा
नणा एह पांच अवस्था बा
ले स्वर अपने अपने अव॰
स्था के तुल्य फल दिंदे हैं न
।
जिस थी यो पंचम स्थान में
होवे सो स्वर उस का स्त
दायक है तीसरा यो युवा
स्वर है उस विषे सम्पूर्ण का॰
र्य सिद्ध होती है बाकी केव
ल और वृद्ध मध्यम फल ।

मयुइहै नन्कालविषे काय
टीस्वरविषे माजास्वरदाबल
ग्रहणकरणा हिनमेंवलीह
रदाबलदेखणाचाहिये ॥

पक्षे ग्रहस्वरो लेयो मासे
जीव स्वरोदयः अतो रा
शेप शाको ग्राह्यः घएमा
से थिस संभवः ।

पक्षविषेग्रहस्वरदाबलवि
चारणा महीनेविषे जीव
स्वरदा बललेना अतमें रा
शिस्वर वलीहोवे तद अच्छा
होताहै अयनविषे नक्षत्र
स्वरदावललेनाचाहिये इन
मेपहस्वरवलीहोंदेहेन ॥

39

रण तोहै तिसमयशत्रुका स्त्र
वि॰ स्वरहोवे औरअपणास्वास
३१ रउदयहोवे । तिसकालवि
षे युद्धकाआरंभकरे निश्चय॰
करकेजयहोंदाहै युद्धश

तत्कालेप्रारभेयुद्धे विज
यो भवति ध्रुवं तत्काले
मात्रकोपायः हिते वाम
स्वर स्तथा ।

करके जयदीआसाकरके
शत्रोंसेशत्रुदेसाथ लडाई॰
करणी औरयुद्धवीजानने
विवाद झगडा मल्लयुद्ध भेद
औकातुइ इत्यादिक होवे
वी जिसवीविजय पराजय
का संबंधहोवे उसकाना॰

अवबालस्वरदे बारा अवस्था
कहितेहै प्रथममूछानाम
वाली अवस्थाहै दूसरीवाला
तीसरीशिशु चौथीहास्या
पंचमी कुमारिका छेमी।

मूछाव बाला शिशुहा
सिकाच कुमारिका यौ
वन राजरताव क्लेशाव
मोहा ख्विता प्रवासा।
रताव बालस्वरजा अ
वस्था।

यौवन सतमी राजरता अठ
मी क्लेशा नौमीमोहा दशा।
मी ख्विता ग्यारमीप्रवासा
बारमीअस्तना एहबालस्व
री अवस्थाहै इनकाफलना

रण अथेहेपिंडइति वर्णविषे पिंडस्व
वि॰ रग्रहणकरना औरवारावर्ण
३३ केस्वरविषे योगबल्लीहोता
है इनस्वरोंका होरविशेष
समरमेया लिखाहै सोलि॰
खतेहै योगाचाइति योग॰

अथेहे पिंडस्वरो त्रेयो योगो
द्वादशवार्षिके योगाचा
योग भजने वर्णाचा सर्व
मावहेत ।

स्वरविषे योगकासाधन औ
रपरमेश्वरकाभजनकरना
वर्णस्वरविषे मेमूलकार्थक
रण विशेषककेवर्णस्वर
विच शुद्धकरणा कोंकिव

र्ण स्वर सभ स्वरों का अग्रणी
है शुद्ध है होरवी वर्णस्वर है
महिमा करते है यथापदे इति
जैसे संपूर्ण जीवों के पैर हाथी
के पैर विच आ जाते है जैसे।

विशेषतस्तु संग्रामे सहि
सर्वस्वराग्रणी। यथापदे
हस्तिपदे निमग्ने यथाहि
नद्यः खलु सागरेषु यथा
हरे देहगताश्च देवा स्त-
था स्वरा वर्ण फलोदयस्थाः

संपूर्ण नदीयां समुद्र विषेश
मे होतियां है जैसे संपूर्ण देव
ता विष्णु के देह विषे गत है ते
से ही संपूर्ण स्वर वर्ण स्वर के
फल विषे स्थित है ॥ ॥

वल अब और विशेष कहते हैं कि
वि. मास्वरदे बलविषे क्या कार्य
३४ करणे चाहिये साधने इति
मंत्रयंत्रका साधन और तंत्र
प्रयोग सर्वदा कालविषे

साधने मंत्रयंत्रस्य तंत्र
योगस्य सर्वदा अन्यो
अन्यानि कार्याणि मा
सास्वर बले कुरु ।

और अन्योअन्य जितने कार्य
कूपतडागादिकोंका खन
न पट्ट सहस्रोंहत्य मासा
स्वर केवलविषे करणे
॥ १ ॥

वर्णस्वरइति वर्णस्वरदेव
नविचसेहूण शुभाशुभ।
कार्यकरणे सर्वकार्यवि
षसिद्धिहोतीहै शुद्धविष।
विशेषकरके सिद्धिहोतीहै

वर्णस्वरबले सर्वकर्त
मेच शुभाशुभं सिद्धिदे
सर्वकार्येषु शुद्धकाले
विशेषतः ग्रहस्वरो मा
रण मोहनादि जीवोद।
ये स्तम्भण शास्त्र विधा

ग्रहस्वरेइति ग्रहस्वरविषे
मारण मोहन आदिककर।
मकरणे जीवस्वरको उ
दयविषे स्तम्भण धारण।

रण शास्त्रपठनप्रारंभ विद्याभ्या
वि॰ सका प्रारंभकरणा राज्ञि
३५ स्वरविषे राज्याभिषेक प्र॰

35

प्रारंभणे स्याटस्थ राज्य
दीक्षा प्रासादेदेवापत॰
नादिराशौ । यात्रा प्रवे
श स्थबीजवापने से
वाच प्रांस्यादिक कर्म
भ स्वरे कोहादि वृद्ध पर
देश भंगः सेवहन ग्राम
प्रगादिकानी ।

साद मेहिल मंदिरवनाने
दा प्रारंभकरणा । यात्रा
प्रवेशाइति यात्राकरणी

होरप्रवेशकरणा वीजमा
हरणा सेवा नौकरी करणी
होर शांतिकरणी इत्यादि
ककम मस्वरका नक्षत्र
स्वर विचकरणा होरकोट
किलेत्रादिपटकरके ग्राम
नगर घर इनो विचस्थित

सेनाधिपत्ये लग्नमैत्रि
कर्मे पिंडस्वरे योगस्वरे
लयोगे

होईकेयुद्धकरणा परश
त्रुदे देशकाभंगकरना।
होरग्राम परनगरकोमेव
ष्टनकरणा कचेरीलेना
सेनापतिबनाना होरमे।

स्व. त्रिकर्मसलाहकारणी पंचक
वि मपिंडस्वरदेवलविवकरणे
३१ होरयोगस्वर विवियोगसाथ
नकरणा। तिथिस्वर वार
स्वर नक्षत्रस्वर पृथक पृथ

तिथिंवारेच नक्षत्रे क
थितेच पृथक पृथक
शुवावर्णस्वरो यत्र न
हिने शोभने भवेत्।

ककहेहे पोरन जिसदिन
जिसदा वर्णस्वर शुवा होवे
ओहदिन उसको शुभफल
देने वाला है। और जिस
हे नामदा स्वरवर्ण जिसदि

न तिथिस्वर वारस्वर नक्षत्र
स्वरोंके वशायो सत होवे ।
ओह दिन सम्पूर्णकार्यकोव
जेला जिसवाले ओह दिन हा
नि और सम को देणे वालाहै

नामवर्ण वशायत्र ति
थिवार सेजे सने न हिने
वजेय न सम हानि सम
करे यतः । अनेन स्वर
योगेन शत्रूणां मारणा.
दिके मंत्र यंत्र क्रिया हो
मः साधयेत स्थिरे बुधः

इसप्रकार स्वपनावर्णस्वर य
वा तिसदिन होवे उसदिनव
डिवान शत्रुका मार
ण मोहन उचाटन मंत्रयंत्र ।

रण
वि
३२

57

होमादिक्रियाकोंकरेसिद्ध-
होतीहै। बालस्वरादिकाइ
ति बाल कुमार युवा वृद्ध मृ
त्यु यह यो पंज अवस्था स्वरों-
कियाकहीहै इनकेबीच।

बालस्वरादिका वस्था
भाउसंख्या भवंतिताः
उदयेन क्रमेणैव स्वर
भुक्ति प्रमाणतः ॥

वारंवार अवस्थाइकरइक
दियेहोदियाहै औहक्रम-
करके अपने अपने भोगादे
प्रमाणछों उदयहोदिया-
हैन। घटिकाओइति बा
लपला इनोदा श्लोककीरी

काइकठीहै घटीस्वरविषे
पंजपंजपल इकश्रवस्यात
भोगीहै। दिनस्वरविषे पंज
पंज घटी पलस्वरविषे इक
दिन होरपंझाघटीभोगीहै

घटिकाख्ये दिने पले मा
से सत्व यने तथा वर्षे।
द्वादशवर्षेच स्वगावस्था
प्रजायते। बाला: पला:
घटीपंच मपाटे मटले
हुये श्रुपव पक्ष मासाह
मवस्था श्रमिति क्रमात्

माससरविषे छाईदिन सात
स्वरविषे पंजपंजदिन अयन
स्वरविषे पंझापंझादिन वर्ष।
स्वरविषे इकइकमहीना।

रण वि॰ ३८ द्वादशवर्ष स्वरविषे इकइ॰

क वर्ष इनका भोगहै पह

अवस्थादेभोगदा प्रमाणहै

अक्षस्वरोंका योप्रमाण उस

विच अपने अपने भोगदेप

अक्षस्वर प्रमाणेय त्व

स्वभोगेन तद्गेत ल

ब्धाकेन गतोवस्था शे

षे तत्कालजा मता।

माणदा भोगदेणा जितने

लब्धमिले उतनी अवस्था

गतजाननी नियो शेषयो

वचे सोतत्कालकी अव॰

स्थाजाननी उसकाफल

कहूंगा ॥

38

दिंदैहैन । योटोना योधयो
का एकहीस्वरहोवे शुद्धका
लमें समशुद्धहोताहै औरदू
सरायो कुमारस्वरहै सोत्र्ये

योयस्पपंचमस्थाने सह
रोस्सुदायक: तृतीयेत
भवेत्सिद्धि: शाखामध्यफल
प्रदा: । एकस्वरे भवेत्सा
म्यं द्वितीयोर्थ फलप्रद:
तृतीयोल्पफलेपूर्णे तृ
येवध:पराङ्मुखे । शत्रो
रस्पसारे ग्रामे हनिग्रामे
स्वकीयके ।

फलदेनेवालाहै औरदुवा
स्वरसंपूर्णफलदेणेवालाहै
तृयेयोतोथाहृद्धस्वरहै व
हवेधन औरशत्रुकाभयदे।

रत्न॰ मतल्पेहे । अथजमारस्वरी
वि प्रवस्था स्वस्था १ शुभा २ ह
३॥ र्षे ३ महाऋद्धि ४ वृद्धी ५
महोदया ६ शांतिकरी ७

39

स्वस्था शुभा हर्षं महर्द्धि
वृद्धी महोदया शांति
करी स्वदर्शा सदा समा
शांति गुणा दयाच मो
गल्पका द्वादश वै ऊ
मारी ॥

स्वदर्शा ८ सदासमा ९ शां
ता १० गुणादया ११ मोग॰
ल्पका १२ । अथयुवास्वर
रीप्रवस्था उत्साहदा १ उ
द्या २ चला ३ अतिजया ४

मनोरमा ५ क्रोधा ६ का
मसहिता ७ तुष्टि ८ स्व·
लटा ९ सिद्धि १० धनेश्वरी ११
शान्तिकरी १२ पञ्चवांश्च
वस्था शुवस्वरदीयोहृ ।

उत्साह उद्यारि जयाच
लाच मनोरमा क्रोध
सकाम तुष्टिः सला
चसिद्धिश्च धनेश्वरीच
शान्ताभिधा द्वादशमी
शुवाख्या । ।

वैकल्प अर्थात् देहिकडः
ल १ शोषा सोषकरणेवा
ली २ सोचा कार्यदेख्येना
क्रतेइया ईइयांविषेवि

रण कारहोना ४ दुःखिता ५
वि॰ रात्रिनिद्रा ६ हृद्धि ७ प्रभंगा
थं॰ ८ तपा संतापकरणेवाली
९ क्लिष्टा १० ज्वरा ११ रक्ता १२
यहबारहहृद्दरीअवस्थाहै

४०

वैकल्पशोषाच तथाव
मोचा च्छतेंद्रिया दुः॰
खित रात्रिनिद्रा हृद्धि
प्रभंगाच तपाव क्लिष्टा
ज्वरा रक्ता द्वादशाहृद॰
जास्मृः ॥

अवसत्रखरदीयोअवस्था
कहतेहैं लिज्ञा १ वेथा २
शाठ ३ शाठ्योसे पराजय
करणेवाली ३ शोषा ४

महोन्नता ५ कृष्टा ६ ब
णकिता ७ भेदकरी ८ क
लकरणेवाली ९ दीप्ता १०
स्तब्ध ११ त्वया १२ एतस्त्र
ल्लिङ्गाच वैधारि विघा
तकारी शोषा महोन्ना
तन कृष्टाच ब्रणोकि
ता भेदकरीच दीप्ता स्त
ब्धः त्वया द्वादश स्त्रि
जा इमाः । एवं बालस्व
रादीनां मवस्था हि स
र्वेषां स्वनाम सदृशाना
मां फलं ज्ञेयं विचक्षणैः
स्वरादी अवस्था है इस नरोंसे
बालस्वरादि पंजस्वरोंकि जो
सद्अवस्था है इनादे फल

स्वरविधा नामदेतलमेहै यथानामत
थाफलं । अथदिशाविषे
स्वरोंकीस्थितिकहतेहै सो
अकारादिक पंचस्वर पूर्वा
दिदिसोविषे स्थितहोंदेंहैन

अथदिकस्वरकथने
पूर्वादिदिक्षु तरगास्तु
तेषः स्थिव जये हृति
जयस्तु घातात् स्था
दाद्य यानी तिमयोः
स्वशत्रु बलाबलाभ्या
वल मादद्दीत ॥

जैसे पूर्वदिशाविषे अकार
दक्षिणमें इकार पश्चिममें
उकार उत्तरमें एकार हो
रमध्यविषे ओकार एहदि

भागुडनू मिरियांनेणीयां जि
सदिशाविषे अपनाग्रुवास्थ
स्थितहोवे उसदिशाविषेस्थि
तहोकेयुद्धकरे तोसहावेसज
यहोताहै होरआठकेयोवा
ल ओर जमारखरहै उनोंटे।
स्थानविषेस्थितहोइकेयुद्ध
करे तोशानथोंजयहोंदाहै
होरश्रेतिमयोहइते सतस
रहै उनोंविषेजयनहीहोता
इसतरहअपना बलवाला
स्थान होरशत्रुदानिर्बलस्था

	मू ग्र	
३प	मध्ये न	२·२
	प ३	

नदिशीकेव
लवालेस्था
नखडाहोइ
केयुद्धकरे।

२ण ककारसे लेके टकारतक।
वि॰ ये वर्ण है सो रङ्स्वज्ञो पंजस्व
५२ र है सो शुक्लपक्षविषे बली है।
दे है न वाकी के कृष्णपक्ष में ब
ली होदे है न। स्वर दोनो का

ककारादि टकारान्ताः पं
चैकस्वरास्तथा बलिन
ः स्युः सितपक्षे शेषाः सर्वेऽसि
तेतरे। एकस्वरः पृथक्
वर्णः पक्षयोरुभयोरपि
तत्र पक्षबले ग्राह्यः शुक्ल
पक्षविभेदतः।

एक होवे वर्णवा स्वरवा वा स्वर
होवे दोनो पक्षोमें उसजगा
शुक्लकृष्णभेदकरके पक्षब
लग्रहणकरणा।।

इङ्गजा अक्षरोंकरके दोनो
योधयोंका एक स्वर होवे तो
शुक्लपक्षमे गौरवर्णकाजय
कृष्णपक्षमे कृष्णवर्णकाजय
होताहै । इसीस्वर विषे श्लो

एकपंचान्तरे रेकः स्वर
श्च योधयो र्द्वयोः शुक्ले ।
गौरः परः कृष्णे शुद्धे ज
यति निश्चितं । असि ने
वस्वरे गौरो कृष्णो वा स्वभ
टोयदि स्वरासज्ञात्तेरास्त्रे
टीवेः हरात्तेराजयी ।

ना योधा गौरवा कृष्णवर्ण
होवे तोस्वर को आसन्नअक्ष
रवाला कृष्ण हरअक्षरवा
लादीवे जयकोप्राप्त होताहै ।

रण॰ स्वरप्रमाण श्रोरनामवर्णोदे
वि एकता होवे दोनो शुद्ध वाल॰
धर योंकी उस शुद्ध विच यायीदे
स्थायी भेद में बल ग्रहण कर
णा । दोनो यायि योंका सम में

43

प्रमाण नाम वर्णों को शुद्ध
कार हि के यदि नत्र शुद्धे
बले तेये यायि स्थायि वि
भेदतः । योद्धयाः सर्वमे
देको स्वरहीन ऊमारके
यायीजयी तथा स्थायी
बालहड्डा निमस्वरे ।

दोमे तल्प बलशावे तो शुवा
ऊमार स्वरके उदयमे यायी
दाजय बालहड्ड स्तम्के उद
यमे स्थायीका जय होदा है ।

तिथिविशेषज्ञापनेवर्णोंहोतेहैं
न शेषतिथियोंकोविशेष देतेदेव
ते इसीतरह से तिथिविशे
वर्णसेब्योजाननी । वर्णादि

आद्यतिथ्यो वर्गावर्णो
हेहोनशेषयो मता ।
एवंतिथित्रये ज्ञेया वर्ण
सेव्यो तिथिस्वरे वर्णाति
थ्यादि तिथ्याव्यो जन्म
हानि मृतिस्तथा श्रीजे
मानि कृत्वोहानो मृतौमृ
ग नेमशय: ।

तिथ्यादि तिथ्यावृ पहलेमे
दके तिथिस्वर हे इनकेक्रम
सेजन्महानिमृति पहलेनाम
है जन्मसेतकमे श्रीप्राप्ति
हानिसेतकमे रोगप्राप्ति ।

रण रतिसंतकौमें रत्नहोताहै ·
वि· इसविषेमेंशयनहीहै इहकी
षष्ठ जन्महानि रत्थारत्न ग
स्मवर्ण तिथिक्रमात

49

जो अपनेवर्णतिथ्यासे जान
लकेक्रम ॥

इतिवर्णस्वरचक्रम् ॥

५	५	३	३	३	६	६	८	८	८	९
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०
०	४	६	५	७	३	१	२			

वा रा रेखा सिड़ियां होर खोरे
खा रे छड़ियां करलेयों एक
चक्र बणेगा ऊपरके कोष्ट
कोंमे क्रमसे पंजे पंजे चेचे

अथ हेह गुरुजय पराज
यन्त्रानाथे वलेखरवके
कुंडलियांनाके सभिनाच
रेखा लिये क्रमटपोत्र क
हृ क्रमेण नक्षत्रोंके कोष्टे
षिड्वाणराम लिखोग।
नाकोष्ट इभीष्टनेदान।

चे खे खे अठ अठ अठ नो
पह अंक लिखने। और इ
नके हेठ अआइई उऊ एऐ
ओ औ अं पहरवर लिखने

रण अागे तीन पंक्तियोंमे कका
वि॰ रादि हकार पर्यंत वर्णलि॰
४५ खने दोनो योधयोंके वा ।
दोनो सेनापतियोंके नामके

लिखे तनोध स्थितकोष्ठ
केषु विसर्गछेदे रहितान
वस्व तत हिपाली षड्-
गोष्ठ कार्यान् सयोऽ
यो नाम भवे च संख्या ।

वर्ण । ओरस्वरोंके उपरके
अंकोंकी संख्याको बाबरे
बाबरे जोडे जिसदीनामदे
संख्या विषमहोवे उसदा॰
जयहोताहै होरसमसंख्या
वालेदा पराजयहोताहै ।

श्री हृदैकयोगोंको आठका
भाग देते लब्धो जो शेष बचे
उसका फल इन ४१५७
३१२ अंकोंमे क्रमसे अगे

युग्मेः युग्मे परिभवज
या वहृभक्ते वशेषे ला
ब्धेग पंचाद्रि सिवेन्द्रने
त्र मितेजयो ग्णागण ग
नस्य निश्चय ।

अगे वाला अंक जिसका शे
ष बचे उसका जय होता है
इससे दोपराजय होता है
॥

रग होरजय पराजय चक्रकह
वि तेहै स्वरक्षे १ चे ३ नेत्र शे ३
धः श्रुति बाण ४ गज ८ श्रेग के ९
नेट नौ ९ वेद ४ श्रुति शे ३ ।

अथास्वजय पराजयच
क्रम् स्वरत्रि नेत्रा ब्धि ग
जाग नेट वेदाग्नि श्रुत्वे
उमिताः स्युरेकाः हीने
रजो त्तर मिती रविभि ।
स्तथाष्ट तेष्ट जयोपापि
क शेषकस्य ।

शून्य ० ३३ पक १ ३न श्रे·
कोको स्वेकक चक्रमें लिख
कर नामके वर्ण होरस्वरों
केउपरके श्रेकोको जोडीके

46

योगविच वाराहदा श्री श्री
षविच आठांराभागदेले
श्री जिसदेनामराजादे शेष
वचे उसदाजयहोताहै ।

६	३	२	४	८	५	९	४	३	०	१
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०

वर्गवशात् जयपराजयच
क्रे इसचक्रमे अकारादि आ
ठवर्ग लिखकर उनकेऊपर
क्रमसे वसु ८ वाण ५ वस १
अब्धि ४ अद्रि ७ क १ अग्नि ३

रण अथि २ इनोंअंकोंकोलिखना
वि॰ फेरनामदेवर्ण होरसबोंदे
५७ ऊपरदे अंकोंकोजोडीके स
तारा भागदेके जिसदेनाम

अथापरंजयपराजयव
क्रम वक्ष्वाण रसाब्धि
द्वि कग्र श्रंकाष्टवर्गेनाः
नाम्नोघ्नी सप्तभक्ते स्या
जयोधिक शेषके । एवं
सप्तक जयोयस्य नाम्नो
वीरस्यजायते सेनाधिपं
ते विधाय जेयं क्षत्रून्स
धीन्टपः ।

राजादे शेषवचे उसदाजय
होताहै । इसतराह इनच
क्रोंमें जिसदेनामदाजयश्रा

वे उसको सेनापति बणाय
करी शत्रु को जीतना चाहि
ये राजा को ।

८	५	६	४	७	१	३	२
अ	क	च	ट	त	प	य	श
इ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
उ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
ए	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	७	०

अवर्ग विषे देवता स्थित है क
वर्ग में दैत्य चवर्ग में नाग टव
र्ग में गंधर्व । तवर्ग में ऋषी ।
पवर्ग में राक्षस यवर्ग में पिशा
च और शवर्ग में मनुष्य स्थित

रण० हे । नागवलीहै नागोंसगंध
वि वे गंधर्वोसेऊनि ऋनियोंसे
धण राक्षसवलीहै राक्षसोंसे पि
शाचवलीहै पिशाचोंसेऽथ
अथाष्टवर्गचक्रम् ।
देवाअकारवर्गस्या दैत्याः
शोक्ताः कवर्गकाः चवर्ग
स्या स्मृतानागा गंधर्वाश्च
टवर्गगाः । तवर्गस्याश्च
ऋनयः पवर्गस्यानिशाच
राः यवर्गस्या पिशाचा
स्युः मनुष्यश्च शवर्गजाः
दैत्योंसेदेवता देवतोंसे ।
मनुष्यवलवानहै किंकि
सरणकार्योंके करणेमे ।
समर्थहै । अद्रकालविष

इत्येकमकारे बलज्ञानम्
नामद्रे आदिवर्णेष्वो इह्व।

एतेभ्यो बलिनो नागास्ते-
भ्यो गंधर्वजातयः गंधर्वे-
भ्योऽपि मुनयः मुनिभ्यश्चै-
व राक्षसाः। राक्षसेभ्यः
पिशाचास्तु तेभ्यो देवा-
स्तथः स्मृताः देवेभ्यो मनु-
जाः श्रेष्ठाः सर्वेषां साधन-
तमाः। युद्धकालेषु नैनै-
व क्रमेण बलमादिशेत्
नाम प्रथमवर्णेन विचा-
रः परिकीर्तितः एवमत्र
इत्येके तदेस्मिन्नध्याय-
ने।
बलविचारकरणं इह बलकी

स्व० वि० ४९

विचार ब्रह्मयामलतंत्रमें लि
खाहै । इति वर्गचक्रम ।

अ	क	च	ट	त	प	य	श
देवता	दैत्य	नाग	गंधर्व	ऋषी	राक्षस	पिशाच	मनुष्य

होरचक्र पंचस्वरोंके हेठ पर अंकलिखने क्रममें नाम ३ दे ३ १ युग ४ वार २ पक्ष १ ऊ नोदेहेठ ३.अण मैं वर्जित का हिवर्ण लिखने इसचक्रमें वीनामकेवर्ण और स्वरोंके ऊपरके अंक जोडीके पंच काभागदेणेथों जिसदेना मदाजादेशोषबचे उसदा जयहोताहे ।

अ	इ	उ	ए	ओं	
३	१	४	२	१	
क	ख	ग	घ	च	
छ	ज	झ	ट	ठ	
ड	ढ	त	थ	द	
ध	न	प	फ	ब	
भ	म	य	र	ल	
व	श	ष	स	ह	

स्वराधस्थैर्हिविंदंकान् रा
मेंदुयुग वाह्नवः पंक्ते चैषा
मधः स्थाप्या वर्णाः ङञणव
र्जिताः नाम्नोश्च वह्नलसंयो
के पंचभिस्तु विभाजयेत् शेष
यिके जयो हीने स्तसाम्ये समं
फलम्

रण युद्धविषे यायिस्थायि भेद भे
वि· दसे जयज्ञानने वास्ते कुला
प· कुल चक्र लिखने हैं मूला
र्द्रो अभिजित् शतभिषा

अथ युद्धे यायिस्थायिनो
जयाजयज्ञानार्थं कुला
कुलगणचक्रम् मूला
र्द्राभिजि द्वैयाद्दशमी
षष्ठी द्वितीया बुधो वाक्ते
माधिकरः कलाकुलग
णः स्यात्तो जयार्थं कुलः
मासात्याः स्थितभानि शे
षतिथियो गुरुमाकु जेभा
र्गवः सर्वेभ्यो कुलमेव
कोविजयते यस्मिन्दया
नाभ्रवम् ॥

56

पर नक्षत्र होर दशमी षष्ठी
द्वितीया तिथि बुधवार इन
कीकलाकलगणहै इसवि
च यात्राकरे तो दोनोंकीसं
धीहोतीहै महीनयोकेनाम
मेंस्थित यो नक्षत्रहै चित्रा
विशाखा ज्येष्ठा पूर्वाषाढा
श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्वि
नी कृत्तिका मृगशिरा पुष्य
मघा पूर्वाफाल्गुणी बाकी
की शुभतिथि मंगल शुक्र
वार इनकीउलसंज्ञाहै इस
विच युद्धारंभ होवे तो स्था
यिदाजय होताहै होरसंपूर्ण
तिथि वार नक्षत्र योहै उनके
अउलसंज्ञाहै जिसविच जो

१ए यीराजयहोताहै । ।
वि अथयोगिनीविचारकहिते
पा है पूर्वदिशामे ब्राह्मीनाम ।
वाली योगिनी प्रतिपदा न।
वमी तिथिको उदयहोतीहै

अथयोगिनीविचार
पूर्वस्या उदये ब्राह्मी
प्रथमे नवमे तिथौ म
हेशी चोत्तरस्यांत द्विती
या दशमी तिथौ ।

द्वितीया दशमी तिथीको ।
उत्तरदिशामे महेशीनाम
वाली योगिनी उदय हो ।
तीहै ।

एकादशी तृतीयाको कौबेरीनाम योगिनी अग्निकोण ।
मे उदय होती है चतुर्थी द्वादशीको वैसनी नैऋतकोणमे

एकादश्यां तृतीयायां ।
कौबेरी वह्निकोणगा च
तुर्थी द्वादशी योका वैस
वी नैऋते भवेत् वाराही
दक्षिणेभागे पंचमीत्र ।
योदशी षष्ठी चतुर्दशीना
म ऐन्द्राणी पश्चिमे स्थिता

पंचमी त्रयोदशीको दक्षिणमे
वाराही योगिनी होती है ष
ष्ठी चतुर्दशीको ऐन्द्राणी प
श्चिममे उदय होती है ॥
॥

२ए पूर्णिमा सप्तमी को वायुको
वि णमें चंडिका योगिनी होती
५२ है अमावास्या अष्टमीको म
हालक्ष्मी ईशानकोणविषे

पौर्णिमास्यां च सप्तम्यां ।
वायव्यां चंडिकोदयः न
ष्टचंद्र दिने ह्यष्टम्यां महाल
क्ष्मी शिवालये । यत्रोद
य गता देवी तेनो यामा
द्व अस्तितः अमती तेन मा
र्गेण भवेत्त्कालयोगि
नी । अथवारयोगिनी

होती है जिसदिशाविषे यो
गिनी होवे उसदिशा थोले ।

52

कै अथा अङ्गायेहूर आठटि
अथैङ्गा इवि भौम जीव
त शुक्रा शनेीहू क्रमा
दक्षिणे दिक्षु नाथाः अ
जे योगिनी वारअत्यो
विलेक्यो मदा दक्षिणे
पृष्ठतः स्या हलिष्ठा
अथदिकशूलविचारः
नपूर्वदिशि शाक्रभेन
विधु शौरिवारे नथा
नवा जया जभे गुरौ
यमदिशीश शुक्राकयोः
श्रामेफिरहीहेन इसकोन
कालयोगिनी कहतेहै ॥
अथवारयोगिनी सूर्ये भौम

रण वृहस्पति बुध शुक्र शनि
वि चंद्र एह दक्षिण क्रमकर्के
पञ्च पूर्वादिदिशोंके स्वामी है वारे
शकी पूरव मे रविकर वने

५३

नयाम दिशि थात्र भे
क्रज बुधेर्थमत्तेनथा
न सैाम्य ककुभि व्रजे
त्तजय जीवताथीत्त।
यः

मान वार यिस दिशा मेंत्रावे
उसविचवार योगिनी जान
ली रहनेहार पीछे योगि।
नी बलवानहोती है अवटिक
कुलकाविचार लिखनेहा।
ज्येष्ठानक्षत्र चंद्र शनिवारो

मे पूर्वदिक पूल अथर विचे
इमादा चान कहने वाले रा
शिओंका दिशा विषे निवेश
करते हैं ऐसा नीत इमई शा।

अथर विचेइ वाने विवर
लछुह राशीनो दिगिवेशा
षे निवेशामा हू समरसोर
ऐशानीतः सित ऊज शा।
नि रवि थइ राशायः पनी
वीदा गुरु शुहे यो रहोद
गिदशो न शुहू यो रु वाय
व्याम।
न कोणथा लेके क्रम मे सि
न शुक्र दे राशी हुष तला ई
शान कोणमे ऊज मंगल दी
राशी मेष वृश्चिक पूर्व दिशा

रल विच शनिदी राशी मकर कुंभ
वि रविराशी सिंह हरिलविच
पक्ष होरपश्चिमविच चंद्रमादीरा
शी कर्क गुरु ग्रह स्थनिदी रा
शी धन मीन पह रत्त दिशा
नैरृत उटक उत्तरमें क्रमसो
स्थितहे नैरृतमें धन उत्तर
विच मीन होरत्तग्रह बुधदी
राशी मिथुन कन्या वायुको
णविचस्थितहे। द्वितीययथा
मार्धतइति द्वितीययामके
अर्धथोलेके यामे यामे पह
र पहर विच सूर्य तीसरी
तीसरी दिशाको हननक
रदाहे पश्चिमथोलेके प्रथ
म प्रहरार्ध होर अंतिम प्रह

तार्थकरके दक्षिणदिशाको
हननकरदाहै जेमेपहिले
पहरदा अेम अर्थ दूसरे पह
रदा आदि अर्थ दुनोदो अर्था
विच त्रये पश्चिम दिशाविच

द्वितीय यामाईन पवया
मे यामे तृतीयाच पुन
तृतीया अर्कः प्रतीची
प्रभृती दिहेति प्रागत्य
यामार्धयोगेन याम्या

स्थित यो राशी कर्क उसको
होर पश्चिमदिशाको हनके
रदाहे होरउसीतरां दूसरे
पहरदा अर्थार्धे तृतीय या
मदा प्रथमअर्धविच उत्तर
दिशा होरउत्तरदिशास्थित

१ण राशीमीन इनकोहननक
वि रदाहै होरनीमरेदा ग्रैस्थे
५५ कोणीदामध्यमार्थे इनेमेसू-
वेदिशा होर मेष वृश्चिक
राशीको ध्यानकरदाहेहर्थ

प्रागेत्य याम्यार्थे प्रुतेन
याम्या ईशा द्विदिशां वे
ध्रो यामे यामे निहेति ।
वृषकुंभौ मृगा सिंहो
धन्वितथा कन्या मिथु
नेक्रमेण ।

होर चतुर्थ प्रहरदा ग्रेन्थार्थे
प्रथमप्रहरदा एवांथे इनां
विच दक्षिणस्यराशी सिंह
उनको हननकरदाहै । ई-
शानकोणछ्यां लेके विदि ।

शा अर्थात् यो कोण है उन
कों होर उनमें स्थित यो रा।
शी इनको चंद्रमा प्रथम
प्रहर छोलके क्रमसे विरि
शाको चंद्रमा हनन करता
है जैसा प्रथम प्रहर में ईशा
न कोण होर वृष तुल रा।
शी दूसरे पहर में अग्निको
ण होर मकर कुंभ राशी।
को चंद्रमा हन करता है ती
सरे पहर में नैऋत कोण।
धनराशी चौथे पहर में।
वायुकोण होर मिथुन क
न्या राशि इनको चंद्रमा ह
नन करता है ॥

रल
वि
प्र

56

	सू॰ सू॰ ३ । ४ अं आ ४ ४	सूर्यचान चक्रम
उ॰ सू॰ २२ अं आ ४४		१।४ सू॰ ८ आ अं
दिक्स्थित राशीचक्रं	सू॰ प॰ अं । आ १ । २ ४ ४	

ई	पूर्व	अग्नि
ह॰ त	मे ह	मं कुं
उ॰ मी॰		द॰ सिंह
वायु मि॰ कुं	नं कर्क	नैऋ॰ धन

चंद्रवातचक्रम्

अग्नि मं॰ कुं चं प २	दक्षि ण	नैऋत चं ध ३ ७
पूर्व		पश्चिम
ईशान् चं प १ ह ल	उत्तर	वाव चं मि प ४ क

रण अवविरुद्ध अर्थात् निर्दिन
वि. अर्धयामा शुद्ध राहु हृदे आ
५३ दि जिसदिन होवे उसमें युद्ध
करे तो किसजगा प्रहार ।
57 लगेगा सोकहतेहै जोअ.

अथविरुद्धयामशुद्धा
द्वरव्यादिषु युद्धाचरणे
प्रहारस्थलानाह वाम
शेत्र विरुद्धया मरलजेः
प्राग्भागके शुद्धजो राहोः
स्यात् ऊवाधरे स्फनिसिते
हेले प्रहारो रवेः ।

र्धप्रहरनिर्दिनहोवे तो वा
मेंऊंठेपरप्रहारलगताहै ।
जो शुद्धकेतविरुद्धहोवे तो
देहेट प्राग्भागमे अर्थात्

लग्नमें ऊपर राहु विरुद्ध हो
वे तो रत्नोंके हेठ स्थित विरु
द्ध होवे तो कर्ण शिर दर्द
विच लगदी है चंद्रमा विरु
द्ध होवे तो श्वास भात होर

चंद्रा दास्य भजनहठे मद्र
रोग शत्रुग्रहस्था चित:
स्यात् घात: किल होर
या इति भवे खिन्नादि
दोष फलम् ॥

होनेभजनोंमे प्रहार लगदा है
जो शत्रुग्रहदी होरा होवे तो
हृदय वा भाव विच प्रहार ल-
गता है विरुद्ध गदा युद्ध शा
स्त्रोंमें निश्चय करके।
विचार करना ॥

रण वि. ५८

58

अवराहुदावलकहतेहै प्राक
पूर्व वान वायुकोण अंतक
दक्षिण शंभु ईशानकोन पा
शिदिशा पश्चिम हुतभुक
अग्निकोण पौलस्त्य उत्तर ।

अथराहुवलमाह प्राग्वा
नांतक शंभु पाशि हुत
भुक पौलस्त्यरक्षो दिशो
यामाई रगरक्षि पाशि क
ऊभो सोपाहि वासी निशि

राक्षसनैर्ऋत इनोदिशोवि
वेर्वे दिनोंमे आधा आधा पह
र राहु स्थितरहिताहै अर्था
त प्रातःकालघोंलेके पूर्व
दिशाघों केमी केमीदिशा

विचराङ्फिरदाहै । होरवा
यिविच पश्चिमथ्योलेके को
मेकोम दिशाविच श्राथा श्रा
धा पहरराङ्भ्रमणकरदाहे
पव हिचटिकराङ्कहनेहैं

ऐशे दक्षिणतः शुभो हि
चटिको मोक्षपंक्तयी व
जन् ईशानाका वनेऽज्ञ
राज्ञसहिमाः खग्निः प
नीवि दिशः ॥

पव्हचटिकराङ् ईशानको
णथ्यो लेके चोथी चोथी दि
शा विच दोदोघटी राङ्पति
कालथ्यो लेके दिनरातमे
चारभ्रमणकरदाहे दिन

रण गविरे वज्जीभूहू नेहोदेहेन
वि· प्रातःकालमें दोचटी ईशा
५९ नकोणमें आगेदोचटी अग्ना
क दक्षिण आगेदोचटी वा·
युकोणभी पूर्व नैऋत उत्त
59 र अग्नि पश्चिम इनो दिशा
विच क्रमसे भ्रमण करदा
है पीठपीछे होर दक्षिण
होवे ताउडया आहोरता
त्कालमें युद्धारंभ शुभ हो·
ताहै ॥ अब सूर्यादिवारों
में वर्जनीय प्रहरार्धकह
तेहै ह करके ८ ल ३ त ६
क १ भि ४ म ७ लि २ प अ
र्धप्रहरक्रमसे सूर्यादिवा
रोंमें वर्जणा इनाविच का

त होता है जैसा सूर्यवारे
अठमा अर्धप्रहर सोमवारे
तीसरा मंगलेछेमा उधवा
रे प्रथम वीरवारे चतुर्थे शु
क्रे सप्तम शनिवारे दूसरा

अथ सूर्यादिवारेषुवर्क्षे
धप्रहरामाह हालेन ।
काभि सावियाम दलैल
कालः सूर्यादि वासर
गतो ऽपि वर्जनीयः ।

अर्धप्रहर विषे काल होता है
युद्ध विषे वर्जित करणा अ-
वहार कार्य विषे वर्जनीय
एक कहते हैं सूर्यवारे भ४
चौथा अर्ध प्रहर सोमवारे

रण · म ७ अर्धप्रहर मंगले २ हस
वि· रा अर्धप्रहर बुधवारे म ५
६· अर्धप्रहर वीरवारे द ८ अ९
म शुक्रवारे ल ३ तीसरा श
60 निवारे ति ६ के मां अर्धप्रह

भासा रसे दलति या मद·
लाति भानुः वारक्रमा
दपि नरः स्वहितार्थी त्य
जेत् ॥

र होर शुभकार्यविच वर्जणा

युधि वर्ज्यं

अन्यकार्ये वर्ज्यं

१ १ २ २

हा	लं	न	का	भि	स	त्रि
सू	चं	भौ	बु	बृ	शु	श
८	३	६	१	४	७	२

भा	सा	र	मे	द	ल	ति
सू	चं	भौ	बु	बृ	शु	श
४	७	२	५	८	३	६

मकारचक्रम्

२ल अवग्रहोंकी स्थितीके वसथो
वि. प्रकारका ज्ञानकहतेहैं १
११ रुषके जन्मलग्रथों होर ज
न्मराशीथों नामराशीथों
प्रथमस्थानविषे सूर्यहोवे

61

अथग्रहस्थित्याप्रहार।
माह लग्ना ज्ञामेश्च प्रेमः
क १ वि ३ १२ कपि ११ न
या ९ थो ४ २ ८ भा ५
साधन ६ संख्या विदा।
हन्ख नेवापि विध मथ
सहसा
तो सूर्य शिरविषे जावल
गताहै रिपुकरके वाहरमें
वेदमाहोवे तावक्रभाव।
होरहृदयमें प्रहारहोता

हे कपि ॥ जारमै मंगल
होवे ता अपरनय १. तुय
होवे दशम ता ख हृदयमै
स्तनमें थो ॥ नवम हृहस्प
ति होवे ता उरू विच प्रहार

ऽमूर्धि वक्के रूहू त्को व
लोजे श्रोफ़देशे उदरु
ति नदउ ग्रंथिदो गेउ
भागे वास्तः सूत्रः स
कालः ख २ल ३ स ७ म
५ नि मगः कर्णकंठेष
जेच ॥

लगदाहै ट ६ अष्टम शुक्र
होवे ता उदामै प्रहारलग
दाहै भा ध चतर्थ शानिहो
वे ता ग्रंथि विच प्रहारलगा

रग ताहै मा ५ पंचमराहू होवे
वि तांगड भूजामें न ६ छटमे के
१२ तहोवे तांगडे में लगताहै
प्रहार होर जिसलग्नविच
जिसने ग्रहवनोयोव उस
दास्वामी ग्रहदानामवास्त
है होर जिसलग्नविच जेपाष्ट
पुत्रदाजन्महोवे उसदा ।
स्वामी ग्रहपुत्रग्रहहोताहै
होर अपनेजन्मलग्नथों
प्रथम राशीदा स्वामीका
लग्रह होताहै वास्तहमरे
होवे तां करणमें प्रहार हो
नतीमरे होवे तां कंठमें ।
कालसप्तमी होवे तांभुज
में प्रहार होताहै ॥

62

शूळाख्यो केतुहै सोदिनमान।
के अर्धप्रहरहै षोडशाउनोंवि
च अग्निकोणथोंलेके क्षेमी
क्षेमी दिशाकों हननकरदाहै

अथशूळपरनामकके
तुफलमाह शूळाख्योऽर्द्ध
प्रहरे याम्येपीतस्तथादि
वानिशिच षष्टीषष्टीह
न्यात्तन्मुखयात्रा शुभान
रते ।

जिसदिशाविच शूळाख्य या
नकरे उसदिशादे सन्मुख
यात्रा युद्धवास्ते शुभनहीं।
होंदी मानकालथों अग्नि।
कोणथों प्रारंभकरणा ॥

रण.
वि.
१३

शुद्धचातदिकचक्रे

63

अव सूर्य चंद्रमा पृष्ठ अथवा
दक्षिण दिशा विषे स्थित हो
वे तो यायी स्थायी दा जय
पराजय कहते हैं। यायी
अथवा स्थायी को युद्ध दि
न विषे सूर्य पीठ पीछे अथ
वा दक्षिण होवे अथवा वा

अथ रविचंद्रयोः पृष्ठद
क्षिण दिशि स्थितो सन्तो
यायी स्थायिनो जय प
राजय माह ।

या अपणी अगों अथवा वा
म होवे तो स्थायी दा जय हो
ता है परंतु इसमें यह विशे
ष है यो दक्षिण दिशा दा ख

२ए॰ रवीचलदाहोवे नटयायी॰
वि दाजयहोताहै स्थायीदान॰
१४ हीहोंदा होरयदहर्यहष्ठ।
स्थित अथवा वामस्थितहो

64

श्लोकौ यदिदक्षिणेपि
पृष्ठतःछायाथवामेज
यः किंत्वकें वहतीह।
यायिनिविधौ वाहेज॰
यः स्थायिनः ॥

वे वामनासादा स्वरवीच॰
लदाहोवे तोस्थायीदाजय
होंदाहै होरजदराज्ञिवि॰
वि चंद्रमादीछायापीठ॰
पीछे अथवा दक्षिणछाया

होवे अर्थात् चंद्रमा संभाव
वामहोवे तदकीयायीस्थायी
दाजयहोताहै कितप्रविशे
ष इसविचजाननाचाहिये ।

वायाष्ठष्ठगदक्षिणानि
सि शासी वामेअतोवाज
यो यत्र सेंदुवहे परस्प
त रवे वीसः सशीष्ठः त
यी ।

आगे अथवा वामेचंद्रमाहो
वे औरवामस्वरवीचलदाहो
वे तो यायीदाजयहोंदाहै
योचंद्रमावामसंभावहोवे
होरदक्षिणस्वरवीचलदाहो
वे तोस्थायीदाजयहोताहै ।
यायीदा नेहोंदा होरकस

२० पश्चिमे चंद्रमा वामेपार्श्वे
वि॰ ही वेगाहोताहै। प्राचीदृ॰
६५ ति प्राची एवं उदीची उत्तर॰
दिशिस्थित चंद्रमाहोवे तो॰
स्थायीदा जयहोताहै होर

65

प्राची उदीच्यो वा चंद्रे
गते स्थायी जयी भवे
त् प्रतीची दक्षिणे प्रा
प्ते यायी विजय माप्नु
यात्।

प्रतीची पश्चिमे दक्षि
णदिश चंद्रमाहोवे तो या
यीदा जयहोताहै चंद्रमा॰
यदि मकरादिक्के राशीविच
स्थितहोताहै तद खमध्य
थे आगे उत्तरको होताहै

होरककोटि केराशीविच
अपने मध्याह्न विषे दक्षिण।
होताहै अथवा पुष्टबलक
हतेहै वायु योहै सोपीठपो
केहोवे अथवा दक्षिणपासे

अथवायुबलमाह वा
युः पृष्ठे दक्षिणेच वहन्
सूचयेत बलं सम्मुखी
नश्च वामस्थ भहानो भे
ग सूचकः

बलदाहोवे तोबलकोसू
चनकरताहै होव सम्मुख
अथवा वामहोवे तोभङ्गयो
है योधा उनका भंग सूच
न करताहै ॥

रण॰ अववारविशेषविखे अर्थया
वि॰ मेटे भोगकरके समाक्रांत
११ दिशा ग्रहविच वर्जणी सा
कहतेहैं जिसदिन यो वार॰
होवे उसग्रहको वारशाक

66

अथवारविशेष अर्थया
मभोगसमाक्रांत दिग्व॰
र्ज्यमाह वारेशमें ग्रो वि
निवश्य पश्य त्सदक्षिण
ध्यान गताच्च क्रमेण ।
हतेहैन वारेशाको पेंडी ।
दिशाको रवेहै उसमेरखी
के अगें अग्निकोणआदि ।
क्रमकरके अगलेवारोंको
लिखतेजाना जिसविच अ

र्धं अर्धं पहरदे भोगथोंशा
निहोवे उसदिशाको उस-
वक्त यात्रा नेकरणी पंईब
पह्र आधा आधा पहर प-
यामार्धभोगाच्च निरन्ति
यस्मां यदान यायात्
ककुभं नरानाम् ।
क एक दिशाविच फिरने-
रहनेहैं ।

बल
वि
१०

कौवेरी उत्तर दिशाथों वि-
परीत गिणना करके अर्थात
त उत्तरथों वायुकोण वा-
युथों पश्चिम गिणना कर
के आदित्यादि वारों मे का-

67

अथ कालपाशज्ञाने
कौवेरीतो वैपरीत्येन
कालो वारः क्रमशः स्मृ
ता तस्य पाशः शत्रावे
तो वैपरीत्येन गण्यता ।
यात्रायुद्धे सम्मवे वर्ज-
नीयो ।

लहोना है उसकाल दे सम्मु
ख दक्षिण विच पाशहोंदा है
जैसेप्रवे काल होवे नोट ।

तिणपामज्ञानणा रात्रिवि
षे पहकालपाश उलटेज्ञा·
नने याचाहेरघुडविषे स·
म्प्रवेवर्जणा। ईशानको·
नविच कालनेजरहैं शु·
वघुडविषे वर्जकालहो
ताकहतेहै पहिलवारप्र·
हतिकहतेहै जिसदिनका
यादिनमानहोवे उसको·
आधाकरणा उसदिनाधे
को पजताली ४५ विच

रम जोड़ना फेरदेखणा किपहर
वि. योग सभा थोंचार है वा जावे
१८ जितना सभाथो चारहोवे उ
तनीरावे दीवारप्रहूत्तिहोती है
अथवा दिनार्थ और पंजताली

68

अथग्रहदेवज्योंकालहोरा
माह वारावेभा ह्नस्यः च
भा मामाश्च पारयाहोरा
रविशिन बुधेंडशनि गुरु
भौमा नाम विलगस्य सा व
ज्ये।

कायोग सभाथोंजितनेजा
देहोवे उतनेदिनचढेदेवार
प्रहूत्तिहोतीहै इसतरांवार
प्रहूत्तिजानकर चारप्रहूत्ति

थोंलेके जितने कालत-
क इष्टघटीहोवे उनोंको
खिज्या खिकेरके टो उसमें
गुणना अर्थात् हूणाकर
एण भागा मकारकरके
पञ्च उनका भागदेना जो
लब्ध मिले सोवारेशाद्क्र
मसे होराहोंदीहै वारेशा
आदित्यहोंकाक्रमयहहै
सूर्य शुक्र बुध चंद्र शनि
गुरु भौम इस क्रमसे गि-
णने सोहोराअपनीराशी
हे शत्रुग्रहटेहोवे तोदुःइ-
विषवजेनी उदाहरण दि
नमाण ३१।४। अर्थ १६ ३
इसको ४५ विच जोउया

रस तोह्लोप ५५।३॰ पहसहा ।
वि॰ घटी ४॰ पल घटैहे इसवा
६१ ले च १ पल ४॰ रात्रि वा॰
कीरेटीवार महूर्तिहोई वा
रमहूर्तिटे आदथों इएघटी
१२ इन्नोंको हूणाकीता २४
पंजाटाभागटेना लखि ४
मिली आदित्यवारे चौथा
होराचेढ्ढमाटीहोई पहरा
नहोराहोई इसथों अगली
वर्तमानजाननी ।

आईदितिभेरिति आईथों
लैके इसमेंनक्षत्रदेने दिन
रेखासे सूर्याकारचक्र ।
लिखणा जिसदिननाम॰

69

नक्षत्र चंद्रनक्षत्र सूर्यनक्ष
त्र एकनाडीविषे होवे सो
दिनयुद्धविषे यत्नथी वर्जि
त करणा । अथयात्राके

अथयुद्धेयात्रानक्षत्र।
माह आर्द्रादिमे छिना
सा नहिचक्रे यटेकना
आस्य: नामार्कचंद्रभा
नि प्रयने तदहल्लन
जे यत्नात् । अथया
त्रावाहने । जन्मनक्ष
त्र मारभ्य गणयेद्दिनभं
बुध:
वाहनकहतेहे जन्मनक्ष
त्रथीलेके दिननक्षत्रतक
गिणना गिणीकरीजे।

१०. जेकह्रोवे उसविच नौकामा
ति. गदेणा जेवा वाकी भचे सेवा
७. हूनकहूणा इकशेषवचे
तां गर्दभ होवचे तो घोड़ा

नवभिस्त हरे झागे शेष
तो वाहने वदेत् गर्दभ
स्तरगो हस्ति मेष जंबु-
क सिंहयोः काका म
गो मयूरस्य नैवेते नव
वाहनः गर्दभे धनना
शः स्या दश्चैव विजयी
भवेत् ।

तीनवचे तो हस्ति चार वचे
तो मेष भेड पंचवचनतो
जंबुक छेवचनतो सिंह

सत वचे तो काक शुठ वचे तो
मृग हरिल तो वचे तो मयूर
वाहन होता है इनका फल।
कहते है गर्धभ वाहन होवे तो
यात्रा करणेथों धननाश है

वायसे भक्षये त्काले मृगे
कार्यं च सिद्ध्यति मयूरे।
धनलाभः स्यात् यात्रायां।
सफलो भवेत् ॥

ता है शुभ होवे तो जय होता
है वायस वाहन होवे तो का
ह भक्षण होता है मृग विषे।
कार्य सिद्ध होता है मयूर विषे
धनलाभ होता है और यात्रा
विषे सफल होता है हसिवा
हन विषे जय मेष विषे हानि

रण जेउकमें पराजय सिद्धमेसर्व-
वि. था जयहोताहै । अवहोर
७१ वलकहतेहैं एकमात्रा जिस
दे नामविविहोवे उससों दो-
मात्र वलावलवानहोताहै ।

अथान्य बल माह एक-
मात्रो द्विमात्रश्च त्रिवतः
पंचमात्रिकः यथोत्तरब
ला ज्ञेया ज्ञातव्या स्वरवेदि
भिः

दोवालेसेतीन मात्रावाला
तीनमात्रावालेसे चारमात्रा
वाला चारवालेसे पंजमात्रा
वालावलीहोताहै इसीतर-
ह यथोत्तर बलयुक्त विधि स्व
रशास्त्रके जानने वालेको

जानना चाहिये ॥
अब होरबल कहते हैं प्राग।
दिङ्शा पूर्वादि दिशाओंके ग्रह यह
क्रमसे स्वामी हैं पूर्वदा स्वामी
सूर्य अग्निकोणदा शुक्र दक्षि

अन्यद्बलमाह प्रागादीशा
रवि सित कुज राहु यमेन्दु
सौम्य वाक्पतयः यस्या
वा स्वरनाड्या हिकस
स्त्या रिपुं हेति ।

णदा भौम नैर्ऋतदा राहु प
श्चिमदा यम शनि वायुकोण
दा इंदु चंद्रमा उत्तरदा सौम्य।
बुध ईशानकोणदा बृहस्प।
ति स्वामी जिस दिशामें वास

रल रनाथ वारदा स्वामी होवे
वि उसदिशा विच स्थित होवे तां
३२ शत्रुकों मारदा है । होरस्त्र:
ये शनि को हतकता है शुक्र
बुध को हतकरदा है मंगल

72

हंति सूर्यः शनिं शुक्रो।
बुधं हंति कुजो गुरुं त
मोऽर्के मर्कजो भौमं श
शी शुक्रं विधुं गुरुः।

गुरु बृहस्पति को हनन कर
दा है तम राहु सूर्य को
हनन करदा है अर्कज शनि
भौम को हनन करदा है श
शि चंद्रमा शुक्र को चंद्रमा
को गुरु हनन करदा है ॥

अथवा दिङ्नाथ दिशाके
स्वामी करके हनकीनीटी
यो दिशाहै सो दिशा प्रहन
करणेको योग्यहै दिङ्ना।

यदिवाथ प्रहर्तव्यः दि
ङ्नाथ हन दिङ्मता
दिङ्नाथ कालहोरा
यो वासरेच विशेषतः

थदी कालहोराविषे अथ
वा वारविषे प्रहरकरणा
शुभहै विशेषकरकेजय
होताहै इति विशेषबला।
नि। पीछेहोर टहनेपासे
राङ्करके एक योगिनी।

रण यिसकोंहोवे सोइकवीलक्ष
वि· शत्रुकोमारताहै एह संपूर्ण
१३

विशोधसमरसारे इथे
दत्त योगिनी शत्रुमुक्ता
यंसे कोपि शत्रुलक्ष्यं नि
हंति प्रोक्तः सर्वेभ्यो वहे
भ्य स्तदेव संक्षेपोयं सर्व
सारो भ्यधायी ।

वलोंकासार निकालकर·
कहाहै संक्षेपकरके ॥
पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र गुरु
वारको दक्षिण होरशुक्र ।
सूर्यवार रोहिणीनक्षत्रको
पश्चिममें मंगल बुधवार

73

उत्तराफाल्गुणीनक्षत्रमें उत्त
रदिशावादिकसूलहोंदाहै जो
जयदीइच्छावाले सन्मुखदि
कसूलमें यात्रानकरे । अ

अथ राहुविचारः अथा
तः संप्रवक्ष्यामि ख्याता
या ब्रह्मयामले राहुका
लानली यात्रा सद्यः प्रा
ण कारिणी । शरयोगव
शा यात्रा ज्येष्ठानिशास्त्रेषु ।
भाषिता यात्रा शुभेषुका
र्येषु शुभदा नान्न संशयः ।

अब राहुदाविचारकहतेहैं इस
केउपरान्तराहु कालानली ।
यात्राकहतेहैं योब्रह्मयाम
लमेंलिखीहै सन्नादीफल ।

रण कोंदसनेवालीहै। ग्रहोंके
वि॰ योगश्चों याचा सुद्धने ग्रंथों
१४ में यो लिखीहै श्रोह शुभा
शुभ कार्योंकेवास्तेहै युद्धके

यस्य छायाप्रभावेन छा
यन्ते शशि भास्करौ तस्य
राहोः प्रभावेच वक्ष्येहं
रणकर्मणि। केचित्त्व
त्वो वदन्त्येवं ग्रहो राहुरका
रणे यतो वर्षे दिने लग्ने
श्चाधिपस्य नहश्यते।

वास्तेहै जिसराहुदे छायासे
प्रभावकरके सूर्य चंद्रमा
छादितहोतेहै तिस राहुका
प्रभाव युद्ध विषेकरनेहै।

कोई मूर्ख कहते हैं यह सही।
है क्यों कि वर्ष दिन लग्न विधि
राज्ञ को अधिपत्य ने है परंतु
अधिपत्य में स्थित था यह है

आधिपत्ये स्थिताश्चैव व
र्षे मासे दिने शुभे तथा।
धिकारिणो ह्येयो राज्ञ रा
ज्ञा विधीयते। वेदा रा
म पुराणेषु विख्यातो रा
ज्ञ विचरः तस्य महात्म्य
मज्ञात्वा मिथ्या जल्पति
चाल्पवित्।

सो अधिकारी है राज्ञ राजा है
इसवास्ते संपूर्णो का स्वामी है
वेद शास्त्र पुराणों मे राज्ञ प्रसि
द्ध है राह यह उसके महात्म को

रण नैजानकर मिथ्या बोलनेहै
वि शास्त्रके नैजानणेवाले ।
७५ संपूर्ण ऊहरिष्टो विवेकी ।
जानकशास्त्रविषे राहुमनया.

75

ऊहेरिष्ट सर्वेष्ट जानका
रिष्ट मन्यते सद्यः प्रत्यय·
दो राहुः सकथं स्यात्का
रणं । भ्रम त्सकालरूपे
ण संहारेण महीतले ।
सवक्रर्तेहऽया योद्ध तेयो
राहुने संशयः ।

हे मतावी प्रत्ययकरवाणे
वाला राहु कैसे अकारणहोवे
सोकालरूपसे भ्रमता होता
जगत्संहारकरता होता ।

पृथिवीमेंभ्रमदाहै सोअग्नी
दाढावाला रौद्रभयानकरा
कृत्यानना इसमेंसंशयनहीं
ग्रहजिसदेभयसे सीधेचलते
हैं उसराहुदेनाम कहतेहो।

ग्रहाः ग्रासभया द्यस्य
हि मार्गे भ्रमंतिच नस्य।
नामान्यहं वक्ष्ये शुक्र पुत्र
क्रमेणच। राहु विधुंत
दा पातः स्वर्भानु सिंहि।
का सुतः दैत्यच्छाया शि
रो वक्र ग्रहारिश्च विधुंतदः

शुक्र पुत्रभेदकरके। राहुः
विधुंतद पात स्वर्भानुः सिंह।
कासुत दैत्य छायाशिर वक्र
ग्रहारिः विधुंतद ॥

रण केतुनाम शुक्रकेतु शिखीसर्प
वि. गदा गुह्य षष्ठ उन्मान विषगर्भ
३८ धूम्र काल ग्रहान्तक । नक्षत्रों
के आधारमे स्थित राहु सर्प रू
पवालाहै उसदाचक्रकहतेहै

शुक्रे केतुः शिखी सर्पो
गदं गुह्यं षष्ठ मत्त उन्मा
लो विष गर्भश्च धूम्रः का
लो ग्रहान्तकः । ऋक्षा
धार गतो राहुः सर्परू-
पेण संस्थितः तस्य चक्रं
प्रवक्ष्यामि राहुकालान
लात्मके ।

राहुकालानलनामजिसदा
है । परस्पर जिय सम समरे
खाकरणी ईशान कोणसे

कृत्तिकादि क्रमसे अभिजि
त् सहित नक्षत्र लिखने ।

शलाका सप्तके चक्रे
मीशादौ कृत्तिकादिके
साभिजि लक्ष्य मालि·
ख्य अष्टाविंशति तार
का । यत्र दिने स्थितो
राहुः वेदने नहि निर्दि
शेत् ।

जिस नक्षत्रविषे राहु स्थित
होवे उसको शुभ जानणा

अथ सप्तशलाकाचक्रम्

77

सूर्येथो चंद्रमे नक्षत्रविच उ
सदा शुक्ल स्थित हैं उस शुक्ल
मे इकसो इक के तेजवाले हैं न
सो सारा जगत भासमान करते हैं

शुक्लो संचरतो यत्र त
स्य शुक्ले व्यवस्थितेः । प
कोटिशः शतसंख्या ज्या
यते तत्र केवलः भा
सयन्ते जगत्सर्वं सहस्रा
र्कसमविभः ।

कैसे हैं केतु हजारों सूर्यों के
प्रभा जिनकी । राहु करके
शुक्ल ये तेरा नक्षत्र हैं उन
का नाम जीव पक्ष है भोग्य
तेरा नक्षत्र सप्तपक्ष जान

रण ण । स्वरपत्रमें राहुका
वि शुभहै स्वरपत्रमें उसदी ग
१८ दोहै इसमें तरांसे दोनो पत्रमें

राहुचक्राणि शस्त्राणि
जीवपक्षे त्रयोदशः त्र
योदशैव भोग्यानि स्वर
पत्रः प्रकीर्तितः । स्व
रपत्रे शुभं तस्य गृहे
जिह्वा गमास्थितम् प
व मे गाहृये राहुः ज्ञात
व्यः स्वरपारगैः ।

उसदीगदोहै इसमें तरांसे दोनो
पत्रमें राहु स्वरशास्त्रके जान
नेवालेनो जाननाचाहिये ।

जीवपक्षविषै चंद्रमाहोवे
मृतपक्षमे सूर्यहोवे उसस-
मयमे यात्राशुभहोतीहै वि

जीवपक्षे त्वयनाथ मृत
पक्षे रवौ स्थिते तस्मिन्
काले शुभा यात्रा विपरी
ता तु हानिदा। चंद्रः
स्थितो यत्रशुक्रो जीवप
क्षे व्यवस्थितो तदा क्षेमं
जयं लाभं यात्राकालेन
संशयः

परीतहोवे तोहानिहोतीहै
सूर्य चंद्रमा होतो जीवपक्ष
मे शुक्रहोवे तो यात्राकरणे
मे कल्याण जय लाभ होता

२ए है संशयनही। जोर सूर्य चंद्र
वि॰ मा मृतपक्षमें स्थितहोवे तोहा
३५ नि भय भंग मृत्यु यह यात्रादा

मृतपक्षे यदाकाले सं॰
स्थितौ चंद्र भास्करौ तदा
हानि र्भयं भंगो मृत्यु र्या
त्रा फलं मतं। जीवपक्षे
स्थिते चंद्रे कार्यं स्याद् दृष्टतो
पमं मृतपक्षे स्थिते हेयं।
यतः चंद्रबले बलम्।

फलहोंदाहै। जीवपक्षमें चं
द्रमा स्थितहोवे तो अष्टतोपम
कार्यकोकरताहै यह मृतपक्षमें
होवे तो मृत्युजाननी चंद्रमा
के बलाबलसे यहफलहै।

79

अब पंचांगभेदकर्के राहुच-
क्रके कहते हैं अब छिद्र ग्र-
ह चक्र मस्तक पहनक्षत्र ।

अथ पंचांगभेदेन राहुच-
क्रं वदाम्यहं वदने जठरे
गुह्ये चक्रे मस्तक मेवच
वदने ऋक्ष मेकेन जठरे
च त्रयोदश ऋक्षेके गुह्य
ये नव षट् चक्रे सप्त मस्त-
के अथो येगास्य नामानि
फलं चापि वदाम्यहं ।

अबमैं छिद्रमे नेत्रं ५ नक्षत्र
एक नक्षत्र गुह्यस्थानमें चक्र १
नक्षत्र चक्रेमे सात ७ नक्षत्र
मस्तकमें देके अब दिखेगो·

रग के नाम और फलवी कहते
वि॰ हो ।
८॰

80

यथोनरक्रमकर्के इमनरा
वेदमा श्रोरह्लयेका प्रमाण।
होदाहै जिसनक्षत्र विषे रा।
हुस्थितहोवे उसथोंलैकेना।

यथोनर क्रमेणैव वेद्रा
के प्रमाण तदा यत्रर्क्षे
संस्थितो राहुस्तस्मा ञ्चा
मात्र कीर्तनं। कालीनं
कर्तरी जिह्वा चंडांग व
टनं तथा वक्राग्र संस्थि
ता यासु तारका विश्वस
ंख्या।

मैहै। जिसविच राहुहोवे।
उसदानामकालीनहै श्रागे
कर्तरी २ जिह्वा ३ चंडांग ४
वटन ५ वक्रमुखेदे श्रागे यो

रम· स्थित तेरा नक्षत्रैहै उनकेनाम
वि· कामोग १ जठर २ जीव ३ मे७
ग१ ट ४ उदर ५ उदरथो जो एकन
क्षत्रैहै औार अवथो पंद्रमा न

कामोग जठरे जीवे मे७
टो दर मेजि के उदरा ह्येक
नक्षत्रे अवा तेवदशो स्फ
टे। गुद अङ्कलित गुम्
केत चंड्राक कर्तरी ग
द थिसा ग्रतो यानि थि
स्मानि रम मेख्येया ।

क्षत्र यो प्रकटहै उनकानाम
१ गुद १ उङ्कलित २ गुम् ३ केत
४ चंडाग ५ कर्तरी गुदसे क्षक
नक्षत्रथो आगे यो के नक्षत्रैहै

पुच्छ सूर्योग वंशाग ११ स
प्त पहसैना होतीहै बाकीके
सतनक्षत्र शव होर पुच्छके
मध्येमें स्थितहै उनकेनामप।

पुच्छे सूर्योग वंशांगे ११
१ सप्त सैष्ठवच शेषा
णि सप्तभा न्यत्र मध्यस्था
न्यास्य पुच्छयोः । कपा
ले मस्तके शीर्षे कृत्स्नांगे।
भौम्य मंडले स्थिररूप
स्थितो भानु स्वरूपश्च चं
द्रमा क्रमेणैकेक मंगानो
योगपंचक मुच्यते।

हैहै। कपाल मस्तक शीर्ष
कृत्स्नांग भोम मंडल सूर्य स्थिर
रूपकरके स्थितहै चंद्रमा च

रग. रत्नपैमे स्थितेहै इसे क्रमकर.
वि. के श्रेगोके पांचयोगाकहतेहै
पर सविता सूर्य जीवपक्षमेंहोवे
चंद्रमा उद्गिलितमेंहोवे तो ।

82

सविता जीवपक्षेन चंद्रा
उद्गिलिते यदा यायिनो
स्या जयं युद्धे भेगस्य स्था
यिनो तदा । उदरे भान
राश्रित्य वज्रांगे चंद्रमा
स्थितः तदास्था विजयी
स्थायी यायिनः स्यान्प
राजयः ।

स्थायीराजय होवस्थायीदा
पराजयहोताहै । उदरमेंसू.
र्यमे सूर्यहोवे वज्रांगमे चंद्र
माहोवे यदतदस्थायीराजय

होर यायीदा पराजय होंदाहै
का भोग संज्ञकोंमे ग्रहस्थहो
वे कृष्णागोंमे चंद्रमाहोवे तो ।
स्थायीदा जयहोनाहै होर ।

काभोगस्था यदा हिंस्रो
कृष्णगे चंद्रमा यदि स्था
यीच जय वादी स्या च्छे
तो भवति यायिनाम्
संपुटस्था रवि भौमो नि
क्षयां चंद्रमा यदि स्थायी
न जयवादीस्या यायिनो
भंग मादिशेत् ।

यायीदा भंगकहणाचाहिये
संपुटसंज्ञकनक्षत्रोंमे सूर्य भौ
म होवे निक्षा संज्ञकनक्षत्रोंमे
चंद्रमाहोवे तो स्थायीदाजय ।

रण. होतोहै होवयाचीहाभंगाकरू
वि. णाचाहिये । जठरमत्तकनह
पर ओंमे स्हर्यहोवे होवचेडमाकी
उमीअगमेंहोवे युद्धमेजयहो

83

जठरे भात्र माधि्रत्य चे
म स्तैत्रेव चांगाके विज
ये विग्रह हेये किंचि स
पि भेव नता । मद्दाक्रो.
धा नराह्नेया समकोपा
भवेतिने अथवा जाय.
ने युद्धे यायी जयति न
त्वणत स्यहरवाहियो
गापचके

नोहै जब्लप्योडीसंघीचीहो
तीहै । वेडक्रोधकरकेयु.
ध होतेहै तल्पकोपकरके

शुक्रहोतेहै अथवा बउशु
डकोताहै तत्क्षणमें यायी
दाजयहोताहै पहउदरा।
रियोगपंचककेहै । गु
दस्थानविषे सूर्यहोवे सू

गुदस्थाने रविर्भूतः सू
र्योगे चंद्रमास्थितः या
यि भंगो जयी स्थायी भा
षितं ब्रह्मयामले ।

र्यांगविषे चंद्रमास्थितहो
वे यायीकाभंगहोताहै स्था
यीका जयहोताहै यहफ।
लब्रह्मयामलमें लिखाहै
गुदसंज्ञकनक्षत्रोंमें सूर्यहो
वे कपालनक्षत्रोंमें चंद्रमा

रण होवे तो हे पार्वति स्थायीका
वि. जय होर आगंतक यायी
पक्ष का भंग होता है गढ्में अत्तक
नत्रों में हस्थ होवे होर रा
84 हुनत्तत्रमें वेहमा स्थितहो

गुरे तुसोम्य मेषके क
पालस्थ निशाकरे स्था
यिनो विजयो भङ्गे भंग
मागंतकस्यच। गुरु
अत्त स्थिते स्वर्थे राहु
अत्त स्थितः शशी म
हाहवो भवे होरो किं
चित स्थायी जयी रणे

वे तो वडाघोर युद्ध होता है
होर स्थायी का थोडा जय

वीहोताहै युद्ध विषे ।
यद उत्फलितनक्षत्र विषे स्थ
ियहोवे वेऽ स्मा सप्तष्टनक्षत्र
मैहोवे तो पापीदा सताबी

भात्र फल्लिते यिस्म श्रा
शांस्प्ट ल्मूपदे सदा यायी
विजयते त्रिस्मे स्थायिनो
भंग मादिशेत् । तुष्य
हिनकरो यत्र नत्रैव पा
मनी कर: समयुद्ध भवे
त्तत्र किंचिदागंतु केजय:

जयहोताहै स्थायीदाभंग
कहणाचाहिये । तुष्ठसंख
कनक्षत्रोंमे सूर्यहोव वेऽ
मावी उसीस्थानमें होवे तो

रल होनेसेतनलग्नउड्डहोताहै षो
वि. ड्डजातीसेराजयहोताहै यह।
दप उत्तरियोगपंचकसाफलहै
अववचोनगकहतेहै वस्त्रांग

85

इतिउत्तरियोगपंचके
वस्त्रांगे भाउ माश्रित्य ।
कपालस्थे निशाकरे या
यिनस्थ शनी विधा स्या
त विजय मादिशेत् ।

मैत्तकनत्तत्रोंमेंसूर्यहोवे क
पालमत्तकोंमें चंद्रमाहोवे
तो जातीदीहानि होरस्याती
राजयहोताहै होरसूर्योग
विषे यदसूर्यहोवे जिह्वामें
चंद्रमाहोवे यद तदस्याती

तदस्थायीदाजय होवयायी
दापराजयहोंदाहै यदवङ्गा
गविखिसूर्यहोवे उदरमेंचं
द्रमाहोवे तोयायीदासता।

सूर्योंगेण तथादित्यो जि
ह्वायां चेड्मा यदि स्था।
यी विजयते तत्र भंगो
भवति यायिनो । वङ्गा
गस्थः सहस्रांशु हृदये ।
चेड्मा यदि यायी विज
यते क्षिप्रं शक्र कल्पे।
पि वैरिणी ।

वीजयहोंदाहै चाहेइन्द्रकी
तल्यवी शत्रुहोवे। सूर्य रा
ड्डे ९क्ष विखि स्थितहोवे चं
द्रमा ग्रदासत्तकन तत्तेमें

रण होवे तो तल्पयुद्धहोदाहै यो
वि॰ द्धजायीदाजयहोदाहै । सू
८१ र्यवेद्दमावज्रोगविच यथा
सभवस्थितहोन तदहोतो

भास्करे राहुवक्त्रस्थे स
र्गाके शुद माश्रिते ममं
युद्धे भवेत् तत्र किंचि ज्ञा॰
यी जयी भवेत् । सूर्य
वेदमसौ यत्र वज्रोगसं
भव स्थितो सैन्ययो रुभ
यो तत्र वधो भवति नि॰
श्चितं । इति वज्रोगयो
गपंचकं ।
सैनो सेनाकावधनिश्चय॰
करकेहोदाहै इहवज्रोग
योग पंचकदाफलहै ।

मृदंगनक्षत्रोंमें सूर्यहोवे
होवे राहुत्रिकोणमें चंद्रमाहो
वे तो स्थायीका जयहोताहै
यायीका भंगहोताहै । राहु

मृदंगस्थे दिनानाथे रा
हु त्रिकोणगतः शशी स्था
यिनो विजयस्तत्र भंगो
भवति यायिनः । राहु
शीर्षगते सूर्ये शशांके
जठरस्थिते विना युद्धेन
गृह्णाति यायिभीता महीं
श्रियं ।
शीर्षनक्षत्रोंमें सूर्यहोवे जठ
रनक्षत्रोंमें चंद्रमाहोवे तो
यायीयुद्धसेविनाहीभयभी
तहोइकरी शत्रुकी श्रीकोग्र

रण
वि॰
८१

हणकरताहै । मस्तकसेह
कनक्षत्रोंमे सूर्यहोवे गुरु
मस्तकमें धिष्णनाथवे चंद्रमा
होवे तो स्थायीजय युद्ध विषे

मस्तकस्थे दिवानाथे ।
धिष्णनाथे गुरुस्थिते या
यिनो विजयो युद्धे स्था-
यिनस्तु पराजयः । राहु
शीर्षगतो भानुः पुच्छगी
से निशाकरः तत्र स्थाने
नरेन्द्राणां भयमुत्पद्यते
महत् ।
होताहै स्थायीका पराजय-
होताहै । राहुके शिरमे सू-
र्यहोवे पुच्छनक्षत्रमेंचंद्रमा
होवे उसस्थानविषे राजयों

कावडा भय उत्पन्न होता है।
परस्पर दोनो थायी स्थायी।
युद्ध को उद्यत होते हैं न परंतु
युद्ध नहीं होता दुर्भिक्ष मरण।

विग्रहं त्वपि चान्योन्यं नव
युद्धं प्रजायते दुर्भिक्षं मर
णं घोरं व्याधयः सर्वदेहि
नां। ऊर्वेतिच महाघोरं
सैन्ययोरुभयोरपि हा
भ्रान्त न भवे युद्धं संधी
हीनो विनश्यतः।

घोर व्याधि संपूर्णों को होता
है संपूर्ण देहधारियों को दो
नो सेनाओं में घोर रोला होता है
दोनों का युद्ध नहीं होता संधि

रण· सैविनाहीनाशकोप्राप्तहोंदे·
वि· हैन। अथवा वडाघोरदारुण
८८ युद्धहोंदाहै रथ पदाति गजें
द्रहाथी होववडेघोघेमारेजे

88

अथवा जायते युद्धं म·
हाघोरंच दारुणं। रथ
पति गजेंद्राणं महाप्र
भटमर्दने नयस्तरक्त·
वाहिन्यो वहंति प्राणि·
मज्जलाः। ।

देहैन रुधिरदियानदीयां
वगादीयांहैन कपसीयांन
दीयां प्राणिजीवोंककेंभरि
यादियें। वसाजो मज्जा·
मोहचिकडजिसमें आपस

मे चर्वणकरतेहै शास्त्रोंका
जो अत्यन्तपात उसमेंप्रवाह
भया । जो रुधिरकरकेभ
रीगेहै मालाजिनकी एसी

वसा लोहित पंकेन च
र्वयंत परस्परं शास्त्रपा
तातिपातेन शोणिता
क्लिन्न मालिका । भक्ष
यंतिहि योगिन्यो महा
मेन्यप्रमर्दकाः शस्त्रवा
यस जंबूकाः खादंत्य
त्राणि तत्रवै ।

यो योगिनीयाभक्षणकर
दियाहै केसिया योगिनि
याभक्षणकरदियाहै केसि
यायोगिनियां महासेना

रण॰ कानाशाकरणेवालीयोहै सू
वि॰ य श्रोरकाक गीधड श्रांरशेट
८९ स्तार चावेतेहे । दोनोसेना
नाशाको प्रापहोतीहै पीछे

हयोः सेन्यनं येयोति कि
चि यायी जयी भवेत् क॰
पालस्थे दिवानाथे चंद्रे॰
तंत्रेव संस्थिते राज्ञा या
त्रा नकर्तव्या देश राष्ट्र
नंयकरी ।

सेजायीका थोडाजयहोताहै
कपालसंतकनंतत्रोमेसूर्य
श्रोर चंद्रमास्थितहोवे तोरा
जाने यात्रानेकरणा श्रोर
यात्रा खजाना होर राजादा
नाशाकरणे वालीहै ॥

स्थायिकाविजयहोताहै या-
यीकाभंगहोताहै यायिका
स्तुजानणा शिवजीकहा
ताकूठनहीनहीहै एहकपा
लादियोगपंचकहै । २८२

स्थायिनो विजय स्तत्र भं
गो भवति यायिनो स्तु
तत्र विजानीया त्रहृथा
हरभाषिते इतिकपाला
दियोगपंचके २८ वक्रो
स्थिते सूर्ये चंद्रे हृदयसंस्थि
ते यायिनो विजय स्तत्र ।
स्थायिनो भंग माहवे ।

वक्रविषे सूर्यहोवे होरचंद्र
मा हृदयविषे स्थितहोवे तो
यायीदाजय स्थायीदापराजय

रण वि॰ ५॰ यहोताहै युद्धविषै । सूर्यगी
लितग्रहणमे स्थितहोवे चंद्र
मा केतुग्रहणमेविते स्थितहो
वे तौस्थायीभंगकोप्राप्तहो
ताहै जायीराजयहोताहै ।

90

भास्करे गिलितेग्रस्थे
चंद्रे केतुग संस्थिते स्था
यी भंग मवाप्नोति या
यी जयति सर्वतः । श
त्रु आगतो भाव स्थंड:
पुंजांग गोचरे

परंतु यायीदेहविषै चाल
गहैहे राहुनक्षत्रमें सूर्यग्र
तहोवे चंद्रमा पुच्छग्रहणमें
होवे युद्धमें युद्धविषै स्था

यीराजयहोताहै यायीमृत्यु
कोप्राप्तहोताहै। योराहुजि
ह्वासूर्यमेंहोवे होर यो वेध,
माफलगमेस्थितहोवी तोवी

स्थायिनो विजयं ब्रूते या
यिनो मृत्युमादिशेत् ।
राहुजिह्वागते सूर्ये वेध
वेधगे संस्थिते स्थायी ।
विजयते तत्र भंगो भव
ति यायिनः राहुरुग्र
गतो भानुचंद्र लग्नेव
संस्थितः

स्थायीदाजय यायीदाभंग
होताहै। राहुकेनक्षत्रमें
सूर्य चंद्रमाहोवे तो यायी
स्थायीदोनोंकाजयनहीं

२ए होता दोनोसेना युद्धमें जय
वि॰ कोप्राप्तहोतीहै पूर्णस्वरोदि॰
॥१ कयोगपंचकहै । यदयुद्धका

91

नकश्चि जय माप्नोति से
न्ययो रुभयो र्जयः इति
स्वरोदियोगपंचकम् ।
युद्धकाले यदाशीघ्रं
यात्रायोगो नलभ्यते
उत्पाद्योतो तदाशीघ्रं
तत्कालेड दिवाकरो

लविष्ठ सताबी यात्रादा यो
गनैमिले तद सताबी ता॰
कालिक सूर्य चेद्रमा व॰
लाने ॥

अथोदाहरणे शाके १५९८
ज्येष्ठशुदि ८ अल्पो परतः ७ भोग
म ९ २० नदि ३ रोहिणि २ दि
नेमण्डवटी २० अत्रेष्टनाड्यः

गतानाड्यो हता षष्ट्याः
अष्टिभक्ता म शोधके अ
श्विन्यादी नवभक्तेन यु
क्ते तत्काल चंद्रमा ।

२० नक्षत्रैः १२ गुणिताः जा
ता ५४ अष्टाभागेलब्धं ९
शे० अथात्रकालेनक्षत्राष्ट
के ८ निष्यागत अश्लेष वर्त
मान नक्षत्रघटी ४१ एकन०
क्षत्रे ८ च ४१ नेनपूर्वेष्या०
पितेलब्धं ९ च० संयोज्यजा

रत्न ते १७। ४१ अत्र समसदृशासम
वि श्विनीप्रभृति अत्रराथान॰
धे क्षत्रे गते ज्येष्ठनक्षत्र च ४ ।
वर्तत इति अत्र क्षमति विचा
रेण वृश्चिकस्य तत्कालच
ष्टावर्तते अत्र नक्षत्रविचारे
णैवांशकादिकमवस्थाकार्या
यथाचेद्र तथा सूर्ये इति ।
३९ च २॰ पूर्ववत्समविश
ष्टिः ७।१२ ५ ४॰ ल ४ शे॰ य॰
था सूर्ये नक्षत्रचारो दिनत्र
य दशकेन संभवति तथा
होरात्रपर्यन्ते तत्कालविशे
षे सूर्यः सपादद्वादिकाहरो
नक्षत्रमेक मतिक्रमति तत्र
सूर्यो नक्षत्रचार दिनाष्टहि

नेष्ठ घटिकोभनक्ति प्रति
हिने नेनपलटशाके भुक्तिः
मेभवति अनेनक्रमेणनक्ष
त्रवाराङ्कभुक्तिः कार्येइति अ
त्रेष्टकालस्वार्थेण कल्पको
ते त्रीणि नक्षत्राणि अतीता
नि रोहिणीनक्षत्र घटिका।
हे ३ पतत नक्ष ३ घ॰ एवं
स्थितेलब्धे ४ घ॰ योज्यजाते
नक्षत्र १२। इष्टकालमें।
जितनियागतघटिकाहोवे
उनकोंधिसमताईसेगुण॰
ना सठादा भागदेना लब्धि
होव शेषदोहोवेगे लब्धि
मे अश्विन्यादि नक्षत्र गत
जानने शेषसें वर्तमान न॰

बल
वि
ध्रु

तत्र च टीकटीजाननेहोर
लग्निविचगत नक्षत्रोंकी

चे॰ चे ३ अश्विनीप्रभृति
द्वादश उत्तराफाल्गुनी
नक्षत्रे अतीते हस्तनक्ष
त्र च॰ चे ३ गताः तत्र
स्रमति विचारेण कन्या
राशिगत तत्काले स
यः हस्त नक्षत्र मानेना
शका दिव्यवस्था कार्या

13

संख्याजोडनी यो संख्याहो
वे सभे अश्विन्यादि गणना
से यो नक्षत्र आवे उससें ।
तत्कालचंद्रमा जानना ।

जाहिये ऐसे सूर्यकी तत्का-
लिककरणा । स्थिरचक्र-
विषे पहिले १ चेड्रमा सूर्य

अथवा भोमादयोपि अ
त्रा स्तात्काल वेड सूर्ये
व तात्कालिकाकार्यः ।
अत्राचार्येस्य रवि चेड्रमसो
रेव प्रयोजनम् । स्थिरच
क्रे प्रराप्रोक्ते चेड्रादित्यफ
ले मया चरचक्रे ष्पनैनैव
प्रकारेण फल वदेत् ।

का फलकह आये हैं चरचक्र
विषेवी इसी प्रकारसे फल
जानणा ॥

२ल तत्कालविषे चंद्रमा स्थहे।
वि योगविषे स्थितहोवे तो शत्रु
२३ औंदे साथ्या युद्ध होतांहे मह्रा
योगविच होवे तो विशेषक।

तत्काले चंद्रमा दिष्टो
यदा योगे अवस्थितो
जायते शत्रु संघाते म
हायोगे विशेषतः। स
र्वेषु शुभकार्येषु यात्रा
काले विशेषतः सर्वका
ले शुभ श्चंद्रो ज्ञेयो हरि
गौरतथा।

कै युद्ध होताहे। संपूर्णकार्यों
विषे होर यात्राकालमें विशे
षककै शुभहे संपूर्णकारी

विषे शुभ होता है यदचंद्रमा हृदयविषे अथवा उदमस्तक मैं स्थितहोवे। पुरुषके के न तृत्रोंमे अथवा कपालनक्ष त्रोंमे अथवा राहुचक्रमें वे

पुरुष हि कपालस्थ श शांके राहु वक्रगे वेथो हानिश्च रुतश्च सर्वका र्येषु जायते ।

द्रमा होवे स्थित तो वधनहो ता है रुतहोता है यह फ ल बड़ा सम्पूर्ण कार्यो विषे जानना। हृदयमस्तकमें होवे उग्रसंज्ञक नक्षत्रो में ।

रा वि ५५ चंद्रमा स्थित होवे तो विवाह क
रणेसे स्त्री पुरुष दोनो आनंद ।
को प्राप्त होंदे हैं न धन की हानि
होय और वैधव्य होता है जब श
ख पुष्य मस्तक में तक नक्षत्र

इदि शुक्रे स्थिते चंद्रे विवाहे
नैरति ध्रुवं स्थायं विदेश वै।
धनं श्रवे पुष्य व मस्तके ।
ऊर्ध्व त विचरे चक्रे अधोस्थ
चर प्रजाते उभयो सन्निपा
तेव राहु कालानले वले

मैं विवाह होवे तो । ऊपर ले
वर चक्र है हेठ स्थ चर चक्र है
दोनों को मिलाकर राहु का
लानल चक्र बणाया है वडा

95

बलवानहै । यहचक्र तो
भसे भयसे प्रीतिसे होरको
ईकाष्ठेसे नेंहमणा यत्नसे
उमरखणा चाहिये । विर

नलोभा नभया न्नेहा
त्त्रैरेये कार्यकारणात्
कालानल मिदं चक्रं ।
गोपनीयं प्रयत्नतः वि
नुकाल स्थिते भक्ते उपरी
त्य पुनः पुनः स्वकीयशि
ष्टेद्दातव्यं चक्रंकालानला
त्मकं इतिपंचराड्काला
नलचक्रं
कालसेवाकरणे जोहोवे उप
णशिष्य उसकोवारवारपरी
त्ताकरके यहकालानलच।

रण कटेएणचाहिये इतिपंचविधः
वि. राहुकालानलचक्रम् ॥
भः अबराहुकेदशभेदकहतेहै
हृदयेष्ठा लेके जिह्वानकक

अथदशांगराहुचक्रे हृद
याहीनि चांगानि जिह्वं·
न्तानि क्रमेणच नस्य सं·
स्थानहै वक्ष्ये राहुचक्र·
स्य मध्यतः । पुष्पिते फ
लितेचैव निष्फले कटिते
रोदे राजसे तामसे हदे स
ते जिह्वा क्रमेणच ।

मेसे उनकीसंख्या राहुचक्रदे
विच कहतेहै । पुष्पित १ फ
लित २ निष्फल ३ कटित ४

उर ५ राक्षस ६ सामस ७ ह
ड ८ स्त ९ जिह्वा १० । ये पु-
ष्पित संज्ञक नक्षत्र कल्याण
लाभ करनेवाले है शत्रुदा

त्रीणि पुष्पित ऋक्षाणि
क्षेम लाभ कराणि च श
त्रुभंगो भवे युद्धे यात्रा ।
मासेन लाभदा । त्रीणि
फलित ऋक्षाणि क्षेमला
भकराणि च गज वाजि ।
धने देशो यायी स लभेत
ध्रुवं
भंग होता है युद्ध मे और यात्रा
मे एक मास मे लाभ होता है
त्रय फलित संज्ञक नक्षत्र ।
यात्रा मे लाभ मे लाभ करते

२ल है गज वाजि धन देश्ण यायी
वि को निश्चयते मिलदेहैन । अ
ऌ फलसंज्ञक तीन नक्षत्रोंमे के
महीनेमे यायीको संधिसेवा

अफलेषु त्रिधिसेषु ष ।
एमासे योयिने प्रति सं ।
धिः सेवा तथादेशो स्था ।
यी जयति निश्चिने ।
फले प्राप्नोति वर्षेण करि
तेऽश्व विलारकैः गोधना
न्यरिहृदानि यायीव लभ
ते ध्रुवं ।
और देशग्रामहो और फरित
संज्ञकतीन नक्षत्रोंमे स्थायी
काजयहोताहै हाथघोड
बैके अंदर गोधन और शत्र

97

श्रोंके समूहकोंलूटलेताहै
होर शुद्रसंज्ञक तीन नक्ष-
त्रोंमे कन्या पद्मिनी प्रियवा
दिनी रूप यौवन संपन्ना।

शुद्रेच लभते कन्या पद्मि
नी प्रियवादिनी रूप।
यौवन संपन्ना महा धर्म
रता तथा। विग्रहस्य
भवे हृद्धि छेद्र भंगस्तथैव
च रोगपीडा भवेद्वर्षं राज
साद्धे क्षितारकेः।

धर्मरतकन्या याग्रीकाप्रा-
प्तहोतीहै। युद्धकीहृद्धि हो
करणविछभंगहोताहै होर
वर्षपर्यन्त रोगपीडाहोतेहै

रल राजमसंतक तीन तारयोंमें
वि॰ यात्रारैकरेतो । होर तामस
९८ संतक ये तारयो विच यात्रा
करे तो हाथि घोडे पुत्र मित्र

98

हत्यस पुत्र मित्राणि ।
देशकोश परिग्रहाः घड़ि
मीसे विनश्यंति यायिनो
तामसत्रये । तामसात्रे ।
चतुष्कत तारका हइसं
तका सर्वनाशकरा प्रो
क्ता यात्राकाले नंसश
यः

देश कोश स्त्री इनसवका
छे मासके अंदर नाशहोता
है । तामसके आगेचारनक्ष
त्रहइसंतकहै इनोविच ।

यात्रा करे तो संपूर्ण वस्तु का
नाश होता है । इसके आगे ये
नक्षत्र स्वस्मेत कहै इनमें ।
जो राजा युद्ध यात्रा करे उसका

जीएपनो स्वस्थानानि
राजस्व प्रदानि च असि
वाण स्व गुल्मेषु पत्तिके
न फले मते । युद्ध भंग
लब्धा भीति इव्यनाशे ।
कुलक्षये सखी स्वे लभे
धायी राहुवके हानिश्चिते

खड्ग वाण आदि शस्त्र से स्वस्थ-
को नाश होता है पैदा दिना वि
च । राहु भावसे नक्षत्रों
मे यात्रा करणेसे युद्ध में भंग

र.ल होर भय दुखनाश ऊलदाय
वि. होर मनोवांछित यह फल या
९९ त्री को होते है । अब ओर वि
शेष करके सम्पूर्ण चक्रों का ख्या

99

इतिदृशोगगाङ्गचक्रम्
पुन विशेषतो वक्ष्ये चक्रे
चक्राधिनायके कालान
ल मिदं देवि त्रिदशैरपि दु
र्लभं । कालसंख्या यथा
प्रोक्ता ग्रन्थसंख्या प्रमाण
तः आयुः संख्या यन्त्रमि
कथयामि यथास्फुटम्

मी चक्र लिखते है इसका नाम
कालानल है शिवजी पार्वती
को कहते है हे देवि यह चक्र दे

बताकोबीडलेमैंहै । इसविध
कालसंख्यो ग्रंथमार्गकीसंख्यो
ग्रामसंख्यो धनसंख्यो स्पष्टता
से कहते हैं ॥

१०० फलितनक्षत्रके प्रथम नक्षत्रमें
वि. शुभ यात्रा होती है इससे फलि
९० त नक्षत्रोंमे शुभ यात्रा घोडेके
केश्वर धनेहै । महीनेमें का.

100

फलिते प्रथमे धिष्ण्ये शुभे
न गमने भवेत् द्वितीयेपि
तथा धिष्ण्ये वाजिनः केश
वर्धने । मासेकेन भवेत्का
र्यं स्थल मागच्छते नृपः ।
तृतीयेच चतुर्थेवा फलि
तागस्य चंद्रमा ।

ऐसिद्ध करीके स्थलमें राजा
घरचली आवताहै तीसरे चौ
थे फलितनक्षत्रोंमे । जब
चंद्रमा होवे तो हाथी घोडे

और धन पंद्रादिनके अंदर
प्राप्त होंदेहैन इकमहीनेमें
अंदर स्त्रीसे आगमन होंदा
है शङ्ककके आश्रानयो नक्ष

गज वाजि धन प्राप्ति पं
चद्धे दिवसत्रये हणपते
चेक मासेन स्त्रीयेन ग
मने भवेत इतिप्रश्नमांग
शङ्कुणा कथिते पिल रस
नाख्ये प्रकीर्तिते तस्या
ने मंगत संज्ञा जनये क्ष
त्रुजे भये ।

जोहै उसदानामरसनाहै उ
समेंमंगत चंद्रमाहोवे तोया
त्राकरणेथा शत्रुयासे ज
यहोताहै ।

रण पृच्छित प्रथम नक्षत्रमें मंदे॰
वि॰ व जयवृद्धि होतीहै पंचदिना
९॰ दिच दशयोजनजाइके सि
द्धि होतीहै । दूसरे पृच्छित

101

इति द्वितीययोगफलम् ।

पृच्छिते प्रथमे थिसे ज
यवृद्धिर्भवेत्सदा दृश्यते ।
पंचरात्रेण योजने दश
गच्छति । द्वितीये पृच्छिते
ऋक्षे यायिनः कोशवृद्धि
र्नं ततः संधिर्भविष्यति र
विणा चंद्रमा यथा ।

नक्षत्रमें खजाना वृद्धिको
प्राप्त होतीहै संधी होतेहै
जैसा सूर्य चंद्रमाका योग
होताहै ॥

तृतीय पुष्यित नक्षत्रमें शत्रु
ओंका भंगहोताहै एकमही
नेमें चंद्रमा सूर्य होवे तो या
त्रामें एह फल होताहै । शुफ

तृतीये पुष्यिते थिले शत्रु
भंगो वागनने लभाते मा।
स मेकेन चंद्र सूर्यो यदा
भवेत् इति तृतीयाग: शुफ
ले प्रथमे थिले भौमे चंद्रे
तथैवच सर्वाणि भवति रा
ग: किंचित् रोग जयो भवेत्

तमें शुक प्रथम नक्षत्रमें थि
त होवे तो देहमें घातहोताहै
रोगहोताहै आगे थोडी जय
होते है । योइनको रहस्य।

रण निरेखनाहै होरतोवक्रतश्री
वि. प्रामहोतेहै होरहूमेरेश्रफ।
१.२ लनक्षत्रमे यद चेद्रमाहोवे।
तो यात्राकरणेवाले योधाय

102

गुरुणा हृश्यते वात लभ।
ते विपुलो श्रियं द्वितीये
चाफले थिम चेद्र तत्रैव
चागते। तस्याने याथि
नो योधाः सर्वे यांति यमा
लयं यात्रा क्लेश मवाप्नो
ति पुत्रनाशः ऊलक्षयं।

मकेचरकों प्रामहोतीहै।
श्रफलतृतीय नक्षत्रमे या
त्राकरणेथ्यो क्लेशप्रामहो
ताहै पुत्रनाश होरऊलका

त्तयहोताहै चतुर्थनक्षत्रमें
यदि चंद्रमाहोवे तो एकवर्ष
पर्यंत पीडाहोतेहै । कृत्ति
मेत्तक प्रथमनक्षत्रमें योगा।

पीडाते वर्ष मेकेन च्तु।
योगे यदा शशी इतिच।
तद्योगफले कृत्ति प्रथ
मे लिखे यात्रायाच न्नंप
वेदन उदासैव मेव ज्ञा
ज्ञ वर्षाद्विप्र पीडाते

जो यात्राकरे उसकोकहना
चाहिये तेरा राज्य में सठवर्ष
तक पीडाहोगी होर राज्य
उजाडहोजायगा । इसमे
कृत्तिनक्षत्रमें मानकीहा

रण
वि॰
१॰३

निहोतीहै क्लेश धननाशहोते
है जब चंद्रमा क्रूरग्रहों करके
आक्रांतहोवे। तीसरे कटिन
नक्षत्रविखे चंद्रमाहोवे तोवे

द्वितीये कठिन स्थाने मा
नभंगश्च जायते अर्थहा
नि भवेत क्लेशः क्रूरेण।
क्रांत चंद्रमा। तृतीये क
ठिनअक्ष चंद्रेतरयतोग
ते वंधनं दृष्णनेतत्र किंचि
रक्षे जयो भवेत

धनहोताहै होर आगे कक्ष
जयहोताहै। योकटिनमें
तकचतुर्थनक्षत्रमेंचंद्रमा
केवलकरके आक्रांतहोवे।

103

ता वारेमे वर्षमे पीडाहोंदीहै
केतकरके श्रालिंगननक्षत्र,
मे चंद्रमाहोवे तो पद्येक य

पीडये द्वादशे वर्षे केतु
ना क्रांत चंद्रमा पंचमो
गे फले देवि इसके वश्च
यामले श्रतिपंचमोगफ
ले केतुना लिगिते पिल
नक्षेत्रे चंद्रमा भवेत् का
म मर्थंव भोगंच लभते
वर वर्णिनि ।

न होर भोग प्राप्त होताहै शि
वजी पार्वती से कहतेहैं ।
शाङ्के देहसेहुक नक्षत्रोमे
स्थित यात्रहहै सो चंद्रमाथो

रण दक्षिणगमन करणेवालेहो
वि तेहैं वाकीदै ग्रहवाहरको
९४ उत्तरको गमनकरणेवाले

105

गजदेहा श्रिता याति चे-
द्दा दक्षिणेता ग्रहाः व-
हि रुत्तरगाः शेषा मध्ये-
न भव पुत्रयोः । याव
उत्तर वारुण्या ग्रहाणां ।
वरते शशी पापरूपे ।
सदाघोरे ग्रहयुद्धे भवि
ष्यति । खेलाने

होतेहैं भवहोरपुत्रकेमध्य
विषे जवतकचंद्रमा ग्रहोंसे
उत्तरगमनकरे होरशोहग्र
ह पापी होवे तोयुद्धहोताहै

प्रन्छेमेअंगारा फलहै ।
क्रूसप्रवारा चंद्रमा रात्रसं
ग नक्षत्रोंमें स्थितहोवे तो ।
धर्मकानाश होव समावीरा

प्रप्रक्त गते चंद्र रात्र ।
संगे व्यवस्थिते धर्मना
शयते शीघ्रं राष्ट्र भंगो
भविष्यति । तत्रस्थाने
शनि यौतो मिलितोग
व चंद्रमा मारये त्राम
मेदेहो यात्रायोन निव
र्तते
ज्यरा भंगहोताहै । उसस्था
नविषे शनिहोवे मिलितो
गनक्षत्रोंमे चंद्रमा यद्हो
वे तोयात्रीको मारताहै ३

२ग सेमें संदेहनही यात्राविषे ।
वि· फिरीकेनही आउंदा हेदेवि
१·५ यानयोग जिसदिनहोवे ।
गिलितागोमें क्रूरसोम्यग्र ।

105

यानयोगे भवे हविलिं
गिते क्रूर सौम्ययोः या
त्रायां न निवर्तेत सत्य
मेत त्ववेश्वरि । राजसे
मध्यमे विप्रे नचैव हि
मत भवेत् याविनश्च
भवेद्रंगो जयेत स्याथि
नो ध्रुवे ।

होंका योगहोवे तो यात्रा
करनेसे फिरकेनही आवता
हे त्वरेश्वरी पहसमझणा
राजस मध्यमा नक्षत्रमे वेदमा

होवे नोयाधीदाभंग होव।
प्याधीदा जयह्वेदाहै। नि
श्चय करकेवडा विहूल होव
भयानक घोर संकट होवेगा

विकृते रोरवे घोरे संकटे
वा भविष्यति गच्छते यो
जनाशीतिं सेरेद्धा स्सम
वाश्रयात्। तृतीये राज
सधिस्मे आधि क्लेशं विनि
र्दिशेत् भृत्यवाजिगजाव
नेः सग्रामो दारुणो भवेत्

होर असी ८० योजन तकसं
देहसे प्राप्तहूंदाहै। तीसरे रा
जसनक्षत्रमें आधि होर क्ले
शहोंदाहै होर नोकर सिपा

रा वि. ९१ ही हाथीयोका बडाप्रधान
कष्ठहोताहै एहसममनेग
दाफलहै । ग्रहमत्रेगताम
मनत्वमें ग्रहपीडाहोतीहै

इतिसममोगाम ग्रहयोगे
तामसे धिसे ग्रहपीडा स
विष्यति विनाशो हृश्यते
श्रीचे यात्रायां विनिवर्तते
द्वितीये तामसे धिसे गिलि
ताशेच वेदमा पीड्यते जे
नवः सर्वे यात्रायां मसमा
दिशेत् ।

होर सत्तावीनाशकोप्राप्त
होताहै यात्रासे उत्तीकेसी
ग्रष्ठाउंदाहै । होरहसरेना

106

ममनत्तचेमे गिलितश्रेश।
विष्ठ चेड्ग्माहोवे नायागाक
रणेमे मेसूर्गजीवोंको पीडा
होवमरस्महोत्ताहै वडी चो।

चोरा गाधि महाडुःखे
सेवेने काननेतथा भू
मि माकेटने देविग्योज
नानोशतत्रयं जेतव।
श्वेव पुछोतेसेव्यका स्त्रि
यते रुजा।

रगाधी होरमहाडुःखहोता
है यात्राकरणेवाला राजा।
वनको सेवनकरताहै।
शिवजी पार्वतीको कहते
है देवि त्रयमे योजनतक।

रल भूमि आक्रंदन करती है क्या
वि॰ दुःख को प्राप्त होती है और जो
१० बड़ होते हैं सेनारोगों में म
रती है। हे देवि सेनाखंड में

विनाखंडेन देवेशि सर्वे
यांति यमालये अथवा
जायते युद्धं गजा अश्व नर
मर्दने। संग्रहय त्वयो
देवि कथ्यांसो नकारः
येन तृतीये नामसे थिले
क्रूरा लंबैव सुस्थिता।

विनाही सब प्राणी यमराजा के
घर को प्राप्त होती है अथवा
बड़ा युद्ध होता है जिस विष
हाथी घोड़े मनुष्य नाश होवें।

107

देहेन । होनेसेनाशलय
होताहै दैहवि पसीकठन ।
यात्राको शत्रुनकरे । तीस
रे तामस नक्षत्रमे क्रूरग्रह ।
होवे वेइ मावी उसमेहोवे तो

वेदे पराजिते युद्धे यात्रा
भंगो भवेत्सदा कष्टयु
क्ते नथा क्लेशे सनवेधु
समंततः

हे अपराजिते देवि युद्धविषे
यात्राकरनेमों भंगहोताहै
कष्टदेनेवाला उद्धकेताहै ।
सब वेधयोंका सर्वत्र क्लेश
देताहै । अथवा होरग्रहो
करकेवी ग्रहफलकीजान

रण॰ पहोंदाहै इसविच संशयनही
वि होर जितनाचिर राजस लाभ
१॰८ स नक्षत्रोंमे चेद्रमा रहताहै ।
उसविच यात्राकरे तो बारांमें
वर्षामें पीडाहोंदीहै इसविच

श्लोक वीपि वदेदेवे पीडने
नात्र संशयः राजसे लाभ
से चांगे याव चरति चंद्र ।
मा पीडाच द्वादशो वर्षे
नात्रकार्या विचारणा
इत्यशुभोगमन ॥

विचारनहीकरणा । यह अ
शुभकेगमदाफलहै । जवउ
नभोगकेचारनक्षत्रोंमें चंद्र
माहोवे सोभयजा नोरण ।

108

पहूंचे राजा केकरे उडीवा
न पुरुष । होर इसी उत्तमो
ग नगरोंमें वगीची घर मंदर
मेहल बनावे जिसदेशमें तो

उत्तमोत्तम चतुर्वर्ण संभव
भुजे तोरणे पट्टबंधे नरेश्व
रेण यदा चेद् स्थिरे हृदयः ।
तस्माचेदृशा देवि ग्राम
मे मठमंदिरे प्रासादे कुरु
ते चेद्दे ते देशे भजते नृपः
प्रसन्ना भूत्वा राजा कोश
श्चिरे नंदति सुस्थिराः ।

राजा उसदेशको सेवनाहै ।
घोड़े हाथी नोकर खजाने आ
नंदको प्राप्त होंदे हेन होर ।
स्थिर रेहदे हैं । ॥

रत्न उत्तमफलहोताहै पंचसोवर्ष
वि. तक उनकेवंशविषे बहुतपुत्र
१.५ होतेहैन इसयोगकाफलहै
पहलनवमयोगहै येशकाफलहै

109

उत्तमेच फलेपश्ये हर्षेप
चशाते भुवि जायेते बहु।
वः पुत्रा स्त्रयोग फल मी
हशे इतिनवमोगमः नि
कृष्टे प्रथमे धिसे हश्यते
व जलक्षयः पुत्रनाशो
भवेद्राज्ञो वेद्रे नत्र समा
गते।

प्रथमनक्षत्रमें निकृष्टमाठ
फलहोताहै जलक्षयहोता
है पुत्रनाशहोताहै राजाका
जब चंद्रमा इसयोगमेहोवे

हमारे प्रथमनक्षत्रमें उत्पन्न ।
फोडे लूत भगंधर रोग होते है
जब चंद्रमा राहु करके ग्रा ।
क्रांत स्थित होवे हे देवि अन्य

द्वितीये वायमे पिस्ते उत्पन्न
लूता भगंदरं करोति सं ।
स्थित लग्न राहुणा क्रांत
चंद्रमा । अन्यागे चंद्रमा
देवि तृतीयर्क्षे अवस्थितः
सदा न संकटे भद्रे कष्ट ।
यात्रा भविष्यति ।

अंगको तीसरेनक्षत्रमे चंद्र
मा स्थित होवे । हे भद्रे कल्या
वाली ऐसी यात्रामे संदेवस
कट होता है कष्टयात्रा होती है।

राण· है पापहोंताहै कष्टभोगताहै
वि· शुद्धकालमें भोगहोताहै पंजी
११· वर्षतक पहुंचताहै भेदों कर·
के भिन्नराहुदा फलहै। शिव

110

पापेन वर्तते भद्रे महाक
ष्टेन भुञ्जते शुद्धकाले भवे
द्भोगो वर्षाणि पंचविंशति
इतिदशांतरगत अन्तर्दशावि
शतिभेदभिन्नोराहुः दशांग
फलमध्येन भेदाभिन्नाष्ट·
विंशतिः सहस्राण्यन्तरे
देवि शतैर्वै द्वादशाधिके

जी पार्वतीसे कहतेहैं दशां·
गफलके मध्यमे ये अठाइ
भेदकहेहै उनकेबीच अंत

लग्न इकसोंबाराभेदवहनेहै
जिसनक्षत्रविच राहुहोवे ३
से अंशविच चंद्रमाबीहोवे तो
शत्रुवोंदा भयहोताहै होरय

यत्राधिसे भवे राहु स्तत्रां
गे चंद्रमा यदि शत्रुभि
र्भय उत्पक्षे द्वितीयांशे
यदा भवेत् । चिंतितार्थ
लाभस्त्रीणां तृतीयांशे ।
यदा शशी हेम रत्न मही
भृत्य गज वाजि महीपति:

इसथों दूसरे अंशविच हो
वे तो । मनके चिंतित अर्थ
होर स्त्रीका लाभहोताहै यो
चंद्रमा तीसरे अंशविचहोवे

रण ओर हेम रत्न पृथिवी नौकर
वि हाथी घोडे मिलतेहैं राजाको
॥ चतुर्थांशमे चंद्रमाहोवे पहू
राहुदि जिह्वाटे श्रेगाहाफलहै

चतुर्थांशे यदाचंद्रे राहु
जिह्वाग मीहशाम्र राहुणा
दृष्टमित्र ग्रेषे चंद्रमा यदि।
जायते। कामवृद्धि भंवे
त्यक्ता सर्वे भवति निश्चि
ते राहति क्रमिते रेषो भो
गेष्व विमलो भवेत् ।

राहुकर्के दृष्टमित्र ग्रेशविषे य
दा चंद्रमाहोवे तो। कामकी
वृद्धि ऋद्धिकीवृद्धि होरसु:
खहोताहै राहुकरकेभक्त।

यो ग्रंशाहै उससैंवडाभोगहो
ताहै संपूर्णकार्यहस्पहोंटे।
हैन यद चेद्दमाराङ्कुदे जिह्वा
सेगनहोवे प्रहमप्रथमग्रंश

सर्वकार्याणि सिद्धंति।
राङ्कजिह्वो न चेद्दमा ग्र
तिप्रथमोगोंशास पृश्चिने
प्रथमांशेच लाभस्तु दश
योजने मानलाभे द्विती
येच तृतीयेच तृभि दिनैः

पृश्चिनकेप्रथम ग्रंशविषेट
शयोजनमें लाभहोंटाहै दू
सरेमें मानभंग तीसरेमें ती
नदिनमें लाभहोंटाहै।
चोथेमें पंचदिनमें लाभहो

रण
वि॰
११२

नाहै इसमैं संशयनही इसरे नक्षत्रे प्रथमचरण चोडा ला भहोताहै । इसरेमें मनका संताप तीसरेमें सम्पूर्णसिद्धि

चतुर्थे पंचरात्रेण भवेल्ला भो न संशयः द्वितीये प्र॰ थमांशेच चाल्पिलाभो भ विष्यति । द्वितीयेच मन स्तापं तृतीये सर्वसिद्धिदं चतुर्थे मध्यमो लाभः सं शितो जयकांक्षिभिः ।

होतीहै चौथेमें मध्यमलाभ होताहै इसमें संशयनही जयदेइच्छा वालेको विचा रणचाहिये । ।

तृतीयके प्रथम श्रेशविषे श-
त्रुका भयहोताहै दूसरेमें श-
त्रुको कंपहोताहै तीसरेमें उ-
त्तम सिद्धिहोतीहै चौथेमें दः

तृतीये प्रथमांशेच भवेद्
शत्रुभि भयं द्वितीये रिपु
कंपंच तृतीये सिद्धि रुत्त
मा: भवति दशरात्रेण च
तुर्थे मास मध्यतः इति
द्वितीयांगंशम ।

श्रदिनमें प्रथमामहीने श्रेष्ट व
सिद्धिहोंदीहै पहदूसरे श्रेग
टे श्रेशदाफलहै । फलित
के प्रथम श्रेशविच देश ला-
भ होंदाहै दूसरेमें ग्राम ला

१ग. भ तीसरेका मध्यम फलहोता
वि है। चौथे फलित भेगमें दे
११३ ङमाहोवे तो रोग होताहै।

फलिते प्रथमांशेच देश
लाभो भविष्यति द्वितीये
ग्रामलाभंच तृतीये मध्य
मे फले चतुर्थे च भवेद्रो
गः फलितांशेच चेदमाः
द्वितीये प्रथमांशेच गज
लाभं विनिर्दिशेत्।

हसरे नक्षत्र दे प्रथमपाद
विषे गजका लाभ।
होंदाहै।

दूसरेके प्रथमपादमें थोडा
लाभहोताहै तीसरेमें थैल
प्राटि लाभहोताहै चौथेमेंभ
यकर्के लाभहोताहै । तीस

द्वितीये चाल्पलाभंच तृ
तीये गो वृषादिभिः चतु
र्थे समये लाभे चेद्भः कला
न संशयः । तृतीये प्रथमे
पादे वस्त्रलाभं विनिर्दिशे
त् द्वितीयांशे धनप्राप्ति
तृतीयांशे महद्भये ।

रेके प्रथमपादमें धनलाभहो
ताहै दूसरे अंशाविषे धनला
भहोताहै तीसरेमें बडा भय
उत्पन्न होताहै । ।

रण चौथेमें अल्पलाभ महीनेमें
वि होताहै । दूसरे होर तीसरे
११४ में उत्तम सिद्धि होतीहै चौथे
में महीनेके अंदर पुत्र वृद्धि

114

चतुर्थे अल्पलाभंच वदे
न्नक्षलिने स्थिते चतुर्थे
प्रथमांशेच लाभे विश
तिभिर्दिनैः । द्वितीयेच
भवेत्सिद्धि स्तृतीये सि
द्धि रुत्तमाः लभते जात
मध्येच चतुर्थे पुत्र वृद्धि
रे इतितृतीयमंशोगमन

होतीहै पर तीसरे अंशका
अंशका फलहै ।

अफल प्रथम अंशविषे शास्त्र
ना होतीहै दूसरे मैं महारोग
तीसरेमैंबी शस्त्रपीडा फलहै।
चतुर्थांश विषे थोडा जयहोता

अफले प्रथमांशेच शास्त्र
बाधा प्रजायते द्वितीयेच
महारोगे शस्त्रबाधा तृ
तीयके । चतुर्थांशे ज
ये किंचि त्तत्रे प्रथमेश
त्री द्वितीये प्रथमांशेच।
यात्रा युद्ध प्रदायिकी ।

है जदचंद्रमा अफलके प्रथ
मतत्त्रमें होवे दूसरेके प्रथ
मअंशविच यात्राकरणेथों
युद्धहोंदाहै । दूसरेमें भय।

१ग. महित रोगहोताहै तीसरेमें
वि कुलक्षयहोताहै यदचतुर्थ
११५ भ्रेशाविषे चंद्रमाहोवे तोधन
ले आयुका नाशहोताहै । तीं

द्वितीये समये रोग स्तृती
येच कुलक्षयः चतुर्थेशे
यदाचंद्रो धनायुष्य विना
शनः तृतीये प्रथमांशोच
लभतेच कुलक्षयः महा
भये द्वितीयेच तृतीयेच
निवर्तते । पीडनेच त्रिभि
र्वर्षै यदाचंद्र स्तुतर्थके
इतिचतुर्थांशांशफल
तीसरेके प्रथम भ्रेशाविषे कुल
नाशहोताहै दूसरेमेंवडाभ
यहोताहै । तीसरेमेंचौथा

ज्ञाफिरीआमदाहै मयवर्षपी
ड़ाहोंदीहै जोचेइमा चतुर्थ
अंशमेंहोवे । कृत्तिमेंनक
प्रथम अंशविषे वक्रहोहै से

कृत्तिके प्रथमांशे च वक्रे
चैव विनाशयेत् द्वितीये
उद्वे संस्थाने तृतीये सम्म
मादिशेत् । चतुर्थांशे भ
वे युद्धं भंगस्य सम्भवेत् भ
वेत् द्वितीये प्रथमे स्थाने
वध बंधौ भविष्यतः ॥

त्रिआदिकउनका विनाशक
रताहै दूसरेमेंउद्वास्थान प्रा
प्तहोंदाहै तीसरेमे सम्म ।
चौथेविषे युद्धहोंदाहै होर

रण ग्रहोंके साथ भेगा होता है इससे
वि॰ नक्षत्रके प्रथमचरणमें वेध हो
११६ रवेधनहोगा । इसरेमें फिरी
केतेहीश्रासदा लीसरेमें शत्रु॰

द्वितीयेन निवर्तते तृती॰
ये शत्रुसंकटे चतुर्थे ग्रह
लावेधो यात्रा कुर्वंति ये
नराः । तृतीये प्रथमांश्च
च तद्दिने युद्धवर्जिते द्वि॰
तीये चार्थनाशश्च तृती
येच प्रजाक्षयः ।

पीड़ा चौथेमें ग्रहलावेध न
होताहे यो यात्राकरे । ती
सरे नक्षत्रहे प्रथमपादमें वे
ध्माहोवे तो श्रोहदिनयुद्ध॰

116

केवालिवर्जितहै हूसरेमैश्रष्ठ
नाश तीसरेमैप्रजानयहोता
है। चौथाघावषितकहोती
है यदचतर्थेशघिषे चंद्रमा

पीडाहादश वर्षाणि वा
र्थाशे यदाशशी इतिपंच
मांशेगम। छठेगेत व
होतेहैं यत्रकेत्रअवस्थि
तः तत्रस्थाने यदाचंद्रः
संस्थितो प्रथमे पदे।

होवे पहपंचमांशश्रेगदाफ
लहै। छठेगमैत्तकनत्तो
मैं जिसकेन्द्रस्थितहोवे उसी
स्थानमैं चंद्रमावी प्रथमपा
दमैं स्थितहोवे तो।।

रत्न स्त्रीलाभ रत्नलाभ होंदाहै इस
वि रे पाटमें हाथिआदिआहनों क
११७ रके सहित लाभहोंदाहै तीस
रेमें भूमिलाभ चौथेमें मरण।

स्त्रीलाभे रत्नलाभेच द्वि
तीयेन गजादिभिः तृती
ये भूमिलाभश्च चतुर्थे म
वेसिद्धयः इतिवष्ठांगाशे
स्तपक्तास्थिते चेद्वे राजाव
प्रथमे पदे तस्य धर्मो विन
श्येत द्वितीये राष्ट्रभंगकृत

सिद्धिया लाभहोंदियाहै पह
षष्ठांगदाफलहोआ। स्त।
पक्तमें चेइमा प्रथमपदवि
च स्थितहोवे तो राजाकाध

मे नाश होता है दूसरे में राज्य
भंग करता है। तीसरे में लड़ा
ई और उद्वेग होता है चौथे में
सत्फल है दूसरे के प्रथम॰

तृतीये कलहोद्वेगो चतु
र्थे सत्फलमादिशेत् द्विती
ये प्रथमो शोच शत्रुभंगो
भवेत्तदा। द्वितीये पुत्र
नाशश्च तृतीयेन फले
शुभे चतुर्थे वै धन प्राप्ति
श्शशांको ददते सदा।

क्लेशाविच शत्रुभंग होता है।
चतुर्थ चरण में चंद्रमा होवे
तो वे धन प्राप्त होता है और।
तीसरे के प्रथम चरण में स॰

व.ल म्होताहै दूसरेमें कार्यनाश
वि. होताहै तीसरेमे राज्यनाश
११८ चौथेमे कुलक्षयहोताहै हे।
देवि एह सप्तमंत्रेगका फल।

118

तृतीये प्रथमे स्तम्भः द्वि-
तीये कार्य नाशने तृती
ये राष्ट्रभंगश्च चतुर्थेच
कुलक्षयः सप्तमांग फ
ले देवि निरुक्तं ब्रह्मया
मले इतिसप्तमांगांशस्
तामसे प्रथमांशेच सर्वेषां
जायते रुजः।

ब्रह्मयामलमेलिखाहै इति
सप्तमांग तामसके प्रथमंत्र
शविषे सभनाकोरोगहोता

है दूसरेमें पुत्रकानाश ती
सरेमें शाकिनीकाभय ।
और चौथेमें ब्रह्महत्यालग
तेहैं यो याचाकरे उसकोस
दा औरनामसके दूसरेनत्त

द्वितीये पुत्रनाशश्च तृ
तीये शाकिनीभयं चतु
र्थे ब्रह्महत्याच यात्रायां
क्रियते सदा द्वितीये प्रथ
मे पादे तत्र मा हाशिना
शुते स्तस तत्र द्वितीयेच
तृतीये शाकिनी भयं ।

है प्रथमपादमें चंद्रमा होवे
तो तत्र याग्रो होंवा है दूस
रेपादमें सत्र तीसरेमें शा

रण किनीदाभय चतुर्थेच्छेशविच
वि· वेदमाहोवे तो यात्राकरनेवा
११५ लेको ब्रह्मराक्षस पकडता है
तृतीयनक्षत्रहे प्रथमपादहे

119

चतुर्थांशे शशांकेन दृ
ष्टे ब्रह्मराक्षसा तृतीय
प्रथमांशे च देवतानां प्र
कोपने द्वितीये पितृभि
र्बाधा गुरुद्रोह स्तृतीयके
चतुर्थे सर्वनाशस्य द्वाद
शाद्या त्र्यंशयः इत्यष्ट·
मांगांशम्

वताकाकोपहुवाहे द्विती·
यचरणविच पितरकोपहो
ताहै तीसरेमे गुरुद्रोहहोता

है चतुर्थ विषे सर्वनाश होंदा है वारेमें वृद्धिमें पहले मांश गा महाफल है इसके मांगांश ।
श्रुभेट प्रथम मेंशा विव धन ला

शुभेच प्रथमांशेच धन
लाभो भविष्यति द्वितीये
मित्रलाभश्च तृतीये सम
मादिशेत् । चतुर्थेतु ज
यः प्रोक्तः षष्ठमासभ्यं न्तरे
एव द्वितीये प्रथमांशेच
राज्यलाभः सशैलकः ।

भहोंदाहै दूसरेमें मित्रलाभ
तीसरेमें समहोंदाहै । चौथे
विषे जय होंदाहै छेमहीने
विच दूसरेनक्षत्रके प्रथम

रण पादविषे राज्य लाभ नौकरेके
वि॰ मद्विन होतीहै दूसरेमेधन।
१२॰ लाभ होताहै। चौथेविषे जय
होताहै तीसरेमे सवर्णलाभ

120

द्वितीये धनसिद्धिश्च तृती
येच सवर्णकं चतुर्थे रत्न
लाभश्च चिरकालेन सिद्ध
ति। तृतीये प्रथमांशेच
गजलाभो भविष्यति द्वि॰
तीये चाश्वलाभश्च तृती॰
ये रत्न मादिशेत्।

तीसरे नक्षत्रके प्रथमचरण
मे गज लाभहोगा दूसरेवि
च घोडा मिलताहै तीसरेमे
रत्न होताहै ॥

चतुर्थविषे संपूर्णकार्यकाल
क्षेप अर्थात् बहुतकाललगा
णेसें सिद्धहोतेहै चतुर्थकेप्र
थमचरणविषे यात्राकरणे

चतुर्थे सर्वकार्याणि का
लक्षेपेण सिद्ध्यति चतुर्थे
प्रथमांशेच महालाभं ।
करोतिच द्वितीये देशला
भंच तृतीये मित्रलाभ
कृत् चतुर्थेच महीप्रा
प्ति शीघ्रेच लभते फलं
इतिनवमांशः

सें बडालाभहोताहै दूसरे
चरणमें देशलाभहोताहै ।
तीसरेमें मित्रलाभ चौथेमेंब
डालाभ सताबीहोताहै ५२

१० नवम ऋंगाराफलहै । पाप
वि॰ पत्तमें प्रथम श्रादेशोमें क्या
१२। निहितयो दशाम ऋंगाहै तिस
के प्रथम ऋंशोमें चेद्रमाहोवे

पापक्तध्ये यमादेशा प्रथ
मांषे शशीयदि कष्टक
तो द्वितीयेच विष शास्त्रा
मि घातने । तृतीये त्र
य रोगाःस्या दयमे चंद्रमा
स्थितः तृतीये पुत्रना
शस्य चतेर्थे पुत्रनाशने

तो कष्टरोग करताहै होवह
मेरे चरणमें विषशास्त्रादि॰
कोंसे घातकरताहै । तीस
रेमे त्रयरोगहोताहै प्रथम
में चंद्रमास्थितहोवे तो तीस

121

ऐसे पुत्रनाश करता है और
चतुर्थ में भी पुत्रनाश करता
है । तीसरा जो प्रथम तत्व
है उससे प्रथम चरण में केन्द्र

तृतीये चरणे पितु मृत्यु
माता शष्ठी यदि संध्याने
भवेत् योगो जीवते न
सा तुले मे । द्वितीये च
महाघाते यात्रायान ।
निवर्तते तृतीये च तत
ध्यांशे जायते यदि केन्द्रमा

माहौवे तो पुत्र में रोग होता
है और उसका जीवन थोड़ा
भी होता है । दूसरे चरण में
महाघात होता है यात्राकर

रण
वि॰
१२२

णेसे छट्टीकेनैखाड़ेराहै लनी
यनलनके चतुर्थांशमें यद
वेइमाहोवे तो। सोलावंश
करकेपीड़ाहोतीहै इसविज

122

पीडा षोडशांशमिर्वर्षैर्नीच
काथौ विचारणा जीव
पक्षे शुभैर्युक्तः कला।
क्षणे यदा शशी। तथा
चामल रूपेण संचरेल
वे देहिनो ऽलपक्षे यदा
वेडो ग्रहैर्युक्तो मपापकैः

विचारनेकरणा जीवपक्ष
में शुभग्रहोकरकेयुक्त।
वेइमा क्षणिहोवे तो संक्ष।
णी ग्रहवाले याथा अमर।

होकर विचारदेहेन यह चेइ
मा स्तनपत्रमे पापीग्रहों क
रके युक्त होवे तो पडितों ने
विघ्नत्याकहाहै पुर दश

मेत्तीणश्च त्रुध्येत्यात स
हाविघमयो हिमः इतिर
श्मेगोशादशाविध ।
इतिकालानलचक्रम् अ
थपथ्यचक्रे मघानमधा ।
विजयस्येहत रितीरयेत्रेव
यतः स्वरज्ञा अनो विधास्य
पुण्यमेभयत्नात् चक्रेयथा
ख्यस्फुट मत्यसूत्रैः

म ब्रेगका फल यामलोंमे लि
खा है पुर कालानलचक्र ।
होआ अवपथ्यचक्रकहते है

रण मेघानपथचक्रयोहै सोमथम
वि विजयकाकारणहै पह मेहण
१२३ स्वरशास्त्रदेवेना करतेहै इस·
कारणछों पहिले पथचक्रकह

123

नेत्रे भुइजयाणंवे कुवल
यः सिद्धोपि यत्नोकवा
नु चक्रे विलरन स्तदेव
हि मया मेत्रेपतः कीर्त्य
ते यदीयो हतविक्रम ।
क्षितिभुजो निश्चेत्यनिश्च
पराजु गते शेविन पोरुषा
मपि रणे सिद्धा मतेगानि
च ।

तेहै अल्पस्तुमें करके । भु
इजयाणवनेत्रग्रंथविषे ।
यो चक्र कुवलयापीड सि

इनेवी यो कहाहै श्रोर च।
क्रसंक्षेपथोंमें कहनाहै पि
सचक्रदे वलकरके युक्तहो
प दे राजे शत्रुश्रोंको मारदेहै
शत्रु उनकोंनहीमारने गर्व
करके मेरितकीनेदे हाथि।
योंको जैसे सिंह मारदेहैन
ऐसे शत्रुश्रोंको इस चक्रदे
वलकरके युक्त राजे मारदे
हैन । सिंह का वरावर।
मफास्थिर फटडे उपरेत पंक्ति
युक्तिसे तारा चक्र का नक्ष।
त्रचक्र अश्विनीयोंलेके सर्प
हीगतीकीतरांलिखने इस।
चक्रविच तीननाड़ीसे वंधरो
नाहै इस सर्पाकारचक्रविच

रण यात्राके समयमे वेधकाविचा
वि रकरण । केकवीशोनो इ।
रध मविच कृत्तिकादि नक्षत्रदे।
नेलिखेहै यो पृ इ शास्त्रविषे

129

सिद्ध पदे स्थिरे पे कि
पुक्ता नागचक्रे विन्
मे दक्षिभाघे वेध लग्नि
नाडिकानो त्रयेण सर्वा
कारे यानकाले विवर्जिता

प्रवीणहे तिसकारणयो ।
सद्गुरकेवाक्यसे संप्रदायसे
यो प्रसिद्ध होवे सो लिखना
इसमें अश्विनीयो लिखना
उत्यहे क्यों कि शिवजीने

कह्या है यामलशास्त्र में इस
बात प्रमाण मैं लिखी है ।

केचित्त्वाके वह्निभाग क
वीहै सुक्तं चैतन गुरुशास्त्र
प्रवीणैः तस्मा देत त्सद्गु
रूणं वचोभि विज्ञानं सं
सम्प्रदाय प्रसिद्धम ।

पद्यवंके

२ल इस पाथ्यचक्र विच जिसज
वि० गामें यात्रादानक्षत्र जिसना
१२५ डीविचझोवे उसनाडीदे यो
ग्रहोंकेश्रेकेहे वेइमाहे सठ १

125 चक्रेपाथे यत्रभे यायिके
स्या नन्नाडीस्थः खेचरोके
:प्रसिद्धेः निश्चेमाने मार्गे
जे स्वेविधिस्या द्विसे राभे
योजनाघन नस्यात ।

मंगलदे पंद्रा १५ शुक्रदेदो २
बृहस्पतिदे दो २ बुधदे ये ३
सूर्यदेदो २ शनिदेवारां १२
यह खेचरोंकेहै इनोंकने
आपनेथों जितने योजन श
ओहे उना योजनोंकोगणना ॥

इसका एलफलविच श्रश्चिनी॰ यों लेके याशाटेनक्षत्रतक यो सख्याहोवे उसको भागदे एग यो लब्धिमिले उतने योज न जाइके शुभाशुभफलकर

सोमेषविहे पापलेटेरनि हे लालावीर्यं यानका ले विहरयेः सुयोदीना यस्फले श्रोमगाला निः सदिरये नक्षत्रेववाये

एग। योनाडीवक्रकोपाप॰ ग्रहदावेधहोवे तो अरिष्टफ लक्या माडाफलहोताहै हो रजोशुभग्रहदावेटहोवे तो शुभफलहोताहै पहवानया

रण
वि
१२६

आकालमें विद्वानोंनेजानना
यो सूर्यादिकोंग्रहोंकाफल
लिखाहै सो सब लोगोंकोसंसारमें
मैं कहताहूं ताकियेशसार्यादिको
काफल यहहै। सूर्यदावेध

आसा यो चि त्संगमः पंच
नेव याज्ञे योगो धर्मिके
संगमेष्व बुद्धि शार्मिवें
धनेभेगभीतिः सूर्यादी
नां ग्राह्य राशी फलानि।

इति पंचके

होवे तो त्रासहोताहै चंद्रमा
दाहोवे तो चोषित स्त्रीका
संगमहोताहै मंगलदावे
धहोवे तो पंचतासूक्ष्महोता

126

है बुध होवे तो विद्वानोंके सा
थ संग्राम बृहस्पतिका वेध
होवे तो धर्मिकोंके साथ संग्रा
म होती है शुक्रके वेदमें उ
ष्टमार्गि होती है शनिका वेद
होवे वेधनफल है राहुका भे
गफल है केतुका भी निफल
श्रेष्ठ आचार्योंने कहा है ।
इति पथ्यचक्रे अथ पाथिराहु
चक्र कहते है यात्राविषे वि
ना आयासके मनावी फलदे
नेवाला जयकीइच्छावाला
यो यात्राकरणेवाला राजा
है उसको संग्राम युद्ध विषे ।
जयकरणेवाला श्रेष्ठगणों ।
करकेयुक्त पथ्यचक्रयामल ।

रण विचकह्रोहे धर्म अर्थ आदि
वि कोंमें अभिजित सहित नच्च
१२७ त्र लिखने पढ पंच्या राङ्कच
क्र सूर्य चेह्रमादे गती थ्या च

127

धाआया मनया समाप्त
फलदे याता निगीधी ल
थ्या सेयामे जयकारि मङ्गु
णश्रुते हृष्ट यन्ता यामले
धर्मार्थारिष सस्थिते रभि
ज्ञिना साकेताधिसेरिदे।
पंच्यारङ्कु रिलीन सामग
निनो वाच्यो स्वचक्रे त्रुधेः

क्रमेफलकहरण। पंजरेखा
खड़ी करणी नो त्रेडीकरणी
वस्रीकोष्टको करके चक्रक

हाऽहे धर्म अर्थ काम मोक्ष प
ह चार उपरले चार कोष्ठकों मे
लिखेहे ॥

कुड्मा पंचरेखोस्स लि
खेरेखा लतोनव हाविंश
त्कोष्ठके स्वकं पश्चिमाद्,
प्रकीर्तिते धर्मार्थ काम
मोक्षाः स्व हृद्यकोष्ठ चत
ष्टये । अथ राहुपश्चिमकं

ग्र सर्पकी गती के आकार अश्वि
वि नी आदिक नक्षत्र वक्र विषे ।
१२८ न्यास करके धर्म से नक्षत्र
त्रों में सूर्य वेद मासोन लासम

विम्बे सर्पवलना दक्षि
णादीनि भान्यत्र धर्ममा
र्गे गाते सूर्ये वेदे तथैव ।
संस्थिते । समयुद्ध भवे
त्तत्र किंचित् पापी जयी
भवेत् धर्मे सर्योगा ।
शंकरो यायिनो विजयप्रदो

युद्ध होता है । परंतु किंचि
त यायी राजय होता है होर
धर्मसे नक्षत्रोंमें सूर्य हो
वे अथ से नक्षत्रोंमें होवे

128

वेदमा नटवीयाथीराजय
होताहै होरधर्मविवस्त्रधे।
होवे कामविचवेदमाहोवे
ता वेधुवोकेमाथ विरोधहो

धर्मः कः कामगस्त्रेहोवि
रोधो वोधवेः सह धर्मः
को मोक्षगस्त्रेहो शुभ।
योगो न लाभकृत ।
अर्थको धर्मगत्वरः शुभ
युक्तश्च लाभकृत अर्थ
ह्या वेदस्त्रधेश्च याधिनो
भेगहाधिको ।

ताहै धर्मविच स्त्रधेहोवे
मोक्षविच वेदमाहोवे ता।
शुभग्रहके योगथोलाभहो

२ल· दाहै। अर्थमे सूर्यहोवे यमे
वि· विचचंद्रमाहोवे तो शुभग्रह
१२५ कनेशुक्रहोवे तो लाभकर
दाहै अर्थात शुभशुक्रनही

अर्थः कैः कामग स्त्रेद्रो।
निंघो यात्रादिकर्मस्त्र अ
र्थकी कामग स्त्रेद्रो शुभ
शुक भूमिलाभकृत का
मकोथंगन स्त्रेद्रो बधजी
वगतो रवि श्रीलाभदो
समाख्यातो भूतनाथ स
मन्वितो।

होवे तो लाभनेकरदा अर्थ
विषे सूर्यचंद्रमा स्थिरहोवन
तो यात्रीदा भंगकरदेहेन

अर्थमे सूर्यहोवे कामविच-
चंद्रमाहोवे तो यात्रादिका-
र्यांकोनिंदितेहै अर्थविच सू
र्यहोवे मोक्षविच चंद्रमाहो-
वे शुभग्रहकनेयुक्ततो श्रमि
लाभकरदाहै । कामसंज्ञक
नक्षत्रोंमें सूर्यहोवे अर्थवि-
च चंद्रमाहोवे उप जीवकर
केयुक्तहोवे लक्ष्मी प्राप्तिहो
तीहै अथवा शुक्रकनेयुक्त-
होन सूर्य चंद्रमा काममेंग
तहोन तो शत्रुसें दुःखप्राप्त
होंदाहै । काममें सूर्य मोक्ष
में चंद्रमा शुभयुक्तहोवे तो-
धनलाभकरदाहै मोक्षविच
सूर्यहोवे धर्मविच चंद्रमा ।

२ए होवे तो बडालाभहोताहै ।
वि मार्गमे स्पर्शहोवे अर्थविच वे
१६: दमाहोवे तो यात्रा निष्फल
नैहोंदी मार्गविषे स्पर्श होव

130.

वेद्याको कामगो यत्र ।
रिपुयोगादि दुःखदो ।
कामेको मार्गगः छेदो
शुभदको ऽर्थलाभकृत
मार्गेऽर्के छेदमा धर्मो
महालाभः शुभान्वितः

कामविषे छेदमाहोवे तो या
त्रा नहीकरणी दुःखहोता
है । यद स्पर्श छेदमा दोनो
मार्गविचहोन तो यात्राक

रणेष्वो घोर विघ्नहोताहि या
त्रादिकार्येमें पट्टचक्र सदै
मोहे स्युर्योश्यंग श्रुद्रसदा
यात्रा न निष्फला मोहे॰
के॰ कामग श्रुद्रा यात्रा।
दुःखप्रदा भवेत् वेद्रा।
कौ मोत्त मार्गश्चो घोर
विघ्न प्रदायको यात्रा।
दि सर्व कालेषु चक्रमे
तहिलोकयेत्। इति
पथिराहुचक्रम्।

रविवार करणा इतिराहु
पथ्यादि चक्रम्

अथकूर्मचक्रम्॥ ॥

रण० कुंभादे आकार चक्र लिखणा
वि निर्थरेखा करके मध्यमे भेदि
१३१ न करना उसमें अश्विन्यादि
नक्षत्र एकएक से अंतर से

131

कुंभाकारे लिखेच्चक्रे ।
तिर्यग्रेखा समेदितं नक्ष
चोर्ध्व मध्यमात्त मेकेकां
तरेण क्रमात । भात्र ।
मादि न्यसेन्नक्षत्रविरुः ए
णं इति क्रमात पर्वेरा।
शिक्रमोनेखा विरुः
हणं इति हिया

लिखने । अथवा हर्ष राशी
यों राशी लिखने यो जिस वि
वाहर्ष होवे रेखा के विकसे

तक होरहे० पूर्णसंज्ञा जान
नी रिक्तभागोंमें यात्राकरे तो
शून्यफलहोंदाहै पूर्णभाग
मे यात्राशुभहोंदाहै पद्य

रिक्ते रिक्ता भवे द्यात्रा
पूर्णे यात्रा शुभावहा
इति यात्रि फले सर्वे
ॐभवक्र हयाश्रितम्

यीदा यात्राकरणेवालेदा
फल ॐभवक्रमें देखना ।

रण जिसमहीने मे यात्रा करणे
ति· होवे उसको वेदशो मिलना
१३४ जो संख्या होवे उसको ग्रहण
णा करणा उसविच तिथि ।

132

अथान्यद्विशेषः वेदाद्य
य तिथियुक्ता मासाश्च
तिथि मिश्रिता नवभक्ता
क्रमाज्ज्ञेयाः शेषायात्रा
नवैव तु । निष्फला का
र्य निष्फलं राक्षसी आ
यि मेवच साधारिणी स
कलकार्ये महाशीरस
मादिशेत् ।

शुक्लपक्षों लेके जोइनी
जो अंक होवे उसविच नौ
का भाग देणा जो शेष बचे

सो नौ प्रकारके यात्रा करा
जानणी। इकशेखववे तो
निछ्छत्रा नामवालीयात्रा हो
नीहै ओर कार्यकोसिद्धकर
दीहै दोशेखहोवे तोराक्तसीया
त्राहोंदेहैन उसविच आधिक

तारका सकलेकार्य का
लयुका मरुद्धथ महावुला
भवेद्राज्य पंद्रीहानिकरी
भवेत।

लहोताहे त्रयशेखमेसाधारि
णी सर्वकार्यसिद्धिहोंदीहैन
वारशेखववचे संहारीयात्रा उ
दाफलस्मेहै। पंजशेखवि
वे तारका उसदा फलसंपूर्ण
कार्यसिद्धिकों प्राप्तहोंदेहैन

रण के शोधवचे महाबल राज्यला
वि भकरणेवालीहै सप्तशोधमें
१२३ पेंद्रीनामहानिकरणेवालीहै
अठ शोधमें ऐरावतीनामवा।
लीयात्राहोतीहै उसविचका
ऐरावतीच सफलेलभते
नात्रसंशयः नरपतिका
रात्नसीका माथारिणि।
काष्ठ संहारी तारका।
महाबलेंद्री ऐरावती
कालरात्रीच। इतिश्री।
मन्महाराजाधिराजश्री
रणवीरसिंहाज्ञयावि
सेश्वरेणसंगृहीतेरण
वीरविजययात्राप्रकरणे
पेसिद्धहोतेहै। तो शोधमें।

कालरात्रीह्रोतीहै इसमेंबडा
भयप्राप्तहोताहै अबइनकेना
मक्रममेंकहतेहै नरपतिका १
राजसी २ साधारणिका ३ म
हारी ४ नारका ५ महाबला ६
ऐंद्री ७ ऐरावती ८ कालरात्री
९ इहनौ नामक्रमसे जानने
इतिश्रीमन्महाराजाधिराज
रणवीरसिंहाज्ञया विसेश्व
रेण विरचिते रणवीरविज
यनामक युद्धग्रंथे भाषाटी
कायां युद्धयात्राप्रकरणम्
समाप्तम् ॥

रण अब सर्वतोभद्रचक्र कहते हैं अथा
वि नन्तर इसके उपरान्त सर्वतोभद्रक
१३४ नामक चक्र कहते हैं कैसा है च
क्र त्रिलोकी के प्रकाश करणेवा
ला दीपक है बडा विख्यात है म॰

अथ सर्वतोभद्रचक्रम् अथातः
संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदी
पकं विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः
प्रत्ययकारकम् १ अथ लिख
न प्रकारः ऊर्ध्वगा दश विन्य
स्य तिर्यग्रेखा स्तथा दश ।

तावी प्रत्ययकरणेवाला है १
अब इस चक्र दे लिखने दा प्रका
र कहते हैं दशरेखा खडी लि
खनी दश तिर्यक ॥

लिखनी इशानतोसे इकासी.
कोष्टकका चक्रवनेगा इसवि
चेईशानकोण आदिकोणों
मे सृष्टिमार्गसे सोलाही स्वर.
लिखने चारभ्रमणकरवाणे.

एकाशीति पदे चक्रे जा
यते नात्र संशयः १ अ
कारादिस्वराः कोष्ठ ईशा
दौ विदिशि क्रमात् सृ
ष्टिमार्गेण दातव्या षोड
शैव चतुर्भ्रमम् २ ।

यों लिखे जावेंगे जैसा ईशान
में अ अग्निमें आ नैऋतमे इ वा
युमे ई पुनः भी ईशानमे उ अ
ग्नीमे ऊ इसीक्रमसे लिखणे
२ ॥

135

अथ नक्षत्रों देखने हो प्रका
र लिखने हो कृत्तिकाओं आदि
लेके सत सत नक्षत्र पूर्वादि
दिशा विषे लिखने अभिजित

अथ कृत्तिकादिन्यासमाह
कृत्तिकादीनि धिष्ण्यानि पू
र्वाशादि लिखेत्ततः सप्त
सप्त क्रमादेवा न्यष्टाविं
शति संख्यया ॥ पूर्वाशा
यां सप्तनक्षत्राणि कृत्तिका
दीनि मघादीनि सप्त दक्षि
णे ।

सहित अठाई नक्षत्र लिखने
कृत्तिकाओं आदि लेके सत
क्रमो से आ ३ ति से पूर्व स
पूउरु चि स्वा वि दक्षिणमें ।

रत्न अनु ज्ये मू पूषा उषा अभिजित्
वि॰ श्र पश्चिममें ध श पूभा उभा
१३६ रे अ भ उत्तरविषे लिखने ॥
अथ सर्वतोभद्रचक्रविषे वर्णां

अनुराधादीनि सप्त पश्चि
मे धनिष्ठादीनि चोत्तरे
देयानि ॥ अथावकहडा
दिन्याससमाह अवकहडा
दि प्राच्यां मटपरता द
क्षिणे नयभजखा वा॰
रुण्यां गसदचला सौम्या
ने ॥

कारवर्णादि क्रम अवकहडेन्हां
पूर्वदिशाविषे अवकहड ५
पद वर्ण लिखणे दक्षिणदि
शाविषे मटपरत इनां वर्णां

को स्थापन करणा पश्चिमदिशा
विच न य भ ज खो पहवोलि
खेने होर उत्तर दिशाविच ग म
ट च स ल पह उत्तर लिखणे ।
अब राशि दा रखणे दा क्रम कहे

अथ राशि न्यासमाह त्रया
त्रयो वृषाद्यास्ते पूर्वाद्या
दिक्रमा द्युधेः राशयो द्वा
दशैवैते मेषाद्या स्थिमा
र्गगाः १

तेहणे वृषयों आदिलेके त्रय २
त्रय राशि पूर्वादि दिशा विच
दक्षिणक्रम से लिखणीया १
इस तरां चार दिशामें बारां २
राशी होवेगिया ॥

वृषादि त्रयराशि वृष मिथुन ।
कर्कट पूर्वदिशाविच लिखने
सिंहथो लेके त्रयराशि सिंह ।
कन्या तुल दक्षिणमें लिखणे ।
वृश्चिक धन मकर पश्चिम विच

वृषाद्या स्त्रयो राशयः पूर्वे
सिंहाद्या स्त्रयो राशयो दक्षि
णे इत्येराशिन्यासे अर्थात
प्रथ तिथिन्यासमाह शेषे
षु कोष्ठकेषु नंदादि ति
थि पंचकं

लिखने कुंभ मीन मेष उत्तर
दिशाविषे स्थापन करणे बाकी
के पंच कोष्ठकों विच नंदादि
पंज तिथी नंदा भद्रा जया रि

का एणें क्रमसें लिखलियो अ
व ग्रहों का स्पष्ट करने हा सतवा
र लिखते मंगलथों क्रमकरके
नेटाविच मंगल भड़ाविच बुध
जयाविच बृहस्पति विंकाविच
शुक्र एणोंविच शनि नेटाविच

अथ ग्रहस्मासमाहू वाराणों
समके लेखे ग्रहचक्र खेरय
था चड़का रोहमे विड्डाः ब
णदा हलेथ तो यभेटफटा
शाहिंडेक्षे फजथा टहिवशा
क्रूरमवो वेधः ।

सूर्य भड़ाविचचंद्रमा चड़का
रति रोहभा यो शांहोवे उस
कावेयहोवे तो चड़का ग्रह
रोकोवेधहोताहै हलनक्षत्र
का वेयहोवे तो बणट ग्रह

रण रौंको वेधहोता है तो यथा एवं
वि. भाता है उसको वेध होवे तो ।
१३८ यफल अन्तरोंको वेध होता है
अहिवेध यो उत्तराभाद्रपदा
है उसको वेध होवे नष्ट फल

138

शन्यर्क राहुकेतवाराः क्रू
राः शेषाः शुभग्रहाः क्रूर
युक्तो बुधः क्रूरः क्षीणचन्द्र
लश्चैव च अधुना वेधस्थ ।
स्थानमाह यस्मिन् ऋक्षे ।
स्थितः खेट स्तस्मा द्वेधत्रयं
भवेत् ।

या प्रकारको वेध होता है द
ष्टि वशात्यो ग्रह वेध करता ।
है विशेषफलवाले क्रूर सो
म्य ग्रह कहते है शनिश्चर ।
सूर्य राहु भो ।

स केन्द्र पह क्रूरग्रह है ताके
देग्रह शुभ है होय क्रूरग्रह
करके शुक्रयुत होवे तो उ
सको भी क्रूर जानना होय।
क्षीणचंद्रमा शुक्लपक्षदी।

ग्रहदृष्टिविशेनात्र वाम
मेशुवेदक्षिणे।

अष्टमी थों लेके कृष्णपक्षदी
अष्टमी तक चंद्रमा पूर्णहो
दा आगे क्षीण जानना। अ
थ ग्रहप्रकारका वेध कहते हैं
जिस नक्षत्र विच ग्रह स्थित हो
वे उसथों जयवेद होंदे हैन।
अग्रदी दृष्टिदे वशथों इकवा
मवेध हसदा सज्जवेध, ती

रग॰ सप्त दक्षिणवेध इन्होंदेभेद।
वि आगे विशेष करके कहते है
१३५ वक्रीग्रहहोवे तो दक्षिण
दृष्टिमें देखता है शीघ्रगती
139 ग्रहहोवे तो वामदृष्टिदेख

वक्रे दक्षिणा दृष्टि वा
मदृष्टिश्च शीघ्रगे मध्य
चारे तथा मध्या ज्ञेया।
भौमादि पंचके ॥

ताहै मध्यमगती ग्रहहोवे
तो मध्यमदृष्टि अर्थात स॰
न्मुख दृष्टिदेखता है ग्रह।
वक्री शीघ्रगती
मध्यगती पत्री॰
में देखलेणा ॥

ओरकीसे आचार्यकामत है
कि ग्रह सव्य वाम अपसव्य
दक्षिण चलते फेर वेध करता है नक्षत्र अक्षर स्वर इ।

ग्रहः सव्य पसव्येन च
तथा वेधयेत्पुनः अ-
क्षाक्षर स्वरादिस्तु न
क्षत्रेणात्य सत्तरम्।
इतिकेचित्।

नके आदिको वेधकरता है
होर अन्य अक्षरको सन्मुख
वेधकरता है। अवरणह-
लिकन विशेषकहते हैं।
जब रोहिणी नक्षत्र विखे।

रण पापीग्रहहोवे तो इनको।
वि. हननकरताहै वे वकार।
ध्व. नक्षत्रमे मिथुन तथा डोका
र कन्याराशि वे रकार स्ता

ग्रथाभिनवेष्ठे रणहलि
ग्रेषे विशेषः वे नक्षत्रमे
तथा डोच कन्यावे स्ता।
ति मेवच अश्विनी रोहि
णी संख्या भिजितेपाप
क स्तथा।

ति नक्षत्र अश्विनी होर अ
गे स्थितहो यो अभिजित् है
होर मृगशिरा में पापीग्र
हहोवे तो। ॥

कें ककार क्लीं र कर्क ह
रि सिंह पं पकार विशानक्ष
त्र श्रें श्रकार लें लकार होर
रेवतीनक्षत्र आगे स्थितयो

कें क्लीं रें हरिं पं वविं
शे श्रें लें च रेवती सौम्य
ह्यो हेति पापात्मा वेध्ये
व पुरतः स्थिते । इत्येम
वेत्र ज्ञेयम् ।

वेध्य उत्तराषाढा है इनों म
मनोंको हतकरता है पा
पी ग्रहका वेधहोवे उसका
हननकरना आवेदेहेन ।
होर हं हकार लकार ।
तेमेही ढं ढकार हल ।

२० नक्षत्र वकार, चकार उत्तरा।
वि॰ भाद्रपदा होर आगे स्थितजो
१४। पूर्वाभाद्रा है उसको भी इन
नक्षत्रोंहै आर्द्राविच पापीग्र

है लकारे नथाठेव हले
वचेच उतरे हेति पापस्थि
तो रोहे पूर्वाभाद्रा नथा।
ग्रतः आर्द्रा। कमवली
नथार्थमण के हृष जेकोप
नथा दकारेच नथैवाग्रे है
ति नेन्तिभ ग्रहा पुनर्व
सुः
हहोवेतो २ उकार मकार
अन्तर तेसही अर्थमण उत्तरा
फाल्गुनी नक्षत्र केककार
हषराशि अनेकपात पूर्वा

भाद्रपदा तेसेही दकार तेन
तिमे मूला इनको हनन कर
ताहै पापीग्रह पुनर्वसु नक्षत्र
मे स्थित होवे तो ककार स्वर भा।
गया हस्तो फाल्गुणी हकार वृषमे
मिथुन राशि ओकार स्वर मका

उकार भागया है युगम मो।
कार मीन मेषा तथा वरुण
च तथा ज्येष्ठा निश्चय से है
त्या सङ्ग्रहः ।

र मीन राशि वरुण शत भिषा
ज्येष्ठा नक्षत्र इनोको घातक
रताहै पापीग्रह पुष्य विद्व स्थि
त होवे तो । श्लेषा नक्षत्र वि
द्वग्रह होवे तो मघा नक्षत्र।
होर ढ वर्ण कर्कट राशि ।

रण नेत्रा रिक्ता तिथि कुंभराशि
वि गतवर्ण वासव धनिष्ठा नक्षत्र
१४२ होवे ग्रहो स्थितयो ग्रहराधा
नक्षत्रहै इनोंको वेदकरनेसें
142 हनन करता है । मघाविच

मघाउ कर्कटे नेत्रा रिक्ता ।
कुंभेग वासवो सप्तष्ठा हे
ति पापात्मा मेत्रेच पुरतः
स्थिते स्त्रे । मे स्लेगाइ तथा
भद्रे जयाच मकरे चखे ।
श्रवणे सप्तमे पापो मघा ।
स्था हेति याम्य मे ।

स्थित पापीग्रहहोवे तो मघाव
र सिंहराशि भद्रा जया तिथि
होवे मकरराशि खवर्णे श्रव
ण स्लेषा भरणी इनोंकोह ।

ननकरतीहै होर पूर्वाफाल्गु
णीमें पापग्रह होवे तो । टव
ऐ कन्याराशि म अक्षर पेज ।
अक्षर अभिजित नक्षत्र ठका
र तिछ भाग्य पूर्वाफाल्गुणी

टे कन्या मे तथा वापे ज
कार मभिजि तथा ठका
र तिछो भाग्यश्चो हेनि ।
पापः शरोश्विनो मफा म
पेतले वृश्चिके मेव विश
मेंऽश्ननयेहे हन्ययमा
गतः पापः पोसेव भ्रवतः
स्थिते ।

होर अश्विनीनक्षत्रको हनन
करदा है । प अक्षर तलरा ।
शि वृश्चिकराशि मे मअक्षर

रा॰ विस्च उत्तराभाद्रा मेंढे मकार
वि॰ उकार पुनर्वसु नक्षत्र इनको
(१४३) हेति नाश करनाहै अर्थमात
उत्तराफाल्गुणी नक्षत्र विषे॰
पापीग्रह होवे होर आगे स्थि

रेफ मकार कं पंच नीचे
मेंढा लकार के हकार।
माङ्गी पापात्मा हत्ता गो
हेति चान्ने।

तथी रेवती है उसकों वी हत
करदाहै। रेफ पकार यका
र नीचभा पुर्वा भाद्रा चकार
लकार हकार आर्द्रा नक्षत्र
होर उत्तराभाद्रपदा इनां सम
नांका हनन करना है जद पा
पी ग्रह हस्त नक्षत्र विच स्थित॰

होवे। पंचकार सिंह कर्कट राशी ककार सोम्य मृगशिरा होर नकार नकार निऋति। में मूला नक्षत्र इनको हनन करता है जेर पापीग्रह वि।

पं सिंह कर्कटे केच सो।
म्ये तेने निऋतिभम् वि
त्रस्थः पूर्वभंइंच पुरतो
हंति पापकः वि। ।

शा नक्षत्र विच स्थित होवे हो
र सन्मुख स्थित यो पूर्वाभाद्र
पदा है तिसकोवी वेध करदा
है। अरुर इंइ ज्येष्ठा नक्षत्र।
रेफ रकार कन्याराशि डोका
र युग्म मिथुन राशि वकार

रा वलि होर रो[illegible]ली श्राने[illegible]स्थित
वि. शनिमिषा द्वेषो[illegible] नवनकर
१४४ राहे स्थानि विच पापी ग्रह ।
स्थित होषे ला । मेषे ग्रन्यरा
श: ने नकार वलराशि भन्ना

श्र स्वोदय ये फकमे ते ग्रु
गमेव वकारके रोहिणी
चानि लाहेति वरुण उ
रुतः स्थिते स्मा । मेषे
ने चतुले भने नेरो हूय म
कारके श्राग्नेय हेति पापा
स्मा विशा[illegible]वामवी

तिथि नेरा तिथि हूयराशि म
कार वलि श्राग्नेय हृतिकान
तव होरवामव धनिष्ठा द्वनो

144

कोहनकरदाहे । पापीग्रह
विशाखा कोनक्षत्र विचस्थितहो
वे तो विशाखा नकार वृश्चि।
क वकार जया तिका लिपि।
ग्रज मेष राशि होर मकर ते।

विशाखे ने वृश्चिके चे ज
यो तिक्ता मजे चमे मेव।
भाइति पापात्मा पापः
सर्वं नश्यागतः । ३ ।

मेही प्रागेस्थित होषा उसको
हन करदाहे पापीग्रह मेत्र
अनुराधा विच पापीग्रहहो।
वे तो । य अन्तर होर धनरा
शि वि सगों मीनराशि व अ
तर होर अश्विनी नक्षत्र अंदे।

रण स्वर दोष स्वाति नक्षत्र तिष्य
वि॰ नक्षत्रे इन सभको वेध करता
१४५ है जे इनामे पापी ग्रह होवे।
ये प्रकार मकर कुंभ रासी है
145 वनी नक्षत्र नव प्रकार होव

ये धनिष्ठे विसर्गे च मीने
वेच तथाश्विनी ऋकारा
ति लभे पापे हेमेऽरु ऊह
मे उरः जे॰ । मे स्वर्ग के॰
भेदो थो से नेमो विसोच।
नैऋती हेति पापो मेहि
धरनस्थ वनानै म्॰

चित्रा नक्षत्र धनिष्ठा नक्षत्र
इनोको हनन करता है जदऊ
पापी नक्षत्र स्वाति च होवे

ह्रोव ज अक्षर ऐकार ल्वे ।
ह्रोव सकार अक्षर उकाराभाइ।
पदा नक्षत्र जया पूर्णानेटा ।
जिथि ह्रोर एकार वेफ ह्लल

जेसेकार सकारोच उभा
कर्णी जयादिकें एकारे
वेफ ह्लच रोइ माप्पा नि
ह्रेतिव । पूषा

नव आर्द्रानक्षत्र इनांसे पूर्णो
कोह्ननकरदाहै पापीग्रह ज
ह पूर्वाषाढा विच स्थितहोवे ।
लकार गकार अजेक भे पूर्वा
भाद्रपदा कीटे वृश्चिक बल
राशि ये यकार शिवजी पार्वती
को कहतेहै हे वरानने आर्ये।

रल मण उत्तराफाल्गुणी हेइ जेष्टा
वि· नक्षत्र इसकों ग्रास करदा है ।
ध्रं पापीग्रह विसभा उत्तराषाढा
विच धरस्थित होवे । होर ज·

146

त्रिगा वोजे कभे कीटे न्हले
पेंच वरानते आर्द्रमेणेइंच ।
नक्षत्रे विसभा इंति पापक:
उषा· । जेंच धनविच मकरे
कन्याढ पूर्वफाल्गुणी अ·
स्वरे वरुणे पापे ग्रासे हस्ता
द्रि भे स्थितः ग्र· ।

कार धन मकर राशी कन्यारा
शी ढकार पूर्वाफाल्गुणी अ
स्वरवणि शतभिषा इनोंकोमा
रताहै जव अभिजित विच
पापीग्रह होवे ॥

वे लकारवर्णे मकरराशि।
जया भद्रा तिथि सिंहराशि।
मे मकार सज्ञा धनिष्टानक्षत्र
इनको हनन करता है जटम
पीग्रह श्रवणनक्षत्र विवक्षि
वे स्वरो च जयाभद्रे सिंहे
मेपित्र वासवे पापः श्रव
णे गे हन्ता टग्रे पंचडरा।
श्विनम श्र। गे कुंभे चनया
रिको नेटो कर्कटे मेवच ठ
सर्पे श्रवणे पापे ईश्वरोग्रे पंच
वासवान् ये।
तहोवे नेसही श्रागे श्विनयो
श्राग्नेय कृतिका नक्षत्र है तिस
को हनन करता है। गे गकार
कुंभराशि तथा रिक्ता नेटा क

रण कर्कटराशि है इकार सर्पश्लेषा
वि. श्रवण होर हैं शांभि विशाखा
१४१ उत्तर हनांको हनन करदा है
धनिष्ठा विच पापी ग्रह होवे ।
147 हो मकार मीनराशि मघ ल ।

हो मीनो मे वले युगमे है
तिख रखे नथा अभि-
जिनभे वारुणश्या हेति
पापः ग्रहेनिले । श

अन्तर युगमे मिथुनराशि है ह-
कार निष्ठा अभिजित होर श्रा
ने स्थितयोः निलस्काति है इ-
नको हनन करदा है पापी
ग्रह शतभिषा विच
स्थित होवे ता ॥

वेगो वेगावली हैस्व उतराधा
ता होर टकार अन्तर मेध है
ध रापुरी कें ककार पुनर्वसु
होर श्राते स्थित या विचानेह
येहे हनो सप्तलोको हनेने क

वेगो वेस्व ट मेषा हस्थके
वाटिति नथा पूर्वभाद्रा
नः पापो हेति विस्रो पुरः
स्थिते । पूभा । वे लकारा
वकारार्ध्दो समजेनो मधंत
था श्राद्धिवैश्यगतः पापा
हेत्यन्ते हललमे नथा उभा ।

रहाहे पापीग्रह पूर्वभाद्रप
टा विच स्थितहोवे नो । वे
वकार लकार वकार होर
श्राह्यनतच सेसकार पकार

व० में नकार तोय में पूर्वाषाढ़ा
वि शाहिं वेश्य उत्तराभाद्रपदा नक्ष
१४८ त्र विच पापग्रह होवे तो इन
को हत करदा है होर आगे स्थि
त यो हल नक्षत्र है उसको वी

148

दे कुंभे मकरेभेच मूले
लोकारको मृगे रेवती
मेष्वितः पापः पर स्थान
रफाल्गुणीसु वे

हत करदा है । जद रेवती नक्ष
त्र विच पापी ग्रह होवे तो रका
र होर कुंभ राशि मकर राशि
में भकार मूला नक्षत्र होर
लकार अकार मृगशिरा न
क्षत्र होर आगे स्थित यो उत्त
रा फाल्गुणी नक्षत्र है इनाको

इनन करदाहै। जव अश्वि
नीविच पापीग्रह होवे ता च
कार होरथन मीन राशी
अकारहोर यकार ज्येष्ठा।

च मीन मञ्ज धब्बीच ये
ज्येष्ठा कार रोहिणी अश्वि
नीञ्ज गतः पापो हेति भा
गो भुरः स्थितम अ।

उकार रोहिणी होर भ्रागे
स्थित यो सर्वाफाल्गुली
नक्षत्र हे इनको हलक
रदाहै ॥ ॥
लकार वर्ण मेषराशि तथा
नैमेही रिक्ता जया तिथि अ

रण लि वृश्चिकराशि ते नक्षत्र से
वि ग अनुराधा रोहिणी इनें
१४९ नक्षत्रों हनन करदा है भरणी
नक्षत्र विच पापीग्रह स्थित

149

ले मेषेह नक्षत्र विशाखा ज्ये
लि रेवती मेषमें रोहिणी।
भरणी सेष्या है ति पाप
ग्र पितृमें भ। अष्टमे
च नक्षत्र नेदा भङ्ग नल
न कारके विशाखा भर
णी है ति कृत्तिका ष्या नक्षा
त्रवे।
होवे तो होर महानक्षत्रकों
वी हनन करदा है कृत्तिका
विच पापीग्रह होवे तो ।

शुक्राचार बुधराशि नेता
हुआ मिथुन लग्नराशि नक्षत्र
त्रिशला को भरणी अश्लेषा द
ल को हनन करता है ।

इसी दिन प्रबल एकमे
व नक्षत्रं वेधि तत्र सर्वे
षां अथ कोणगत स्थितं
स्वलक्ष वेदमाह । को
णस्थ विलयो मेषे ।
स्वेतादि पारगो यहै ।

आगे स्थित केवल एक नक्ष
त्र को ही वेध होता है अब
कोण दिशा स्थित जो खर है
उनको चार वेध कहते हैं ।

रण कोणनक्षत्रोंके बीच अर्थात्
वि. अंत मध्य पादमें ग्रह होवे तो
१५. आ स्वरादि चार स्वरोंको औ
र पूर्णा तिथीको वेध होता.

150

अकारादि चतुष्कस्य वे।
धः पूर्णातिथेस्तथा अ
थमध्येः कृत्तिकादि पाद
गोवा यदा स्यात्तदा अ।
कारस्वरस्य वेधस्तत।
तः तथा पूर्णतिथेश्च
वेधः स्यादिति ।

है। यो कृत्तिकादि प्रथम
पादविषयक होवे तब अका
रस्वर होकर पूर्णतिथिको
वेधकरता है । ।

जैसे मेषा न लग्न के अन्तपाद
विषे ग्रह होवे अथवा मघा पा
द के आदि पाद में होवे तो आका
र स्वर को वेध होता है अग्नि को
ण में होर पूर्णा तिथि पंचमी
तथा मेषो दिशि अग्नेयो।
न्तपाद गो ग्रहः मघा प्रथ
मपाद गो वा तदा आकार
स्य वेधः पूर्णा तिथेश्च प
वै नैऋत्ये विशाखान्त पा
द गो ऽनुराधा प्रथमांशगः
पापः
दशमी पूर्णा को वेध होता है
इसी तरां नैऋतन कोण में वि
शाखा के अन्तपाद विषे ग्रह हो
वे होर अनुराधा के प्रथमपा

२ण हमेंग्रहहोवे तो इस्वर होव ।
वि. हस्तो तिथिको वेधकरताहै ।
१५। तैसेही वायुकोणमें श्रवण
नक्षत्रके अंतपादमें अथवा ।

15/

इस्वरे हस्तोच वेधयति
तथावायो श्रवणांतपा
दगः पापो धनिष्ठादिपा
दगो ईकारे हस्तो तिथिं
हंति । अन्यच्च सूर्ययुक्ता
उदीयंते सूर्यग्रस्तास्तथा
मिनः ग्रहाः द्वितीयगस्त
थे स्फुरद्विवाः कुजादयः
धनिष्ठाके आदिपादमें ग्रहहो
वे तद ईकारस्वर होव हस्तो
तिथिको वेधकरताहै पापी
ग्रह । होरविशेषकहतेहै

सूर्यकोजोइकर यहग्रहश्रा
गेचलतेहै उनकोसूर्यउल्ल
कहतेहै सूर्यसेउल्कग्रहहो
वे तो उदयहोतेहै जब सू,
र्यकेसाथहोतेहै तबग्रस्त,

सप्त तृतीयगे भानो
मेहाभानो चतुर्थगे व
क्रास्तः पंचमे षष्टे वति
वक्रा नगाष्टके ।

होतेहै जबसूर्यग्रहथो दू
सरेहोवे तो ग्रहस्फुरहिव
श्रतिप्रकाश बिंबवालेहो,
तेहै कुजादि भोमादिग्रह ।
होर तीसरे सूर्य जिनग्रहों
थोंहोवे श्रोह ग्रहसमसेक्त,

गण· कहोतेहै योसूर्यचौथेस्थान
वि· मेहोवे जिसग्रहथो उसकी ।
१५२ मंदसंज्ञाहोतीहै जिसग्रहथो
पंचम षष्ठस्थानविच सूर्यहो
वे उसकीवक्रसंज्ञाहै होर ।

LS 2

नवमे दशमे भानौ जा
यते कुटिलागतिः द्वा
दशैकादशे सूर्ये भज
ते शीघ्रतां पुनः ॥

जिसग्रहथो सप्तमे अष्टमे
सूर्यहोवे वह अनिवक्रसंज्ञ
कहोताहै । नवम अथवा
दशम सूर्यहोवे तो कुटिल
गतीहोताहै बारमे जारमे
सूर्यहोवे तोशीघ्रगतीहोती

है। फेर सूर्यके साथ स्थि
तहोनेसे अदृष्यताकोप्रा
प्तहोतेहैं राहु केतु सदैव

अदृष्यतां भनः लोके
वर्जेत्वर्के गताः ग्रहाः
राहु केतू सदा वक्रौ।
शीघ्रगौ चेंद्र भास्करो
गतेर्वेक स्वभावत्वा
देषा दृष्टि त्रयं सदा

वक्रीहै सूर्य चेंद्रमा सदैव
वशीघ्रगतीहै इनको ए
क जेसीगतिहोनेथों सदा
त्रयदृष्टि होतीहै ।

१० क्रूरग्रहवक्रीहोवे तो अतिक्रू
वि. रहोतेहै औरशुभग्रहवक्रीहो
१५३ वे तो महाशुभहोतीहै सह-
जस्वभाव विचे स्थितहोवे तो
शुभग्रह क्रूरग्रह वक्रीग्रह

153

क्रूरावक्राः महाक्रूरा ।
सौम्यावक्रा महाशुभाः
स्युः सहजस्वभावस्थाः ।
सौम्याः क्रूराश्चवक्रगाः
केचिन्न यथा यस्यगति
भवति तथा देवगत्या

यथास्वभावविच स्थितहो
तीहै तैसा फलहोताहै ।
कोईकहतेहै धिसकी जे-
सीगतिहोवे तैसे उसीगती

करके वेधवी होताहै जे.
से सूर्य चंद्रमा सदा शीघ्र
है इनकी सदैव वामदृष्टि
है राहु केतु सदा वक्री व.

वेधोपि तेनैव रवि चं.
द्रौ सदैव शीघ्रगौ त
यो वामदृष्टिः स्यात् ।
राहु केतू सदा वक्रौ ।
वक्रत्वा दक्षिण दृष्टिः
तथाच रणहस्तिः ।

क्रगतीवालेहै इसवास्ते इ
नकोदक्षिणदृष्टिहै अथवि
शेषकहतेहै रणहस्तिक.
तत्रेषसे वक्रगती यो ग्रह
होवे सोदक्षिणकर्णगती

रण अर्थात् तिरछा देखता है
वि· शीघ्रगती ग्रह वामदृष्टि से
।।५४ वेधकरता है समगती ग्रह
सन्मुखदृष्टि देखता है राहु

153

वक्रौ दृष्टे कर्णगत्याथ
वामे शीघ्रो विध्ये दृष्टे
नेत्रे समस्त नित्य वक्रौ
राहु केतू रवीर नित्य
शीघ्रौ दृष्टया तुल्य रू
पौ ।

केतु नित्य वक्रगती है सू
र्य चंद्रमा नित्य शीघ्र है इ
सवास्ते इनके दृष्टि तुल्य.
रूप है तीनो पास देखते.
है ॥

श्रोरकहतेहै सोम्य शुभग्रह शीघ्रहोवे तोवलवानहोता है क्रूरग्रह शीघ्रहोवे तो वलमेरहितहोताहै अथवे।

अन्यदाह सोम्याशीघ्रा वलिष्ठास्युः क्रूराः शी। घ्रावलोकिताः अथवे धफलमाह एका दिक क्रूरवेधेन फलं भेसो प्र जायते उद्वेगश्च भयं भे गो रोगो मृत्यु क्रमेणव

धकाफलकहतेहै एका दि क क्रूरग्रहोंके वेधकरके भरसोको फलहोताहै उ। द्वेग होर भयभेग रोग मृत्यु

रा. ग्रहक्रमकारके होते हैं और
वि. नक्षत्रोंको वेध होवे तो भ्रम
१५५ होता है ग्रहोंको वेध होवे
तो हानि होती है स्वरकों वे-
ध होवे तो व्याधि होती है ।

भ्रमो ऋक्षे ग्रहे हानिः स्व
रे व्याधिर्भयं तिथौ राशौ
विघ्नं महाविघ्नं पंचविघ्नो
नजीवति ।

तिथिको वेध होवे तो भय
होता है । राशिको वेध होवे
तो बडा विघ्न होता है और जि
सदीयां नक्षत्र ग्रह स्वर
तिथि राशि यह पंच क्रूर
विद्ध होवे और युद्धमें बचता
नहीं इसीतरा रोगमेंवी वि

155

तारकाना । एकग्रहका ।
वेधहोवे तो दुःखमें भयहोता
है होवदोग्रहका वेधहोवे
तो धनक्षयहोताहै ३
तीनग्रहोंका वेधहोवे तो

एकवेधे भयंदुःखं द्वि
वेधे धनक्षयः त्रिवेधेः
त्रभवेद्भंगो मृत्युर्वि
द्धे चतुर्ग्रहैः ।

भंग अर्थात् पराजयहोता
है चारग्रहोंका वेधहोवे ।
तो मृत्युको प्राप्तहोताहै ।
जैसे दुष्टफलदेनेवालेग्रह
क्रूरकहेहै तैसेही शुभग्रह
का वेधहोवे तो शुभफल ।

रग होताहै। क्रूरग्रहकरके शु
वि. क वेध क्रूरहोताहै शुभग्र
१५१ हहोवे तो अतिशुभहोता
हैवध। जो अर्क सूर्यका
वेधहोवे तो मनमेंसंताप

156

यथा दुष्टफलाः क्रूरा
स्तथा सौम्याः शुभप्रदाः
क्रूरशुक्रो बुधः क्रूरो।
तथा शुक्रो तथा शुभः
अर्कवेधे मनस्तापो द्रव्य
हानिश्च भूसुते

होताहै मंगलका वेधहोवे
तो द्रव्यहानीहोंतीहै श
निश्चरका वेधहोवे तो रो
गपीडाहोंतीहै राहु केतु

दा वेधविघ्नकरनाहै स्त्री·
लग्नेंऽस्मा वेधकरेनो ।
शुभाऽशुभमिश्रफलजान
ला शुक्रदा वेधहोवे नो ।

रोगपीडाकरः सौरि रा
हु केतव विघ्नदो वेदे
मिश्रफले स्त्रीणि तिथि
लाभस्य भार्गवे बुधवेदे
भवे त्यक्त्वा जीवः सर्वफ
लप्रदः ।

भूमिलाभकरदाहै बुधदा
वेधहोवे तांभीहि वधनीहै
बृहस्पतिदा वेधहोवे तां
सभनां शुभफलहोंदेहेन ।

रम अव और किसीका अभिप्राय
वि कहते हैं एकग्रह पापीका
१५७ वेध होवे तो धनका नाश
और स्थाननाश तैसेही दो

अथ कस्याभिप्रायमाह
एकवेधे र्थनाशश्च स्था
नभ्रंशस्तथैव च नाश
श्चाभयवेधेन पापाभ्यो
निर्दिशेत्कृतिम् अथ
विशेषः सौम्य पापग्र
हो हत्वा नाशो व्याधिय
न्त्रणः ।
पापीग्रहोंका वेध होवे तो
मृत्यु होता है । अब और वि
शेष कहे जिसदे नाम नक्ष

157

त्रकोंशुभपापवेधहोवे उ।
सको व्याधि होरधननाश
होताहै वैनाशिकनक्षत्र।
कों तीनग्रहोंका वेधहोवे

वेधे वैनाशिकर्क्षस्य त्रि
वेधे चायुषोभयं । स्वक्षे
त्रस्थे बलपूर्णं पादोनं।
मित्रभे गृहे अर्धं समगृहे
तेथे पादे शत्रुगृहे स्थिते

तो आयुषाका भयहोताहै
अब ग्रहोंकाबलकहतेहै
स्वक्षेत्र अपणी राशिविच
ग्रहहोवे तो पूर्णबलहोंदा
है मित्रदी राशिविचहोवे।
तो पादोन चौथा हैसा घट

र.ल बलझोंदाहै समग्रहदीराशि
वि· विच आथाबलजानणा शत्रु
१५८ दीराशिविच ग्रहस्थितहोवे
तदपादचौथाहैसाबलहों·
दाहै। मेष वृश्चिकराशी·

द्वंद्वेच सौम्य क्रूराणां ब
ले स्थानवशा त्समम्।
पत देव फले बोध्ये सौ
म्ये क्रूरे विपर्ययात्।

दा स्वामी मंगल वृषतुलदा
स्वामी शुक्र मिथुन कन्या
दा स्वामी बुध कर्कटका।
स्वामी चंद्रमा सिंहदास्वामी
सूर्य धन मीनदास्वामी बृ
हस्पति मकर कुंभदा स्वा

158

मी शनिग्रहै परशुभक्रू
रग्रहोंका स्थानवलहै पर
फल केवल शुभदावी जा
नना क्रूर ग्रहका परफल
विपरीत जानणा ।

मित्रसमशत्रुजाननेवाले
चक्र ।

रल पापीग्रह शत्रुदीराशीविच
वि० स्थितहोवे तां शुभफलकर
१५५ दाहै जो समग्रहदी राशी।
विचहोवे तांऐश्याहै सा चट
फलकरदाहै मित्रदेघरवि०

शत्रुगेहस्थिते शुभं पा
दोनं समवेश्मनि अर्धं।
मित्रगृहे त्रिपादं पापे
स्ववेश्मनि। ग्रहः सौम्य
स्त्वथा क्रूरो वक्रो मार्गी
स्तु नीचगः बले ज्ञात्वा फ
लं ब्रूयात् स्थानबैयेयथा
क्रमः।

चहोवे तां आधाफलजान
ला जोपापीग्रह अपनीरा०
शिविचहोवे तां पादचल

होराफल जानना यहयोहै
सो सोमप्रकार होर वक्री मा
भी उच्च नीच इन संज्ञावाले।
होते है बलजानकर फलक
हना स्थानवधविषे यथार्थ

वक्रग्रहे फले छिद्रं निच
ले स्वोच्च संस्थिते स्वभा
वजं फलं शीघ्रे नीचस्था
र्थ फलप्रदः।

मे। वक्रइति यदग्रहवक्री
होवे तो पूर्वोक्त फलकहना।
जानना होर अपने उच्चराशि
विचहोवे तो छिद्रफलहो
ताहै जो शीघ्रगती ग्रहहोवे
तो स्वभावज पूर्वोक्त फलही
रहताहै नीचराशिविचहोवे

रल जो शुभफलकरताहै सूर्य
वि॰ दिग्रहादियों उच्चराशिपरहै
१५॰ सूर्यदा उच्च मेष चंद्रमादा वृ
ष मंगलदा मकर बुधदा क
न्या बृहस्पतिदा कर्क शुक्र
तिथि वारंच नक्षत्रे विद्धे
क्रूरग्रहेणयत्न सर्वेषु शु
भ कार्येषु वर्जनीयं प्रय
त्नतः ।
दा मीन शनिदातुल होर ।
उच्चथों होर उच्चथों सप्तम रा
शि नीचहोतीहै । जो तिथि
वार नक्षत्र क्रूरग्रहकर्के वि
द्धहोवे सो संपूर्ण शुभकार्यों
विषे यत्नकरके वर्जित क
रणा ॥

160

यो नक्षत्र पापग्रह करके यु
क्त होवे और यो भोग्य अर्थात्
भोगने के योग्य होवे अथवा
जिसको ग्रह भोग करता है
और यो पापकरके विद्ध है ।

भुक्ते भोग्ये तथा क्रान्ते
विद्धे पापग्रहेस्तभे शुभा
शुभेषु कार्येषु वर्जनीये
प्रयत्नतः न निहन्ति वि
वाहेषु यात्रायां न निवर्त
ते न रोगा न्मुच्यते रोगी ।
वेधवेला कृतो यमः ।

यह सभ नक्षत्र शुभ अथवा
अशुभ कार्य में यत्न से वर्जने
जिसवक्त वेध होवे पापग्रह
का उसवक्त विवाह करने ।

रण से सावनहीहोता सत्महो।
वि. ताहै होरयाआकरणेमें फि
१६। रकेनहीआवता वेधवेलामें
उत्पन्नहोआ जोरोगहै सोन।
हीहटता एह वेधवेलाका

रोगकाले भवे द्वेधो क्रू
र विचर संभवः वक्रग।
त्या भवेत्क्लेशः शीघ्रे वा
चो रु गन्वितः वेधस्था।
ने भवेद्रोगो दुर्गे वि द्धिः प्र
जायते ।

फलहै जिस नछत्रविषे रो
गोत्पत्तिहोवे उसनछत्रको
उसवक्त क्रूरग्रहकावेध
होवे जोवहग्रह वक्रगती
होवे तो सत्महोताहै जोव

16

हृषीग्रगतीहोवे रोगिवहूता
है होरजिसस्थानकोवेधहो
वे उशदाभंगहोंदाहै होरकि
लेकोंजिसदिशामें वेधहोवे उस
जगाका किलाविडितहोताहै

यत्र पूर्वादिकाष्टायो वृष
राश्याद्रिगो रविः स दिग
स्तमिता ज्ञेयाः शेषा स्थि
ताः सदोदिताः । ।

जिसस्थानविषे पूर्वादि दिशा
मे गतजो वृषादि तीनतीन
राशिहै उनमें जिसदिशाकी
राशीविच सूर्यहोवे सो दि
शा अस्त जाननी सब तीन
दिशा सदा उदितहै । ईशा
नकोणमें स्थितयो स्वरहै ।

स्वरो

दि॰

१६२

सो पूर्वदिशामें जानने और। अग्निकोणदेस्वर दक्षिणमें जा नने नैऋतकोणदेस्वर पश्चि ममें जानने और वायुकोण। देन स्वर उत्तरमें जानने। हो

ईशानस्थाः स्वराः प्राच्यां
स्तेया आग्नेयगा यमे नै।
ऋतस्थात वारुण्यां वा।
यव्यां सौम्यगा मताः न
क्षत्राणि स्वरा वर्णा राश
यस्तिथयो दिशः ॥

र नक्षत्र स्वर वर्ण राशि ति। थि दिशा एह सेवर्ण भल। जानने। जिस दिशाविषे तीन महीने सूर्य स्थित रह। ताहे उसदिशादे एहफल

162

जानने जिस उफलद्दालनका
ग्रस्त होवे उसको रोग होता
है जिसका वर्ण ग्रस्त होवे ।
उसको हानि होती है जिस
का स्वर ग्रस्त होवे उसको शो

तेसवै लगना लेया य
ग्रभाज हिमासिकः न
लग्नाले फजावर्णे हा ।
निःशोकः स्वरैलगे ।
नाशो विघ्न निद्धो भीतिः
पंचासे मरणं धवे या
ग्रा युद्धे विवादश्च हावे ।
प्रासाद वेशमनः ।

कष्ट होता है राशि ग्रस्त
होवे तो विघ्न होता है तिथि
ग्रस्त होवे तो भय होता है

व्र० जिसके पैंडे मूल होजावे उस
ति० को मरण होता है। तातो शुद्ध
१६३ विचार कर वरों का द्वादल।
लग्न होरवीको ई शुभकर्म
नहीं करणा अस्तादिकाटेपा

न कर्तव्यं शुभं चास्त ल
ग्नांशाभिद्धके वैरैः अस्त
राशौ स्थिते यस्य नाशः
प्रथम मत्ते नराहि स
र्वकार्येषु नेयो देवहतो
नरः।

सेअस्तकरके मतवोंने हो
रजिसके नामका प्रथम अक्ष
र अस्तादिशामें स्थित होवे।
वह आदमी उतना काल में
सब कार्यों में प्रारंभकरके

163

ननजाननाः । होरकविस्यड
कोटपुड नथा तेसेही हदल।
ड बलरंगपुड अर्थात नाथो
होडे पयादेयोंका रथोंका घ
डहै उसको बलरंग पुडस्था

रूबै कोटे नथा हंदे व
लरंगे महाहवे उपमा
लंगने योधे वैजेनीयो
नयार्थिभिः अथोदिता
लोनक्षत्रादीनांफले ।

खेटैहेन जिनायोधयोंदाब
रमलहोवे उनोने युडदाउ
घमनेकरणा चाहिये जिन
कोजयदी इच्छाहोवे । अब
उदितनक्षत्र आदिकोंकाफ
लकहतेहै नक्षत्रउदितहो

स्व० वे तोपरामिउंदेमीहै वलीउदित
वि० नहोवे तो लाभहोताहै स
१६४ ३उदितहोवे तो सावहोताहै
नामिउदितहोवे तो जयहो
ताहै निषीउदितहोवे तो ते

नतेमत्युदिते पचिदेवे
लाभः स्यात्सावराशेः
जष्ठस्थितो तेजः परामि
पंचकोटयः । अथप्रश्न
कालेवेधफलमाह ।

जहतीहोतीहै पंजेउदितहो
वे तोपरामिस्यानलाभहो
ताहै । अवप्रश्नकालमेवे
धकाफलकहतेहैं प्रश्नका
लविषे योलग्न क्रूरग्रहोंक
रके बिद्धहोवे तो कष्ट

तजानना। शुभग्रहोंका
केविद्धहोवे तो शुभफलजा
नणा। मिश्रितग्रहोंकरके वि
द्धहोवे तो शुभाशुभमिश्रि

प्रश्नकाले भवेद्दृष्टिर्य
ल्लग्ने क्रूरखेचरैः तदै
शुभे सौम्यैः मिश्रैः मि
श्रफलं मतम्‌ यद्दृष्टि
हे लग्नेन फलं लग्नस्य
भावतः ज्ञानश्चैदेशि
केंद्रेण गदितं यत्नतादि
के ।

तफलजानना। होरयो
लग्नग्रहोंकरके विद्धहो
वे तो लग्नदेहभावथोंफ
लहोता है यह जानना।

बल कहिये है ई केंद्र ग्रहों को लग्नी
वि है उसके ये फलवार प्रादि
१६५ नामियों का [illegible] ता है। अब
165 नव विचार द्विस्वभाव राशि
यों के फल कहते है चरा।

अथ चरादिके यत्फल।
अर्के नवांश चर लग्न द
ये [illegible] दुर्लभ रोगिणो
हतिः स्याद्विपरीत यो।
धा ने स्थल मार्ग विनि
दिशेत्।

शिलग्न होवे तो जो वस्तु
नष्ट होजावे सो दुर्लभ हो
ती है और रोग होवे अथ
वा रोगी का प्रश्न होवे तो
रोगी मृत्यु को प्राप्त होता है

होरग्रहविच जोथा स्थान
कोआवे उसदी आयु छो
टी होंदी है। फिर लग्न देउ
च्चाविच ग्रह वलवान होवे
ता सन्तान भी लभते है होर।
फिर लग्न दे नवें स
लाकालेन लभ्भे नव
रोगी किरा इससो जेको
ड लेह जन्मवत
रोगी चिरकालथों रोगी हो
ताहै होर जिसदा जन्म सि
रलग्न विच होवे सो टीर्थो
ड होताहै। नष्ट नवां ची
दीजोबीज होंउसदा सन्ता
बी लाभ होंदा है होर रोगी

रत्न सर्पिकी रानीमें राहे होवे
वि॰ जिसका जन्म होवे सो मनुष्य
१९९ छुटोहरूव १४ वर्ष आयुहो
ती है ऐसे हि स्वभावलग्न
फलकहाहे मंगल योऽस

नेष्टस्वामीश्च लाभःस्था
शेनी शनिश्चेत् शुभमनः।
मध्याङ्गे लेखनमात्र।
दिस्वभावो हरे पुत्र।

राज्ये नगरे ग्राम उंगे कि
लो देवालय मंदिर पूर।
कोटा सेहर जो कराये हो
करके होपा से में विद्रहो
वे तो उसका विनाश होता
है इसविधि संशय नही।

नानणा अकर्मचक्रके वि
नशेननत्रहै उनको मर्द नो
मटचक्रमे वेधहोवे अग्य
फलकहते है ॥ कृतिकादि

मंडले नगरेग्रामे दुर्गे दे
वालये पुरे क्रूरे रुधयुते
विद्धे विनश्यति नसंशयः
ग्रहक्रमेव काष्टिनमत्रे
नविद्धे फलमाह कृति।
कादि त्रिका येमे क्रूरवे।
धेन क्रूरमगः नाभ्यादि
स्थितादेशा विनश्यन्निय
याम्हवे ।

कृत्तिकादि त्रयत्रयनक्ष
त्रोंको क्रूरवेधहोवे तो कू
र्मचक्रके नाभिआदि क्षेत्रो

रण ऐसे तिनको देखाहै सो क्रमसे
वि० नामकोप्राप्त होते है कृत्तिका
६० ऐसेही पुष्य रेवती पुनर्वसु
इनकोक्रूर वेधहोवे तो आ-

167

कृत्तिकायां तथा पुष्ये रे-
वत्यां च पुनर्वसौ विद्धम
ति क्रमाद्धेम वर्णेषु आ-
मणादिषु । अत्र विशेषो
वराहसंहितायाम् । अ-
धात्रय मानेन मनुजाने
राज्ञां च पुष्ठेन सहोनरा
ति ।
ब्राह्मणादि वर्णोंको क्रमसे वे
ध होता है इसका विशेषफ
ल वाराही संहितासे लिख
ते हैं सर्वत्रय सर्वको फा

ली पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्र
पदा अनल कृतिका आश्ले·
ण जानीके नक्षत्रहै यात्रा·
तिथियोंके पूछकरके म·
हिन तीनो उत्तरा उत्तराफा
पोसंख मैत्रं पित्रदेवतं·
च प्रजापते मंच कृषी·
वलानो
ह्नली उत्तराषाढा उत्तराभा
द्रपदा और पोसं रेवती मे
त्र अनुराधा पित्रदैवतं मघा
प्रजापति मे रोहिणी पह
नक्षत्र सेनी वालेके है
और आदित्य पुनर्वसु हस्त
अभिजित् अश्विनी पह न
क्षत्र वाणिक जनोंके कह

दण· तेहै रोव स्वला त्रिनेत्रभा·
वि· आर्द्रा अनिल स्वाति वारुण
१८ शतभिषा यह नक्षत्र उग्रना
नो भील आदि हिंसकोंके।
स्वामीहै आचार्योंनेफलके
आदित्य हस्ताभिजिदश्वि
नानि वणिजनानां प्रव
हैति भाति स्वला त्रिनेत्रअ
निलवारुणानि भाम्नुग्र
जाते प्रभविष्णनाया:

वाले। सौम्य मृगशिरा
रेद ज्येष्ठा चित्रा वसुधनि
ष्ठा सेवाकरणेवाले अर्थो
त सेवाके स्वामीहै सार्प
श्लेषा विशाखा श्रवण।

160

भरणी प्रहवलतय चोंडालजा
तिके कहेहै । होर विशेषक
हतेहै तेल भांडे भांडे रसम॰
धुरे ग्राम्र कटु कषाय लि॰

सोमांड चित्रा वसदेवता
नि सेवाजन ... गान्य ग्रया
गतानि सार्थे विशाखो
श्रवणो भरण्य ग्रङाल॰
जाते रपि निर्दिशेत नि श्री
माञ्च तेल भांडे रसो धान्य
गजाश्चादि चतुष्पादं सर्वे
महर्वेला यांति यत्र क्रूरो
व्यवस्थितः ॥

ऋः लवण आदि धान्य ग्रन्न
गज हाथी ग्रश्व घोडे ग्रादि
क चतुष्पद जीव इनमें लि॰

रत्न वि॰ १६९ सजिसदे नक्षत्र राश्यादि में
क्रूरग्रह स्थितहोवे वहवस्तु
महर्घताको प्राप्तहोतीहै में
गीहोंदीहै । जिस दिनमें न
क्षत्रहोवे क्रूरग्रहयुत होव

क्रूरवेध समायोगे य-
स्योपग्रह संभवः तस्य
रक्षा ने संदेहो रोगार्त
पि रणेपि च । अथोपग्र
हः

क्रूरग्रहदा वेधवीहोवे उस
दिन जिसको रोगहोवे अथ
वा जो युद्धमें यात्राकरे उन-
का मरणहोताहै अथवा जि
सदा नक्षत्र जिसवक्त उपग्र
ह संज्ञकहोवे और उसनक्ष

169

[illegible]कों [illegible]पीता ती वे प्रह्लो वे ।
लो एस समय में रोग उत्पन्न
होवे अथवा युद्ध के अर्थ जा
वे तो सस्त्र को घात होता है
स्तंभा सेवमे आवे ते
ये विघ्न स्वला भिये ग्र
ले वाहन में घ्रोके सवि
पाने चलई शास्त्र केह
रणा रूशे घ्रोके उल्का ।
सा देकविशतो ।
परहसमग अर्थ है । अव उप
ग्रहकरते है स्तंदेनक्षत्र ।
धों पांचमेनक्षत्री विद्यु
त्संज्ञा है आठमेनक्षत्री
शूलसंज्ञा है बीसमेनक्षत्र ।

रण ही सन्निपातसंज्ञाहै श्रृगार
वि॰ मे नक्षत्रदानाम केतहै हो
१७॰ र इक्कीमें २१ नक्षत्रदानाम
उल्काहै द्वाविंशतिमें २२

द्वाविंशति तमेकेय स्व॰
योविंशेच वज्रकम् नि
र्घातस्त चत्वविंशे उल्का
वष्णा उपग्रहाः स्मृताने
विष्नदाः प्रोक्ताः सर्वका
र्येषु सर्वदा स्वक्षानाक्र
मते वेधे गजदंष्ट्रा ऊमा
वृतः ।
नक्षत्रकी केंपसंज्ञाहै त्र
योविंशा २३ मे नक्षत्रदाना॰
मवज्रहै चोबीमेनक्षत्रदा॰
निर्घातनामहै पञ्चाशउप

ग्रह कहे हैं। तस्माते अपने स्थानमें जो वेध होवे तो संग्रामकार्यमें सदैव विघ्न देने वाले कहे हैं अपने स्थानकों वेध गज देशानुसार वेध अर्थात् सम्भव वेधकरदाहे

जन्मभे कर्म आधाने विनाशे सामुदायिके सङ्घातिक मिदं षोढ्य धिष्ण्ये सार्वजनीनकम ।

जन्मनक्षत्र कर्मनक्षत्र २ आधाननक्षत्र ३ विनाशननक्षत्र ४ सामुदायनक्षत्र ५ सांघातिकनक्षत्र ६ यह छे छे नक्षत्र संपूर्ण जनोके होते हैं ॥ ॥

र.म. और संपूर्ण लोकोंके हे नक्ष
वि. त्र होतेहैं राजाको जाति देश
१२१ अभिषेक नक्षत्रों करके जो
नक्षत्र होतेहैं इनको वेध।
जातकरफलकहणा शुभ

121

जातिदेशाभिषेकेषु न
क्षत्राणि स्थितेः वेधं।
तात्काले फले तावे सौम्य
क्रूरैः शुभाशुभं जन्मभे
जन्मनक्षत्रे दशमे कर्मभे
ष्विते।

ग्रहोंका वेधहोवे
तो शुभफलहोताहै क्रूर
ग्रहोंका वेधहोवे तो माठा
फलहोताहै। जन्मका जो
नक्षत्रहै उसकोजन्मभास
ताहै जन्मनक्षत्रसे द

णमं नक्षत्रकर्मसंज्ञक होता है और जन्मनक्षत्रथोंले के उन्नीसवां १९ नक्षत्र आधा नसंज्ञक होता है ऐसा २३ नक्षत्र विनाशसंज्ञक है ।

एकोनविंश माधानं त्र योविंश विनाशकम् अष्टादशंच नक्षत्रं सा मुदायक संज्ञिकं सं घातकंच विज्ञेयं नक्ष त्रं षोडश मेवच ।

जन्मनक्षत्रथोंलेके अठार वां नक्षत्र समुदायसंज्ञक होता है और सोलवां नक्ष त्र संघातकजानना ।

२ए होर चालीसं नक्षत्र राक्षस
वि॰ चकहाहै होर देवादेनाम॰
१२२ राजानक्षत्रहै उसकी देश
संज्ञाहै जाति देवामरा।
यो नक्षत्रहै उसकी जाति
षड्विंश ब्राह्मणे प्रोक्ते दे
शभे देशनामजं जाति
भे जातिनामत्तं राज्य॰
तं मभिषेकभम। सं॰
ज्ञः शाजन्मभे विद्धे क
र्मभे क्लेश मेवच।
भसंज्ञाहै होरराज्याभिषे॰
करायो नक्षत्रहै उसको॰
राज्यनक्षत्रकहतेहै अब॰
इनकोवेधकाफलकहते

है जन्मनक्षत्रको पापीग्रह वेधकरे तो उसवक्त युद्धमें मृत्युहोता है कर्मनक्षत्र पा। पविद्धहोवे तो क्लेशहोता है आधाननक्षत्रकोवेधहो

आधाननर्क्षे प्रवासःस्या।
द्विनाशे देहविग्रहः।
सामुदायिकभे विद्धे स्तः
नि संघातके तथा जा
तिभे कुलनाशस्स्यद्वेध
ने चाभिषेकभस्य।

वे तोपरदेसयात्राहोती है और विनाश नक्षत्रकोवेध होवे तो देहओंके माथ्ल डाई होंदीहै। समुदायिक

रल नक्षत्रको वेधहोवे तो श्रेि
वि ष्ठ मात्राफलहोताहै मेव्रात
१७३ क नक्षत्रोंकोवेधहोवे तो
हानिहोंदीहै जातिनक्षत्रों
कों वेधहोवे तो कुलकाना

173

देशर्क्षे देशभंगाश्च क्रूरै
र्वेधे शुभैः शुभं भवे भे
दश्च स्वस्य स्वभंग
शेषशुभाम ।

श होतीहै होर अभिषेक न
क्षत्रोंको पापवेधहोवे तो
वंधन होताहै । जब देश
नक्षत्रको क्रूरग्रहका वेध
होवे तो देशका भंगहोता
है जो शुभग्रहोंकावेधहोवे
तो शुभफलहोताहै उसदे

ताको भय मेंगा च शुभाशुभ
फेर शुभ मेंगा ग्रहफल होता
है । यह विधि क्रमसे इकछा
लेके पंजानक करग्रहोंका
वेध होवे तो ग्रह फल यह

क्रूरे वेकादि पंचाने शुभि
वेधे फलं भवेत् तिथि ।
ऋक्ष स्वर राशि वर्ण चेव
त पंचमं यहि ने विध्य ।
ते वेद स्तहिने स्या शुभा
शुभम्

कालमें चिंतनकरणा होर
तिथि नक्षत्र स्वराशि वर्ण ।
ग्रह पंज जिस शुक्रहधदे जिस
दिन चंद्रमा वेध करे ओहदि
न उसवास्ते शुभ ते अशुभ फ

स्व लहोताहै जीस वेदमावेधे
वि तो अशुभफलहोताहै ऐसे
१२४ वेदमावेधे तो शुभफलहो-
ताहै । अथविशेषफलयुद्ध
174 जयार्णवसे कहतेहै श्लो-

अथविशेषो युद्धजयार्ण
वे पंचादि दिक्चक्रेषु
यत्र क्वापि स्थितो रविः
सनयो स्वामिनो ज्ञेयो ।
शेषा अभ्युदिता स्मृताः

दिवारदिशामें स्थित जो नक्ष
त्र राशि आदिका समुदाय
है उनमें जिसदिशाकेनक्ष
त्रोंमें सूर्यहोवे उसदिशाके
नक्षत्रादिक सब ही अस्तजा

तने वाकी दिशा उपदिशा
उदित जाननीआ । नक्षत्र
वर्ण स्वर राशि तिथि दिशा
पर संपूर्ण सूर्य के तापकर
के अस्त होते है त्रे महीने तक

स्तमे वर्णं स्वरो राशि स्ति
थि दिक् चाष्ट मनहि ग
छन्त्यको पताधेन मास
त्रय मध्योद्भवः । उदिता
स्त्र त्रयो वर्गाः मासानो
नवके तथा ।

उपरंत उदय होते है तीन
वर्ग उदित होते है होर महीने
ने नौ उदित होता है औ शि
आकाश विषे उदित होती है

रण दिक दिशा वर्गे अकारादि ।
वि होर नक्षत्र स्वर राशि दिना ।
१२५ दिक वर्गादि दिशा विशेष न
होवे अर्थात चक्रमें स्थित
यो अकचटादि वर्ग होरश

होरा दि स्वर्गे नक्षत्र स्व
र राशि दिनात्मकः । य ।
स्मा वर्गेस्त मायाति न
स्या यात्राच नोदिता शु
भा शुभ समत्वेन पूर्वो ।
योगो जयी भवेत् ।

शि नक्षत्रादिक है सो यिस
दिशा दे अस्त होवे होरा दि
शा युद्ध यात्रा में विशेष क
री वर्जनी । शुभ अशुभ त

175

स्पष्ट होवे तो प्रथमखण्डका उ
योगकरणेवालेका जयहो
ताहै हौर अग्निकोणछो ।
ष्टित जो छेछा नक्षत्रहै उस
मे ष्टित यो पंजअक्षरहै हो

आश्रेया षष्ठि निष्टानिभा
नि पंचाक्षराणिच नाम्ना
ऽवकहडायानि वृषभके
हु कर्कटाः नेत्राक्षराः
कोणगता ध्वत्वाः स्मृतो
पंचमो ।

नामके कहडावर्ण आदिव
णि वृष मिथुन कर्कट राशि
नेत्रा तिथि कोणगत चार
स्वर होर स्मृवे पहिला पंचम

रा नवम द्वादश वाले पूर्व मे रवि
वि. स्थित होवे तो पह नाश होता
१९ है सूर्य कर के मघाश्रों वि
शाखा तक यो नक्षत्र है हो
126
र पंचवर्ण यो है । मकर ।

नवमो द्वादशपरः तथैं
श्याच रविन्नत्रे मघादी।
शाखि निष्ठानि आनिव
र्णानि पंचव । मकारादी
नि तानानि सिंह कन्या तु
ला लग्ना स्वरो द्वितीयः
षष्ठ दशमश्च चतुर्दश
यो लेके नकार तक वर्णच
क के बीच के अक्षर सिंह ।
तुल राशि दूसरा स्वर छा ।

होर हेमो खर दशुमा वो
दसा खर । होर महानिथि
पर शुरू होते है दक्षिणमें
हर्ष होवे मैत्र शुरुआतों

महानिथिष्व यात्मले ।
यात्मायो संस्थिते खेवो ।
मेधादि वेल्लवोनानि न
हेत्रावीनि पंचच । तो
नानि नानि वर्णानि की
र्यन्ति मरगामष्या जया
निथिः स्वराइ श्रुनि वा ।
क्षिप्तेरंदवः ।

मकारथों लेकर खकारत
क चक्र विच दिये यो वर्णहै
न यभ जता होरकीटदृष्टि

रण
वि·
१७

177

क धन्वि यन् सकल
पर राशि जया नित्थि न्ती
था अष्टमी चयोदशी जया
होव फल ॥ भानि १ वह्नि ३
इस्मकैण हते सर्वं वाक
एणी परिभावयेत धनि
ष्ठाटि यमेनाति भाति
गाय स्वलित ॥
सौरव: ॥५ पञ्चस्वर श:
थोन इ अ प झ पदसेम्ले
वणिस्वर श्रा हतज्ञानने जर
हये पश्चिम स्थित राशी वि
वहोवे धनिष्ठालेके यम
भरणीतक नक्षत्र होर गा
दि अक्षर ग मटबला पट

श्रुतः । लग्नात पर्यंत पंच
होरं कुंभ मीन मेष राशी त्रि
कालिनिस्थि ४ ५ । ४ होरस्त्रः ।
वेद होया वस्तु श्रवमा श्रर्क ।
बारमा हिरण्य एक सोलमा
पंचलोकानि कुंभस्त्र मीन
मेषोस्थ राशयः त्रिकालि
स्थि स्वरा वेद स्वर्के हिरण्य
एका । इन्याया दिस मे
स्याना सौम्य दिशप लग्मनि
श्रर्पात है अ पे अः एह स्वर
हनहोने है जब सूर्य सौम्य
दिशा उत्तर विवे स्थित हो
वे । उप ग्रह का फल विशेष
कहते है युद्ध जया णेव थो
राहु सोर शनिश्चर कुज मे

रत्न गत पहग्रह निमवरणको
वि वेधमे हतकरन यदवृहतः
१२८ तब उपग्रह होवे तो प्रज्ञादि
में स्पष्ट होता है उमन तत्रवि
व आरंभकरणेथों अहोरा।
उपग्रहफलविशेषोग्रह
नयात्वे राहुमोर कुजा।
केतुः यंत्रोके चरण इति
अन्ते नमोनरे स्पष्टः यदु
पग्रह योगितत्। अहोरा
त्रे तिथिं त्रिंशत्परिहृतित
याग्रहाः नक्षत्राणि चत
तत्र तथाष्टरष्टविंशति
से दिनरातविच तिथीकों
त्रिंशत्परिहृति अर्थात् जी
हीवारी स्पर्शादि ग्रहभोग

देहेन दोदोघटी इकाइकग्र
हरा भोगकालहै होरनक्ष
त्रोंका नक्षत्रक्रममेंसंग्रठाई
सठोाकरके ग्रहभोगदेहेन
इसलवासे इनकाउदय वार

इत्येव मेषा मुदयो भवे
होरतिथि क्रमात् वारः
ग्रहः मकनेभो वारनक्ष
त्रेनोपिच । जन्महानि
विनाशान्ते यथा प्रेम
स्तिथिसंयं ।

तिथी नक्षत्रदे क्रममेंजान
ना जिसदिन यो वारहोवे ।
उसदेस्वामीथ्यो सवेरेसोरंभ
करणा आगेक्रममेंजानणा

रा अथवा निराकार को जो नहीं
ति स होवे उसके स्वामीयों लेके
१२५ करग्रह बनाना । जन्मका
ल विनाश पर जैसे कहा ।
को यय तिथी कही है पूर्वा
पराण लिख देवस्था दक्षे
रात्रौ निर्विच तिथिः क्र
मग्रहः स्मृतो नक्षत्रे लग
मेवच विनाशके प्रशोध
न तथा सर्व मशोभने
नः पक्ष के बीच इसी तरां पू
र्णमा हमेशा प्रमाण से पक्षग्र
ह होते हैं जैसे ही दिन रात्रि
विविधी जानना तिथि ग्रह
करग्रह करनक्षत्र करतन

ग करहोय विनाशमेंतक
नक्षत्र पड़ैमेंरूपा अशोभन
है । तथा नेमेरी बलवान्
ग्रह शुभफल देनेवाला हो ।

बलवान् शुभफलदो ग्र
हो हीनबल तथा फल
मल्पं दद्यात्स्वे शुभे स्या ।
शुभदर्शनात चक्रेत्वेका
धिकाशीतिः पदेसाख्यो भ
वेद्वधः ।

ताहै हीनबली ग्रह थोड़ा ।
फलदेताहै शुभदृष्टिमें शु
भफल होताहै इसचक्रके
बीच इकासीपदमें आवेध
होताहै अर्थात इकासीको
एकमें वेध होताहै ॥

रण गजरेखा अवस्थिता इति हा
वि. थीके दंतोंकी तरामें एकए
ए. कमें स्थित ग्रह के दिशाकों
वेधकरताहे। जैसे हाथी

180

गज रेखा अवस्थिता प्रा
येके टिक दंतोनच ऋऋ
स्वर चतुष्कस्य स्वरयोवे
रयो हंयोः। निरर्थ भा
ग विन्यासा दकारस्य।
हि लक्षितः

एक दंतसे प्रहारकरे तो दो
नोसे लगताहे। अब और
विशेषकहतेहे ऋऋ नेत्रस
कजो स्वरहे चार ऋ ॠ लृ लॄ
होर अन्य स्वर योराहे शेषः
पर निरर्थकहे इनका च

क्रमें जो विन्यास सो निरर्थक है इसवास्ते प्रकारहोवारीलि खाहै इसीनरांसे वारावर्णा इ. न आदि यो वर्जित किये है ।

वर्णानां द्वादशानां च योथ्ये न परिवर्जनात् यविंन्य म त्र तत्रेदं रहस्यंच प्रकाश्य ते । प्रथमे नवमे चैव तृ तीये काद्दशे तथा मेकाशीतिपदे चैव पदानां मध्य ये स्मृतिः ।

होवजो इस सर्वतोभद्रचक्र। में रहस्यउत्तम विचारहे सो प्र. काशकरकेकहनेहैं प्रथम नवम तृतीय एकादश नेमे ही एकाशीतिपद इकासी।

रत तेकोष्ठ हरकोष्ठकोंकोंवेध
वि नहीहोता । इसीवास्ते प्रका
१८ रका पुनः फेर प्रारंभकीना
है होर वारमेंकोष्ठकमेंबीवे

181

प्रकारः पुनरारब्धो द्वादश
कोष्ठकेष्विह नस्य वेधनं
निर्दिष्टो वेधः कोणेष्वे
स्वराः एकविंशे पंचविं
शे पंच षष्ठपदे तथा से
कसमति कोष्ठच सप्तार्धे
सेकतः कृते ।

धनहीहोता इसवास्ते प्रका
रका पुनः प्रारंभकियाहै ।
इसटवेधको कोणस्थस्वरों
को वेधकहाहै । एकविंश
२१ इसी पंचविंश २५ पंजी

णिवलहे ६।। पैंड मेकलस
ति ११ इकतर होय इकत्र
ट सतार्थ ३ प ष जा इन ,
कोइकोवी वेध होताहै ब्र

एकाधिके सतार्थव बह
महणमध्यो अयाह्न ब्र
ग्रथिता ग्रहाणांच वेध्रो
भोक्ता वरानने । याहोड
शकला यत्र ने स्वरा होड
शा स्तना नाहलकृना हेड
हि: स्था टम्पथा टहपीडने

कालसे होय एकाधिक श
तार्थ ५।। इ केजा इनहे ,
कोइकोकोवी प्रकारके
वेधसे पूर्णवेध होताहै ।

रल अवहरन चक्रों में स्थितजो श-
वि हरहै उनकोंवी वेदमा भोग
१५२ ताहै होर भी वेदनाही की
उश्चकलाहै सोसालाहर

स्थल हत्स्रोदये चैव वि-
ज्ञानं समिस्थितम् ।
अथ सर्वेसोमहाप्रकाशा
हीपायथा शृहस्थानं स
र्वान्तथाति सर्वतः तथैव
सर्वेसो भेद चक्रे ज्ञानप्र
काशक
कहेहै इसी वास्ते उनकला
रूपसवाको उदयमे प्रपी
होतीहै अन्यथा अज्ञहो
नेथो देहमेंपीडाहोतीहै
होरकलाके स्थूलसूक्ष्म

उद्धापनोसे विशुद्ध करके।
फलकरणा सर्वतोभद्र
चक्रदीपसे सालिखनेहै जैसे
दीपक होनेसे अंधकारमे प्रकाश
करताहै तैसेही एह सर्वतो
विनाबलि विनाहोमसे कु
मारी पूजनें विना शुभग्र
ह विनादेवि चक्रराज्ञे न।
दीनयेत् इतिसर्वतोभद्र
विचारः
भद्रचक्र राज्यादि व्यवहारों
के ज्ञानका प्रकाशकहै बली
देनेसे विना होमकरणेसे।
विना कुमारीपूजनकेरनेसे
विना होर शुभवार शुभग्रह
वेद्रनक्षत्रादिसे विना इसचक्र

रण को विचारदासेलहोवे जिस॰
वि हेनाम अश्वला देश ग्राम आदि
प्र को सरवहो का वेधहोवे उ
सने अपने विमाउसार शांति
183 करणी सह्वाभिषेक मृत्युंज
य जप गोदान तलादानआ
दिकरणे शुभहोगा इतिसर्व
तोभद्रचक्रविचारः ॥
अवशतपटचक्रकहतेहै ।
कैसा है चक्र नक्षत्रकेअक्ष
हार अक्षरोंसवणाहै अक्षरो
सेनामजानना होरनक्षत्रो
केचरण होर राशिके नवां
शजानने जारोमेढियारेला
जारावेडियारेला लिखलि
या इनोंमें सो कोइकउन्हा॰

त्रेहेनाहै । प्रथमशतपदक
कक्रमः चक्रेशतपदकेव
ते य नोशातरसभवम ।
नामानिवर्णानोनेय सहत्र
पशाकेतथा निर्यशेगना
रेखा सहमेव्योलिविहुधः ।
जायतेकोटिकानोव शतमे
केमनोरमम ॥

२ग अष्टचक्रमें [illegible] लिखणेका
वि प्रकार अकडचक्र विनरामेंकहते
१८४ हैं प्रथम जो सो कोष्ठकका नक
185 है इसविच एकोहि लिखाहै
क्रमकरके ईशानकोणसे
अकडविजये शान्तकोहि।
अवकहडाः प्राच्यामी।
शानकोणतः प्रथमम
आग्नेय्यां मटपरता नेय
भजखाः पंचवर्गमः को।
णात् ।
लैके अवकहड लिखणा आ
गे अग्निकोणतेक मटपर न
लिखणा नैऋतकोणमें नय
भजखा पहवर्ण लिखने वा
युकोणसे । गमदचला।
पहवर्णलिखने लिखीके इन

को अकारादि स्वर जोडीके-
एक एक को पंज प्रकार का
गणना जैसे क कि कु के को
ख खि खु खे खो । इसतरे
गसें ट वला तायत्रों पंच-
ह पंच पंच या अर्थात् पं-
च स्वर संयोग से पच्चीस जा-
यते जैसे । ऋग्वेद वर्ण
चतुष्के वङ ह्ला: खनटा ल
खा धफढा: थफजा लभ
चतुष्के पञ्चपति हिनाथ
नोयभो यो मै: । ।
संपूर्ण पूर्वोक्त क्रम से वर्णन
गणाई लेना ऋग्यजु पंह को-
खावर्ण है इनके साथ क्रम
से च ङ ह्ला खलठ धफढ ।

ग्र. सकल दत्तितलके जैसा।
लि. कृ.रो.मृ.आ.पु.पु.श्ले.म.पू.उ.ह.चि.स्वा
१८५ वि.अ.ज्ये.मू.पू.उ.श्र.ध.श.पू.उ.रे.अ.भ कोष्ठ
में लिखने। इस चक्रमें कृ-
त्तिकादि सप्तनाडि-
माभिति त्रिकमेण च चत्र
रत्नवेधो गिनी शनीशेः।
क्रूरग्रहाधिकैः। यत्र नक्षत्रे
श कोष्ठ भवति शुभफल
शाशुभौवा ग्रहसुतियोव
य लभ्यास्तत्फलमपि।
सकले एवं कल्पनीये
त्तिकादि भरणीतक नक्ष-
त्रसि जिस्सहित अठाइ नक्ष-
त्र होते है वारवार नक्षत्रोमे
एक एक नक्षत्र होता है ॥

185

देवताके कालम [illegible] सेवेहै उ
नक्षत्रोंके नक्षत्रके चरण
बनेहैं जैसा [illegible] एक वि
का नक्षत्रहै अश्विनीकावाञ

पुंसो नामक्षवर्णो ययुर
हविद्व्यो शुक्रे श्विनी
यः सोमे: सोमफलम्
वश्रुभमश्रुमे टेश्विश्विने
श्विश्विनेच। [illegible]

थमचरणहै दूसराचरणहै
३ तीसरा ४ चौथा चरणआ
नना इसीतरा होरवीजानने
जिसनक्षत्रहै जिसचरणकेको
ठे विच भुमप्रइच्छा अशुभाशु
ह होवे सो लिखकेवांसे देश
ग्रामप्रकृमश्रादियोंके नक्षत्र

ग्रन्थ ग्रहराशि आदिकोंकावेधक
वि० रनाहे इसकाफलसर्वतोभद्र
१८१ चक्रके फलके तुल्य जानना
शुभोके आदिग्रन्थको उप
ग्रहोंकावेध पडिलोंने विन:
नकरणा शुभग्रहका वेध:
यद्धके सर्वतोभद्रे ग्रहोप
ग्रहवेधतः शुभाशुभफ
लं सर्वं तद्विद्यापि विनि
र्णयेत् ।
होवे तो शुभफल अशुभग्र:
हहोवे तो अशुभफल शुभ
पाप मिश्रितहोवे तो शुभ
अशुभ मिश्रितफलहोताहै
योसर्वतोभद्रचक्रमें ग्रह ।
उपग्रह हे वेधसों यो फल

1 80

करते है [illegible] [illegible] सेतु
लेकर इसकी चिंतन करना
चाहिये ।

अवश्रेशाचक्रकहनेहै अश्वा
विशहति अठाईरेलाखिंची,
योकरनियो अठाईञेडियो
करनियो इसतरांलिखेनेथा
श्रेशाचक्रहोनाहै योआदि।

अथोशाकचक्रम अश्वा
विशोर्धगारेखा अश्वावि
शति नियेगाः श्रेशाचक्रे
भवन्येवे यडकंस आदियो
मले। कृतिकादीनिभा
न्यत्र पादानरक्रमेणव।

यामलविचलिखोहै इसच
क्रविच कृतिकादिकनक्षत्र
नक्षत्रदे पाददे अक्षरोदे क्र
ममे लिखणे जैसे अइउए

रत्न पर प्रकार क्रान्तिकारे पादोंके
वि. है इन्नोंके साथ लिखेगे इस
१८८ नरो अभिजित सहित अठाई
नक्षत्र लिखने । जो ग्रह जि
स नक्षत्रके जिस चरण विष

188

साभिजिति भसे स्थानां
नक्षत्रविंशति संख्यया ।
यो ग्रहो यत्र संस्थाने
ते तत्रैव भसे दृश्यः वे
धे स्वस्थाने वा क्रूरे
वाथ शुभोथवा ।

होवे उसको उसी चरणविष
होवे बुद्धीवान पुरुष लिखे
इसको क्रमे सम्भवे यहो ।
ताहै क्रूरग्रहका अथवा ।

शुभग्रहका । आदि द्रेष्का
अर्थात् प्रथमचरणमें ग्रह
होवे तो चौथे चरणको वे
ध करता है चौथे विच होवे
तो पहिले को दूसरे विच ।

आद्यांशेन चतुर्थांशो च
तुर्थांशेन चादिमम् ।
द्वितीयेन तृतीयेन तृ
तीयेन द्वितीयकं । य
स्य नामान्तरे विद्धं द्रेष्का
णके ग्रहेण तत् ।

होवे तो तीसरे को तीसरे ।
विच होवे तो दूसरे को वेधक
रता है जिस दे नाम दा अक्ष
र द्रेष्काण विच ग्रह करके

२ल विद्धहोवे । क्रूरै क्रूरग्रहों
वि॰ के वेधकरके विघ्नहोताहै
१८॥ शुभग्रहोंके वेधसोंहानिहो
तीहै दो तीन पापग्रह वेध ।
करे तो मृत्युहोताहै इसमें

क्रूरै विद्धं शुभै हानि र्ही॰
यैर्मृत्युर्नसंशयः क्रूरो
भय स्थिते विद्धे मृत्यु र्वि
द्धे शुभाशुभैः । शुभो ।
भयगते वेधे व्याधि पी
डादि वेधने ।

संशयनहीं होवे दोनो पा
से में क्रूरग्रह होवे तो मृ॰
त्युहोताहै शुभने अशुभ ।
मिश्रित होने तो विघ्नहोता

है । ऐसे जो शुभों का वेध होवे
तो खाली लीला वेध न होता है
और जो विद्द नक्षत्र विषे वि·
वाह होवे तो विधवा होती है
ती यात्रा काल में वेध होवे

वेधर्क्षेन विवाहे च यात्रा
काले महाभयं रोगो मर
णः रणे भंगः क्रूरवेधेन
संशयः

तो बड़ा भय होता है रोग वि
षे मरण होता है रण युद्ध विषे
वेध होवे तो भंग होता है य·
ह क्रूर वेध का फल है इस·
विषे संशय नहीं । अद्रयः
पर्वत सागरा समुद्र नदि·

रल वि १५. यो देश ग्राम पुर जोड़े नगर
इनां विच जिस जिस दे नाम दे
अक्षर को क्रूर ग्रह दा वेध हो
वे वह पर्वतादि नाश कों प्रा
190 प्त होंदे हैन इस विच विचार

अद्रयः सागरा नद्यो देश
ग्राम पुराणि च क्रूरवेधे।
विनश्यन्ति नामकाद्यो वि
चारणा वेद स्तोशको
विद्धो भवेयस्य परग्रहैः

नेकरणा। चंद्रमा नक्षत्र दे
जिस अक्षर विच होवे उसअक्षर
को होर कोई ग्रह वेध करे।
तां उतना काल उस दिन आ
रंभ कर्म विच सबनां वर्जना

गाचरेरूमें लग्नाकाफलक
हतेहै हेवीरववारेहिते गाव
ति आग्नेय कृतिकादे प्रथम
पादविते श्रकरणविच स्थित

तन्माने तहिने वर्ज्य सर्व
ष्टा शुभ कर्माणि । लग्ना ।
वशात् फलंचात्र वक्ष्यते
वीरवहिने आग्नेये प्रथमे
पादे श्रवणे संस्थितो रविः
लग्नो करोति किः स्थाने ।
वर्णेन द्वादशग्रहः ।

जो स्थर्यहै । कवर्णकोंलग्न
करताहै द्वादशवारमेंवर्ण
को श्रकारमें स्थितग्रहलग्न
करताहै ओर मृगशिरादे ।

लग्न वि० ६५

श्रंनिमपाटविच वंइमान्छि
नहोवे तो । पीछे गालिसें
२२ वर्णको लग्नाकरदाहै ।
शननिघाटे श्रंत पाटकोहर

म्नगद्यीबीनमे पाटे वेद
स्मात्रच मेस्थितः । पञ्चा
ङ्गागेष्वसौ लग्नो ह्नाविंश
तिः करोतिच मकारेवक
णस्थाने पाटेच वरवर्लि
नि एवं सर्वग्रहे विंद्या ह
ना चान परीक्षणम् ।

मकारलग्ना करदाहै ह्रेव
रवर्लिनी श्रेष्ठे एवं इसीत
रा संपूर्णग्रहेंकी लग्नाका
चानविचारकरणा ।

तुर्य्यवारमें स्थितिश्च मंगल
लीसे नरमेऽपी बृहस्पति ।
केमे रविपुत्र शनि षष्ठमे ।
स्थानमें आगे स्थितनक्षत्रको
सूर्यो द्वादशमें लेख स्थि
तिश्च तृतीयके स्वरमे
श्री नष्टाष्टमे रविपुत्र ।
लक्षाष्टमे पुत्रास्थितेभे
देवेषि चंद्रघास्त्र विलो
मनः द्वाविंशमे शशी ।
ऊर्ध्वा नवमे सिंहिकासुतः
लग्नासे ध्यानकरनेहे होर
चंद्रमा आदि विलोमा उलटे
पीछेलगाकरतेहै बाईसमें
नक्षत्रकोंचंद्रमा नोमे १का

रण सिंहका सन राहु सोमपुत्र ।
वि उथ सनेमे शुक्र पंचमेस्था ।
१९२ न लनाकरता है प्रवलता ।
काफलकहते है सूर्यदील

समेमे सोमपुत्रस्य शुक्रः
पंचमभे तथा सूर्येणवि
तनाशः स्या त्कोज राहु
शनिश्चरेः मरणे जीव
लनायो वैधुनाशस्य पा
वेति शुक्रेण कार्य विध्रे
श लनछेः शशि सुतना

ना धननाश करती है कु ।
ज मेंगल राहु शनिश्चर जो
है सो मरण करते है जीव
बृहस्पति ही लनाहोवे तो

192

मरण होए वेधुनाशहोंदाहै
हैफलवेति शुक्रदीलनाहोवे
तां कार्यनाशहोंदाहै बुध
दीलना अनर्थकरदीहै वेद
मादीलना महानाशकरदी
है पहलनादि चातदाफल
वेदेणव महानाशणेल
ना चात फले रूतम ३
मेशचक्रविचारः ।
होंदाहै इतिमेशचक्रविचारः
जब अब क ह ड चक्रमें वेध
होवे तां मेशचक्रदेखणा ।
जे मेशचक्रविच वेधनेहोवे
तां शुभहोंदाहै जेकर मेश
चक्रवि वेधहोवे तां शंतिक

रण रणी दान जपादि उसग्रहदे
वि. करणे जिसदा वेधहोवे ।
१९३

193

अथो पहिले चक्र लिखणा।
तीन चक्रोंकरके शोभन हो
य अश्विनी आदि सताइ नक्षत्र
लिखणे अश्विनी आदि नौ न
क्षत्र मघा आदि नौ नक्षत्र।

अथ चक्रविधिः अथोच
क्रे समालिख्य चक्र त्रय
सुशोभने अश्विन्यादीनि
विन्यस्य सप्तविंशति भा।
नि च। अश्विन्याद्यं मघाद्यं
च मूलाद्यं तु क्रमेण च।

मूला आदि नौ नक्षत्र क्रमसे
लिखने उत्तर पूर्व दक्षिण।
नक्षत्रोंके क्रमसे तीन चक्र
होतेहै। अश्विनी मघा मू

रण ला आदि नै रेखा करके छत्र
वि॰ वनतो है चामरादि एक एक
१६५ दाफल वावरा वावरा कहते
है। पूर्वछत्रकी मध्यरेखावि

195

उत्तरे पूर्वदेशेव श्वेतछत्र
त्रयं मते। अश्विनी मघा।
मूलाद्ये नवनाडी विभे॰
दिते चामराद्ये फलं वाच्य
मेकैकस्य वदाम्यहम्।
प्रतीची मध्य रेखाया।
मीशानान्ते हयाधिपः

पे ईशानपर्यंत हयाधिप।
अश्वपति छत्रजानना आ॰
त्रिकोणतक नराधिपछत्र
जानना और दोनोके मध्य॰

मे गजाधिपचक्रजानना ।
पहक्रमसे अश्वपति गजपति
नरपति चक्रहोतेहै चक्रोंके
विभागसे इनकोंशुभाऽशुभ
अथैयाते नराधीशस्तस्य
श्चैव गजाधिपः अश्वाध्य
क्षो गजाध्यक्षो नराध्यक्षः
क्रमेणच एकैकचक्र विभा
गेन ज्ञातव्यंच शुभाऽशुभ
म अश्वेषां भूपतानाञ्चैव य
न्नचक्रे व्यवस्थितम् ।
फलजानना होरराजोंके
नक्षत्र जिसचक्रमेंवियास्थित
होवे प्रतीचीमध्यरेखाकित
नेतकहै सोकहितेहै अथा.

२ल था मिथला वेण कौशांबी ।
वि॰ कौशाकी प्रसिद्ध नगर था वि॰
।४। धावल अन्तर्वेदी कान्यकुब्ज
प्रयाग इन्हें देश विच कौशा
वीपुरी लिखे है उनने नक म
थरेखा इसदेउनरथों देश
ननक हयाधिपदेशानने
इसीनरो कौशकीक्षो प्रसि॰
कोल । अब गजपतिछत्रदे
शक हतेहै गोड हस्तिबय ।
पंचराष्ट्र कामरू रतन देवच
न प्राग्ज्योतिष लोहित्य ती
रमगुह उदयगिरि महास्व
वघ गोड पौंड मेकल शेव
ष्ट वर्द्धमान पकपदे त्रिम
कत्रदेननदयमे स्वरनदत्र

ग्रहदेवयहै उसदेशकेरा।
जाकाकूर्मअंगहोताहै मध्य
वर्गोष्ठो दक्षिण अग्निकोण
तकनवाधिपकूर्महै इनदे।
शोंकेबीच कौशकीयों है।
शान अग्निकोणदेमध्यस्थ
जोदेशहै सोगजपतिकान
जानना अश्वपतिदेशप
श्चिमका अथवाउदिशाके
देशमांडव्य तुषार एकवि
लोचन स्त्रीराज्य अश्मक।
चर्म रंजिक होर उत्तरदि।
शाविषे हिमालय यामुन
कैकय गांधार यौधेय आ
र्जुन वसान होर ईशानको
णमें कीर काश्मीर गंजन

रण खुरासान खस एकपद को॰
वि॰ लिद हेमल इनोंदेशाका अ
(५) धिपति अश्वपतिजाननां अ
वनरपतिछत्रकेदेशाकहते
है कांबोज द्रविड महाराष्ट्र ज
वनक रैवतक लंका श्रीप
र्वत मलय दर्दुर महेन्द्र कर्ना
ट कोलागिरि आभीर लव
लगया आश्मज: कलिंग
बंग उपबंग ओड्र विदर्भ ।
कोशल इनदेशोंकास्वामी
नरपति ॥

नक्षत्रे सोक्षत्र जिसक्षत्र ।
विचअभग्रहहोवे उसराजा
को शुभफलहोताहै जिस

बृहविव पापीग्रह होवे उस
को अशुभफल देनो है चामर
कलश वीणा छत्र देउ पतङ्ग
ह आसन कीलक रज्ज पहछ
तछत्रे नसप्रप्स शुभाशु
भफलप्रदस चामरे कल
शंवीणा छत्रे देउ पतङ्गे ह
आसने कीलके रज्जे नव.
भेदाः प्रकीर्तिताः
छत्रेश्चिनः सोति भंगन
स विनिहितेन फलन
चामरादीनां प्रत्येक
वदाम्यहम् ।
अदोनो भेद है रिसदेवत्र।
विद्य सोति शनिग्रह होवे उस

रण हाभंगकरहणा होरचामरादि
वि. कोंकेफल एक एकका बल
१५८ सा बावना कहते है जबचाम
रमे थानिहोवे तो वायुवड़ा च

198

चामरे चेडता वायो रनाह
क्षिल्ल जायते दुर्भिक्षेच भवे
द्घोरे प्रजापीडा नसंशयः।
कलशाय्ये भवेयुद्धं रणेभं
गो महद्भयं छानपातादि
के सर्वे जायते नात्रसंशयः
बहरिष्येन कालेन पहः।
राज्ञी विनश्यति ।
इवेगसे चलताहे वर्षानही
होती होरबडादुर्भिक्षहोता
हे उसराज्यकीप्रजापीडित

होती है इसमें संशय नहीं है
और कलश नक्षत्रों में शनि
होवे तो युद्ध होता है और यु
द्ध में भंग होता है बड़ा भय हो
ता है और खान पान आदि में

बलविनो भवेद्राजा भय
भीतश्च मेदिनी यदा श्रव
णे सौरि श्चरे दंड पतद्रे

मणि उष्ट फल होते हैं इसवि
षमें संशय नहीं है जब वहरी
मतक नक्षत्रों में कोणशनि
होवे तो पहराति पहराणि
विनाश को प्राप्त होती है ।
बलविन इति राजा बलविन
होता है और उसके राज्य की
भूमि भय से भीत होती है ।

रण
वि
१५५

यदतीननक्षत्रयोर्है काव देर
होर धनकूर इनोविच शनि
श्चरहोवे तो उससमयमें उ
सकेक्षत्रकानाशहोताहै इ
समेंसंशयनहीहै श्रोरजब
नदातस्य भवेद्भंगो क्षत्रस्या
पि नसंशयः श्रासनस्य भ
वेन्नाशो श्रासनस्थे शनैश्च
रे धुवराजनयः कीलवे.
धने रज्जसंस्थिते सोमसु.
को निचारस्थः शनिकेका
फलोनहि ।

श्रासन नक्षत्रमें शनिहोवे
तो श्रासन श्रर्थात स्थितिका
नाशहोताहै होरकीलके.
नक्षत्रमेंशनिहोवेतो धुव

199

गजकोमस्तहोताहै होरवज्र
मेलकनक्षत्रोंमें शनिहोवे।
तो वंधनहोताहै होरविशेष
कहतेहैं शुभग्रहकरकेयुक्त
होरअतिचारगतीवाला श-
निहोवे तो इसकोफलनहीकह

वक्रगः क्रूरयुक्तश्च सर्वे
क्रूरं करोतिसः शनि राहु
कुजादित्या यदा जीवेन्दु
संस्थितः।

रता शुभकरताहै। वक्रगइ
ति शनिवक्रगतिवालाहोवे
और क्रूरग्रहकरकेयुक्तहोवे
तो संपूर्णकार्यों विषे क्रूरफ
लकरदाहै शनि राहु मंगल
यह बृहस्पति होर चंद्रमाके
साथयुक्तहोवे तो उत्तरदे।

रण शाका अधीशयोराजा है उस
वि० कानिश्चयमें छत्रभंगहोता
२.. है जबचारक्रूरग्रह उपचय
माकेसाथ मेउत्पन होवे । ए
वेदशाधिपतिका छत्रभंग।

उदनराधीश राजस्य निश्चि।
ते छत्रभंगदाः क्रूर चन्द्र।
हयेचैव उपचेरेणसंयुते
सर्वे छत्र विनाशाय कथि
ते एवं महर्षिभिः पञ्चपाप
चन्द्रकेन्द्र यदाशुक्रेऽउ संयु
तम् ॥

होताहै पंचपापीचारमेंनेक
होहै इसीनगरिमें चारपाप
ग्रह शुक्रकेइसमामें युतहोवे
तो । इतिगरिशादा जो अ
धिपतिराजाहै उसकेछत्रदा

विनाश होता है विद्वानोंने कहाहै एवं इसीतरासे होरहे।
शमेंभी जिसभगमें जिसका सम्भव होवे उसमेंपूर्वोक्तग्र।
होके तासे उस उस देशका।

दक्षिणाशा पतेश्छत्र वि।
नाशो भाषितो बुधैः एव
मन्येषु देशेषु यस्य यत्रच
सम्भवः उक्तग्रह समायो
गा छत्रभंगं विनिर्दिशेत
यथाउष्फलः सौरिः स्त
थासौम्यफलो गुरुः।

छत्रभंग करणवाहिये।
जैसे शनिश्चर उष्फल देने
वाला है तैसेही वृहस्पति।
शुभफल देनेवाला कहा है

२ग होर भौम ह बुध तल्यवलीहै
वि॰ शुक्रने राहु सूर्य केइमा पह
२·२ वलमें समानहै । जैसेहा॰
निकरनेवाले क्रूरग्रहहैं ते
सेही शुभग्रह शुभफलकर

भौम सौ भृगु राहुच रवि
केन्द्रौ बलसमौ । यथा
हानिकरः क्रूरा स्तथासौ
म्याः शुभंकराः क्रूरशु
क्रो भवेत्क्रूर श्शुक्रः सौम्य
युतः शुभः सौम्याः क्रूरा
यदा केन्द्र प्रभावेकन्द्रेस्म
स्थिताः

तेहैं होरक्रूरग्रहशुक्रकेन्द्र
मा क्रूरहोताहै शुभयुक्तशु
भहोताहै । जबशुभ औरक्रू

रयह आठहीक्षत्रमें स्थितहो
वे उसराजाको विघ्नदानक
रनेसे छत्रभंगहोताहै ।
जबराजाके नक्षत्रमें राहु अ

छत्रभंगो भवेत्तस्य विघ्नदा
नेन भूपतेः । रूपनामके
गो राहुः केतुर्वा यस्य सं
स्थितः छत्रभंगो भवेत्तस्य
परचक्रागमेनच । मृग
या साहसं यात्रा उद्वेराजा
भूरोहणं विग्रहेवर्जयेद्रा
जा छत्रस्थेः क्रूरखेचरैः

थवा केतुस्थितहोवे तोछ
त्रकाभंगहोताहै अर्थात् ।
राज्यकीहानिहोतीहै परच
क्रकाआगमनहोताहै इस

२०० रेराजाकी सेनाश्रावतीहै ।
वि० मृगया शाकार साहस हठ
१-२ यात्रा होर उग्रकर्म राजहा
थी अश्व घोडा इनकेऊपर

पवेतालया यद्राराजा करे
ति ग्रहशांतिके यज्ञकर्म या
मलेतेसे नचशांति भवे ।
रूप नृपस्य यत्रक्षत्रेना
मनक्षत्रस्या नहेवशुभा
शुभ फलंद नसंशयः
इति क्षत्रचक्रम ॥

चऊना विग्रह युद्ध । पहवा
तोसहपुण्यागकरेराजा यद
क्षनक्षत्रोंमें क्रूरग्रहहोवे
नवक्षत्रमें क्रूरग्रहहोवे तो
राजा जानकरग्रहशांतिक

रावे योयामलतंत्रमेंकही
है इसकेकरणेसें शुभहोता
है नृपराजाकानामनक्षत्र
क्षत्रमें स्थितहोवे उसदाफल

अथसिंहासनचक्रविधिः
अथातः संप्रवक्ष्यामि ।
चक्रं सिंहासने त्वये येन
विज्ञानमात्रेण क्रियते ।
राज्यनिर्णयः । सप्तविंश
तिऋक्षेषु मेकेकंचनवा
त्मके अश्विनीमघमूलाद्य
पंचनाडी विभेदकम् ।

कहणा । अबसिंहासनती
नकीविधिलिखतेहैं अथा
तः इसकेउपरंत तीनप्रका
रका सिंहासनचक्रकहते

रण है जिससे ज्ञान लेकर के राज्य-
वि दानिर्णय किला जे दाहै। सता
२.२ ईनक्षत्रोंमे नौ नौ नक्षत्र का।
एक एक सिंहासन चक्रवन।
दाहै अश्विन्यादि नौ मघाद्या
दिनौ मूलाद्यादिनौ मे पंचना
डी का पंचरेखाटे भेदकरके
॥

203

रण अवसिंहासनचक्रकहतेहै
वि अश्विनीयोंलेके नौनक्षत्र उत
२.४ रभागविषटेने मघाद्यों नौ।
नक्षत्र एवंमेंस्थितहै मूलादि
204 अश्विन्याद्युत्तरेभागे मघाद्य
पूर्वतः स्थितम् मूलाद्यद
क्षिणभागे ज्ञातव्यं नृपति
भये। इतरेष्वच राज्येषु न
पत्रामस्येतो वेदेत शुभा
शुभमिदं सर्वं यस्य यस्या
मनेस्थिते नाडिका पंचवे
धेन एकैकस्यामने भवेत
कनौ नक्षत्र दक्षिणमेंस्थित
है एकतीनसिंहासननृपति
भयहोतेहै इनदेशोमेंस्थित
यो राजाहै इनकोफलकह

ना होरजोराज्य है उनमें राजा
के नाम से राजाकानामनक्षत्र
जिस आसनविच आवे उसमें
फलकहना परंतु सबले शुभ
अशुभ फल जिस जिस टे आस
नमें स्थित है उसको पंजरे खो
देवेयकर के एकएक टेआ

आधार आसने पर है सिंह
सिंहासनेतथा आधारा
दिफल सवें मेकेक स्पव
ह्राष्य है ।

मनविध होती है आधार आ
सन पद्म सिंह सिंहासन ।
पद्म पंचमेद आसन के हैं इ
नकाफल बराबर बराबर ।
कहते हैं ॥

रण
वि
२.५

सौम्य क्रूरग्रहों के वेध देवश
शों शुभ अशुभ फलजानना
होर सप्तम जो आधारनक्षत्र
है उसमें राज्याका राज्याभि

205

ग्रहे वेधवशात्तेषां सौम्य
क्रूरैः शुभाशुभे नृपाणा
माधारमाघर्क्षे यदा पट्टाभि
षेचितम् पराधीनगतं
राज्यं कुरुते नात्र संशयः

षेक कियाजावे तो राज्यप
राधीनकरदेताहै इसमेंसं
शयनहीं है । आसन्नेदेन
क्षत्रविच राज्याभिषेकहो
वे तो राजानीतीवालाहो
ताहै प्रधानपुरुषोंकाप्या

मी होंदा है होर प्रजा को शांति
हा विक करदा है होर पहुन नक्षत्र
विच यद राजा महाशनन पर
वैठे तां एवं वत् राज्य की ।

शासनस्थेन अश्लेषा नी
तिज्ञो भवेन्नृपः सदा ।
नक्षत्राधीशः प्रजाशां
तिकरो भवेत् पहुअश्ले
यदा राजा होपविष्टाम
हासने एवं राज्य थिने ।
तथा विरं पालयेनमही

क्षितिकर के विरकाल तं
क प्रजा को पालन करदा
है । जो सिंहन नक्षत्र विच ।
अभिषेक होवे तां राजा सिं

रण
वि
२.१

हकेवल्पपराक्रमी होताहै
जबआसनपरबैठे इसको
संग्रामयुद्ध नित्यप्रियहोता
है योमेत्रीयोकेवी असाध्य

सिंहरूपी भवेद्राजा सिंह
स्त्रासने स्थितः संग्रामो
स्य प्रियो नित्य मसाध्यो मे
त्रिणा मपि सिंहासनग
ते अत्ते तेजस्वी भीषणा
कृतिः वलचित्तो महाक्रो
धी प्रजापीडाकरो नृपः

होवे यिसको मंत्रिवी नहटा
सकते । सिंहासनसंहतक
नक्षत्रमे राज्याभिषेक कि
याजावे तो वडे तेजवाला

206

भयानकआकृतिवालाहोता
है वलविनहोताहै महाक्रो
धी और प्रजाकोपीडाकरऐ
वाला राजाहोताहै तत्कालि

तत्कालेंदुगते मृते क्रूर।
निर्वैट नाडिके शुभावस्था
शुभेलग्ने सौख्योन्न रवआ
मने। इंटशोत्र समायोगे
उपविष्टोय आसने उच्छि।
य शत्रुसंजात मेकत्वेन
करोतिसः।

कचंद्रमासेगतयोनक्षत्रहै
होरवहनक्षत्र क्रूरग्रहकेवे
धसेंपीडितनहीहोवे शुभअ
वस्थाहोवे चंद्रमाकी होर

रण लग्नशुभहोवे ऐसाविचारक
वि. रकेराजाको आसनमें बैठाना
२.३ राज्याभिषेककरना। ऐसेयो
गविचयोराजा आसनपरबै
ठे तो समस्तशत्रुसमूहको।
मारीके एकछत्रराज्यकरता
है सोराजा। होवक्रूरग्रहक

क्रूरग्रहयुता नाड्या उपवि
श्याय आसने वेधने भूमि।
नाशश्च तथा मरणञ्च जा
यते।

रके युक्त यो आसनचक्करी.
नाडीहै उसविच योआसन
परबैठे तो उसको वेधन भू
मिनाश होवमरण एहफलहै।

207

ताहै। औरवीफलकहतेहैं।
जिसराजाके आधारनक्षत्रवि
ष शनिहोवे उसकेदेशविषेअ
नावृष्टिकरताहै औरवडाघोर
दुर्भिक्षकरताहै प्रजाकाक्षय

आधारर्क्षगतः सौरिरना
वृष्टिं करोतिच दुर्भिक्षं घोर
वै घोरे प्रजाक्षयश्च जाय-
ते। आसनेच यदा सौरिर्दु-
र्भगस्तदाभवेत् अथवा
व्याधिपीडाच धनदुःखंच
जायते।

होताहै। आसननक्षत्रविषे
शौरी शनिश्चरहोवे तोयुद्ध
विषेभंगकरताहै अथवाव्या
धिपीडाहोतीहै धनमेंदुःख

रल प्राप्त होता है। यह सेत्तक नत्त
वि त्र विच शनि होवे तो यह रात्रि
२०८ या यह राली है उसका विनाश
होता है अथवा ध्याराकमार
या बालक है होर वजीर आ।

यहअरहे यदासौरिः यह
राती विनश्यति प्रियोवा
थ कुमारोवा मंत्रिवर्गस्त
थापिवा।

रि या मंत्रीयों का समुदाय है
तिनका नाश होता है। सिं
हसेतक होर सिंहासनसेत
क ये नत्तत्र है इनो विच य
द सूर्यज शनि होवे तो राजा
का मरण होता है इसमें संदे
ह नहीं है चाहे इन्द्र के तल्य

२०८

वी राजा होवे ग्रहसे पूर्णफल
जिस देशदे सिंहासन में शनि
होवे उस देशदे राजाको होते
है देशों के अवस्था जो ग्रंथा
में लिखी है सो इस्थे बी जानने
सिहे सिंहासने वाथ यदा।
तिष्ठति सूर्यजः तदा सम
नैसं देहो यदि शक्रसमोनृ
पः। शनि राहुके माहेया
यदा वेइस्ते सेघनाः यस्या
सनगता एते तदा राजक्षयं
कराः
शनि राहु शुक्र सूर्य माहेय
मंगल ग्रहग्रह यद वेइमादे
नक्षत्र विच स्थित होवे यिस।
राजादे आसन विच स्थित होन

२०. तदउमदासतयकरदेहैन ।
वि क्रूरकरकेउमहोवे अति
२.५ अथवा अतिवक्रहोवे अति
वक्रउमको आलदेहैन यदि

क्रूरयुक्तोपि वक्रस्थः क्रू
रनाडीगतो पिवा आसने
वेदयोगेन कालरूपी श
नैश्चरः । एवं शुभफलद
या हेवमेवीन संशयः क
रोति विपुलं राज्यं यस्या ।
सनगतो गुरुः । इति सिं
हासनचक्रे

209

वक्रगती मध्यगतीयो ज्ञा ।
देहोवे अथवा क्रूरनाडी ।
विचगतहोवे अर्थात् जिस
नाडीविचशनिहोवे आसन

मे उसविचहोरवीकोई कूर
ग्रहहोवे जिसदिनउसविच
वेइमाआवे नोआनिस्वरसा
न्तोकालरूपहोंदाहे इसवि
चमेशायनहीहे । ओहीदिन
युद्धराज्याभिषेकादिकृत्य॰
कोत्यागण इसेनराजेोहि॰
हस्पति शुभयुक्त अतिवक्री
शुभयुतनाडीमेंहोवे उसमे
वेइमावीआवे तो अत्यशुभ
होंदाहे वडाराज्यकरदाहे
जिसराज्यादेआसनविच उ
क हहस्पति ऐसाहोवे ॥
अवकूर्मचक्रकीविधिकह
तेहे याकूर्मचक्रकोशला॰
गमशास्त्रविचकहीहे ॥

रण यिसदेज्ञानमात्रकरकेदेश·
वि का विप्लव नाश उत्पानजा
२१· लजातेहै यिसदे शृंगदे एक
देशमे त्रीकोडदेवताथ्थित

210

अथक्रमेतक्रविधिः क्र
मेवक्ष्ये प्रवक्ष्यामि यडक्षे
कोशलागमे येन विज्ञा
नमात्रेण जायते देशवि
प्लवे। यस्य शृंगैकदेश
स्था देवास्त्रिंशकोटयः।
यः समेरुः पृथिवीमध्ये
श्रूयते दृश्यतेनतु।
है ऐसा समेरुपर्वतसननेमे
विच आवताहै परंतु देख
ने विच नही आवताहै ॥

१८
वि
३॥

क्रमैवक्रमिदं।

21

ऐसे पर्वत वृक्ष और समुद्र
द्वीप दिग्गज यह सम्पूर्ण भू
मि करके धारण कीती है है
न सो भूमि जिसने धारी दी है

तादृशाः पर्वता वृक्षो
सागरा द्वीप दिग्गजाः
सर्वे ते विधृता भूम्या सा
धृता येन ते शुभे दंष्ट्र
या सा वराहेण विधृता
वसुंधरा शुक्ला त्वनन
तो यस्मा शोभनो हस्ति
का यथा ।

तिसको कहते है सत्र । सो
वसुंधरा पृथिवी वराह दी
दंष्ट्रा दाढा उपधारी दी है सो
ह पृथिवी ऐसी सोभते है ।

रा जैसेमगतेघटलोसें झाफापर
वि मिटीलगीहीहोवे। ऐसा·
२१२ वी वडेदेहवालावराह शे
षनागकेमस्तकपरहै ऐसा

212

देह शेषोपि महाकायो व
राहः शेषमस्तके तस्य
देहमध्ये ऊर्ध्वे संस्थितो
मशकोपमः एवंविधः
सशेषोपि कुंडली भूय
संस्थितः कूर्मपृष्ठैकभा
गेन सूक्ष्मेनतरिकावभौ

वराह शेषनागके शिरपर
योमशिहै उसके ऊपरमच्छ
रतुल्यस्थितहै ऐसा शेष·
नागकुंडलीआकारहोकेहै
उसकूर्मकीपिठीऊपरस्थि

तहै जैसस्तत्रेदी तेहदीन्याकी
सोभताहै और क्रमेतादेह
स्कंध शिर पुछ नाल श्रोणि।
पेरआदिक अंगोकाप्रमाण।
कहतेहै। शोक्रमे आयोहै।

वपुःस्कंध शिरः पुछ नाला
श्रि प्रभृतीनिच मानेन तः
स्य क्रमेण कथयामि प्रय
त्नतः। शोकोशतसहस्रा
णि योजनानि वपुःस्थिते
तदर्धेन भवेत्स्कंधं पुच्छार्धे
न हिमालिके।

इशानील ·१··············
उसको सौ हजारके साथ उ
ण १··················
इतने योजनविस्तरदेहका

१ण प्रमाण है इसथों प्रथं पुक्वटा
वि. प्रमाण है पुक्वथों ग्राधा ऊकि
२१३ टा प्रमाण है । दशकोड जोज
न स्कंट गुडेटा प्रमाण है सत
कोडजोजन म[illegible]कडेटा प्रमा

2/3

दशकोटिमिते स्कंदे सप्त
के सप्तकोटिभिः नेत्रयो
र्नरेनम्य कोटिरेका प्रमा
णतः । ग्रावकोटिद्वयेन
च त्रिगुणेनच पादयोः ।
अंगुलीनां नखाग्रेषु योज
ना शतसंख्यया ।

ण है इककोडजोजन जिस
टनेमोटा अंतराल है दोको
डजोजन ग्रावजिसटा त्रय
कोडजोजन पैरोंका प्रमाण

जिसका नाभींके ऊपरतक ऊं
गलीका प्रमाण दशहजार
योजनतक। इसतरेकूर्म-
काविधान आदियामलविच
लिखाहै उसकेऊपरसमही।

एवंकूर्मविधानेन कथि
तेबादियामले तस्योपरि
स्थिताचैव समद्वीपयुता
मही। कूर्माकारे लिखे
चक्रे सर्वावयवसंस्थिते
पूर्वभागे शखेनस्य पुच्छ
पश्चिम मंडले।

पोंके सहित पृथिवी स्थित
है। कूर्मके आकारचक्रलि
खना संपूर्ण अंगोंके सहि
त पूर्वपासेउसकामुखक।

रम ल्पकरना पुष्पाञ्जिम पासे
वि॰ जानजी इसवक्रविच पूर्व प
२१४ श्चिम होर दक्षिण उत्तर वेध
जानना ईशानकोणदा नैऋ
तकोणदे माध्य वेध अग्निको

णदे पर लिखेहोये वेधंच
दक्षिणोत्तरे ईशाने राक्षस
वेधं वेध माग्नेय मारुते ।
नाभि शीर्षवस्त्रघाट कु
क्षिपुच्छेषु संस्थितं नारा
यणांकितं सम्मि स्फोटिय
तेन चिन्तयेत् ।

एदा वायुकोणदे माध्य वेध
होंदा है । होर नाभि शिर
वाले पर कुक्षि पुच्छ इनां वि
च स्थितयो नव नव नक्षत्र है

इनोंविच शनिश्चरकों यत्नक
रके चिंतन करणा विचारना
अतिवृष्टि वडी वर्षा अनावृष्टि
वर्षा नेहोणी मूषका हूहे श

अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषका
: शलभाः शुकाः स्वचक्रंप
रचक्रंवा सप्तैता ईतयः स्मृ
ताः । कृतिका रोहिणी सो
म्ये कूर्मनाभित्रयंगते सा
केता मिथिला चंपा कोशां
बी कोशिकी नद्या ।

लभा शलायों शुका तोते
स्वचक्र अपणा सेनासमूह
परचक्र शत्रुकासेना आदि·
सप्तराय पहसना ईतिकही

रत्न हीहै इनकेवेधनेसे राज्यनाश
वि होताहै। कृत्तिका रोहिणी
३५ सोम्य मृगशिरा पह येनक्षत्र
कूर्मवेदी नाभिविचस्थितेहै सा
केता अयोध्या मिथिला चंपा
215
कोशांबी कौशिकी। अहि:
अहिच्छत्रे गयावेनी सेन:
वैदिश मेखला कामरू
प्रयागव मध्यदेशो वि
नश्यति।
छत्र गया अवेनी सेनवेदी
मेखला कामरूप देश प्रया
ग पहकूर्मवेदीनाभिविचस्थि
त देशनाशहोतेहै शनिकी
स्थितिहोणेसे फलहोताहै।
सोहे आर्द्रा पुनर्वसु तिष्य प

इतीननक्षत्र कूर्मेदेशविभाग
स्थितहै गौडदेशसहित हस्ति
वेधदेश पंचनाद कामरू ।
वैदेहदेश और मालवदेश
रेवानदीकातटकिनारा वन
गौडे पुनर्वहस्तिवेधे कूर्म
स्य शिरसिस्थिते सगौडो
हस्तिवेधश्च पंचनादश्च ।
कामरूः । वैदेहश्च तथा
रेवा मालवस्य तथैवच
रेवातटे वनेवासः पूर्वदेशे
विनश्यति
वास पूर्वदेश पूर्वमेंस्थितहै
इननक्षत्रोंकोवेधहोवे कू
र्मविच औरसर्वतोभद्रचक्र
विच अथवा इनोंनक्षत्रोंवि

२० चशानिक्षावे मांपूर्वेस्थितदेश
वि नाशहोतेहै । अश्लेषा मघा
२११ पूर्वाफाल्गुनी पह त्रय नक्ष
त्र अग्निकोणस्थितपादविच
है अंगदेश वंगदेश कलिंग

216

अश्लेषाच मघा पूर्वा पादे
आग्नेय गोचरे अंग वंगौ
कलिंगश्च कर्वजश्चैव ।
कोशलाः । डाहलाच ज
येंद्रीच तथाचेवलेजि
का उडीयाने वराहेच य
ग्निदेशे विनश्यति

देश कर्वज कोशलदेश ।
डाहलादेश जयेंद्रीपुरी ते
सेही लेजिका उडीयाने उ
डीषा वराहदेश पहअग्नि.

कोणस्थदेशनाशहोताहै ।
उत्तराफाल्गुणी चित्रा हस्त ।
एहत्रयनक्षत्रदक्षिणकुक्षि
विचारियतहै दर्दुरदेश महेंद्र
देश वनवास सिंहलद्वीप ।

उत्तरा चित्रहस्ताव दक्षि
णकुक्षि माश्रिताः दर्दु
रेच महेंद्रेच वनवासेच
सिंहले । तापी भीमरथी
लंका त्रिकूटे मलयस्तथा
श्रीपर्वतेच किष्किंधा चे
तिनश्यंतिदक्षिणे

तापीनदी भीमरथी लंका
पुरी त्रिकूटपर्वत मलयप
र्वत श्रीपर्वत किष्किंधा प
र्वतदेशदक्षिणकुक्षिस्यदेश

रण· नाशहोतेहै। स्वाति विशा
वि· खा मैत्र श्रवणधा पूर्व त्रय
२१३ नक्षत्र कूर्मके नैऋतकोण
मेंस्थितहै नासिक नाशिका
मवक स्वराष्ट्रदेश शूनटे·

217

स्वाति विशाखा मैत्रे च कू
र्मे नैऋत्य गोचरे नासि·
कं च स्वराष्ट्रं च शूनमाल
वकस्तथा। वली तथा
प्रकाशं च भृगुकच्छं च।
कुंकुमं खेटापुरं च मोटी
रे देशाः नश्यंति च देशाः

श मालवदेश। वली तैसे
ही प्रकाश भृगुदेश कच्छ
देश कुंकुम खेटापुर व ग
ना मोटीर पहदेशनाश

होते हैं वे अन्तका लक्षण क्त
ओं में शान्ति होवे तो ज्येष्ठा मू
ला पूर्वाषाढा पहरू मेरी
उक्त विधि स्थित हैं पारेवत ।
मडेंट कफदेश अवंती होव

ज्येष्ठा मूले तथाषाढा ।
उक्ते कूर्मस्य संस्थिताः ।
पारेत मडेंट कफे अवंती
पूर्वमालवम् । अभासव
वैरहीरं सौराष्ट्रं चससैंट
वे जनस्यस्य विनश्यति ।
स्त्रीराज्ये उक्तपीडने ।

पूर्वमालवदेश । अभासह
त वैरहीप सौराष्ट्र मैं पर
गलस्य जो देश है और स्त्रीरा
ज्य पहना मस होते है एकको

रण शनिपीडितकरे तो । उत्तराषा
वि ढा श्रवण धनिष्ठा पूर्व त्रयन
२।८ नेत्रकूर्मेरे वायुकोणस्थित
पारविवेहू गुर्जर यामुन म
218 हदेश सरस्वति जालंधर वा

उत्तरादित्रये कूर्मे पादेवा
यव्या गोचरे गूर्जरे यामले
वैव महदेशे सरस्वती ।
जालंधरे वाहणेच वाल्
कोदधिमेशुने मेहश्रंग
विनश्यंति येचान्येकोण
संस्थिताः ।

हण वालक उदधि सशूद्र
स्यदेश मेहश्रृंग पहदेशना
शकोशाम झोटहैन होरवी
नो वायुकोणमेस्थितदेशोंके

शतभिषाथोंलेके त्रयनक्ष
त्र शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा
उत्तराभाद्रपदा उत्तरक्रान्ति
विवक्षितहैं नेपाल कीर

शतभादि त्रयेचैव उत्तरां
क्रान्ति माश्रिते नेपालेकी
र काश्मीर गर्जने त्वरसा
नके । मथुरा ब्रेकदेशं ।
व त्वेषा केदारमंडले हि
माश्रयाश्च नश्यन्ति देशा
ये चोत्तरा श्रया ।

काश्मीर गर्जन त्वरसान
मथुरा होर ब्रेकदेश त्वेष
देश केदारमंडल हिम वर्फ
वालेदेशनाशहोनेहै जब

रण उत्तरक्रान्तिमें शनिहोवे ।
वि॰ रेवती अश्विनी याम्य भरणी
२॥१ इन नक्षत्र ईशानकोणस्थ
पादविचस्थित है गंगाद्वार

रेवती वाश्विनी याम्य पा
दे ईशान गोचरे गंगाद्वारे
कुरुक्षेत्रे श्रीकंठे हस्तिना
पुरे। अश्ववक्त्रैकपादश्च
गजकर्णो म्लेच्छवच विन
श्यंति चैते सर्वे देशा ईशा
नगोचराः ।

हरिद्वार कुरुक्षेत्र श्रीकंठ ह
स्तिनापुर दिल्ली । अश्ववक्त्र
किन्नरदेश एकपाददेश ग
जकर्णदेश होरबी ईशान

कोण स्थ देश नाश होते है । ज
व शनिश्चर दे राजा अपणे देश
विच आवे तो अपने उस देश को
यत्न से रक्षा करे और पर शत्रु के

सौरिः स्वदेशगो यत्र तत्र य
त्नेन रक्षयेत् परदेशस्थिते
कार्या विग्रहे पृथिवीपतिः
यत्र स्थः पीडयेत्तत्र वेधस्था
ने तथैव च देशानामसंगमः ।
सौरि भंगदाता न संशयः

देश विच शनि होवे तो युद्ध करे
शत्रु के साथ राजा तो जय होता
है । जिस स्थान विच शनि होवे
तो अथवा जिस स्थान को वेध
करे और जिस देश दे नाम नक्ष
त्र विच होवे उस देश को अति भ

रण गकारदाहै इसविचमैशायनही
वि है। परसारीपृथिवीदाक्रमैच
२२. क्रकहाहै जिसविच क्रांतिका
थी भरणीतक अवदेशांदिवा
पृथिवीक्रमैं समाख्याने क्र
तिकादियमानिके देशांथि
ख्यवस्थादि वर्णक्रमैंचल
हुये। पूर्वके समालिख
देशनामहेपूर्वके देशक्र
मैंभवेनत्रयत्रमोदितयंततः
रक्रमैकहनेहै अपने अपनेना
मनक्षत्रोंकोलिखने। पूर्वोक्त
क्रमसेलिखने देशक्रम देश
केनामनक्षत्रोंकोलिखणा।
देशक्रमैविच जिसस्थानवि
वशनिहोवे उसदानक्षत्रहोगा

220

है। नगरक्रमें नगरदेनक्षत्र
थों लिखणा उसनक्षत्रकों प
हिले लिखीके बाकीकेनक्षत्र
पूर्वोक्तरीतिकने लिखने इस
विचभीशनि जिसस्थानहोवे

नगरे नागरं ऋक्षं ऋक्षादौ
लिख्य पूर्ववत् सौरिस्था
ने भवे दुष्टं वेधस्थाने त-
थैव च। नेत्रजे नेत्रभावा
दौ ऋक्षाक्रमे यथास्थिते
सौरिस्थाने विनाशः स्याज्ज्ञा
यते च महद्भयम्।

उसजगा दुष्टफल होंदा है अ-
थवा जिसस्थानकों वेधकरे
उसजगाबी अशुभफलहोंदा
है। नेत्रक्रमें लिखणा होवे

२० तो देवदानवतव श्रादविचलि
वि खता वाकीके सव यथास्थि
२२। तसर्वोनक्रममेंलिखता श्रा
निनिमस्थानविचहोवे उस.
221 दाविनाशहोताहै होरवड़ा.

गृहकूमें समालिखे गृह
हारभाव स्थितम गृहस्वा
म्यंसू सूर्यंतत्कलावीत्वे शु
भाशुभ । ग्रहमध्यस्थित:
सोपि: शोकसंतापकार.
कः हारेविघ्नप्रदातेयोपा
वकेवह्निदाहकः ।

भयहोताहै होरग्रहकूमे.
कोलिखीके गृहदेस्वामीदे
नत्नग्रहोंनतत्तेटके उसको
वरकेदरवाजेकेसामने ।

हर्षमंत्रीकेचक्रको चरमेंस्था
पनकरीके शुभअशुभफल
दिखोला । यदग्रहदेमध्य
विचसेरोरिशानिस्थितहोवे शे
कहेहावसेलापकरदाहै हार
विचहोवे तोविघ्नकरदाहै अ

संग्रामोस्थ स्थितोनिरूपम
साध्यो मंत्रिणमपि सिंहा
सनगते सते तेजस्वी भी
घण्ठकृतिः

त्रिकोणविचहोवे तो शत्रिदा
हकरनाहै । इसको संग्राम
शुद्धनिरूपसाध्यहोंदाहै
योमंत्रियोंकोवीअसाध्यहोवे
इसकोमंत्रीवीनेहटासकदे ।
सिंहासनसेहतकनजत्रमेंरा ।

रा० ज्याभिषेककियाजावे तो वडेते
वि नवालाहोताहै। वलविनहो
२२२ ताहै महाक्रोधी ओरप्रजाको
पीडाकरणेवालाराजाहोताहै
तत्कालिकचेद्रमामेंगतथोत

वलविलो महाक्रोधी प्रजा
पीडाकरो नृपः तत्कालेंद्व
गतेत्रते क्रूरनिर्वधनादि
के। शुभावस्था शुभेलग्ने
सेष्याष्या नृपआसने ।

सवेहै होरवहनतन क्रूरग्र
हकेवेधसे पीडितनहीहोवे
शुभअवस्थाहोवेचंद्रमा हो
रलग्रशुभहोवे ऐसाविचार
करके राजाको आसनमेंव
ठाण राज्याभिषेककरना।

घरके दक्षिण दिशा में शनि र
हते तो है नैऋत कोण में होवे
तो राज सदा भय होता है । वा
रुण पश्चिम में शुभफल देता
है वायु कोण में शून्यफल हो

ज्ञेयो स्वस्थप्रदो याम्ये राज
मे राजमाद्भये । वारुणे शु
भदो ज्ञेयो वायव्ये शून्यता
प्रदः अनिलाभप्रदः सौम्ये
शाकरे सर्वसिद्धिदः ।

ता है अर्थात् घर शून्य होजा
ता है होय उत्तर विषे अनिला
भ करता है ईशान कोण विषे
होवे तो संपूर्ण सिद्धि होता है
जब शनि बलवान होवे तो
माञफल करता है जो बल र

र.ल छिन्नहोवे तो खलकरताहै ज
वि. वइकीवारी विमजगाको छ।
२२३ मेपचकको शनिवेधकरे उ।
ग्रस्थानविववडा विघ्नहोताहै
223 इसविचमेसंशयनहीहै जटउ
मोरि वेलाधिकोउग्रः खल्प
वीर्यः खलावहः प्रकटा।
पीडयेयत्र भाउजः छमेप
चके तत्रस्थाने महाविघ्ने
जायतेनात्र संशयः उग्र
स्थानगतेमेट कनेखेतत्र
शांतिके।
उग्रस्थानविषेशनिहोवे तोशां
तिकरणी येशांतियामल
तेत्रविचेसर्वविघ्नहरक
रणेवालेलिखाहै । ।

एह कूर्मचक्र वडा चक्र है श्री
रियामल विषे लिखा है त्रि-
काल विषय ज्ञान भूत भवि
ष्यत वर्तमान जिस चक्र में

यत्र के यामले तंत्रे सर्व-
विघ्न विनाशके । कूर्मच
क्रे महाचक्रे कथिते श्री
रियामले त्रिकाल विष
यज्ञानं प्राणिभ्यो येन ज्ञा
यते ।

होता है पृथिवी कूर्म कृति
कादि लिखणा देश नक्षत्रा
दि लिखणा देवदा कूर्म हो
वे तो जेवदा नक्षत्र आदि वि
षे लिखणा जद यह हवदा
कूर्म लिखणा होवे तो घरे

रण दे स्वामिना नामनक्षत्रलिखे
वि ण आदिविषे इतिक्रमेचक्र
२२४ अयमर्थः पृथ्वीक्रमेक्षेत्र
काहिलिखेन देशक्रमेदे
शनक्षत्राहि नगरक्रमे।
नगरनक्षत्राहि गेहक्र।
मे गेहनक्षत्राहि ग्रहक्र
मे ग्रहस्वामिनक्षत्राहि।
लिखेन इतिक्रमेचक्रे।
अथपद्मचक्रे पद्माकारे
लिखहके मध्यपत्रेमध्यो
भने कोष्ठके नवकेम।
ध्ये पद्मचक्रे प्रजायते।
अथपद्मचक्रकहतेहै कम
लदेआकारचक्रलिखणा
आठपत्रैकरकेमहिन।

224

ऐदर उसदे विच नौं कोष्ठक
होंदे हैन पेसा पद्म चक्र होंदा
है इस विच कृत्तिकादि त्रय
त्रयन क्षत्र मध्य कोष्ठों ले

कृत्तिकादीनि भान्यत्र त्री
णि त्रीणि यथाक्रमम् म
ध्ये कोणादि तद्वौत सप्त
विंशति विन्यसेत्। नव
खेडापदीक्षीर्ये नवभागे
षु संस्थिता यत्र खेडे स्थि
तः सोऽपि सखेडस्य विन
श्यति।

के पूर्वादिक्रम से ईशानको
णन कलिखणे सताईनक्ष
त्रइन कोष्ठकों मे। तो खेड

रल पृथिवीस्थितनेहै जिसकेवेडवि
वि च शनि स्थितहोवे सोकेडना
२२५ शकोनाशहोताहै ।

225

अथ फणीश्वरचक्र कहने है
कृत्तिकादों लेके इसचक्रवि
च नखत्र लिखेने चक्रसर्पा ।
कार सतरेखोमे लिखणा ।
उसविच एकनाडीविच वेध

अथ फणीश्वरचक्रम् कृ
त्तिकाद्यं लिखेच्चक्रं सर्पा
कारं फणीश्वरे सप्तनाडी
समायुक्ते नक्षत्रवेधं विलो ।
कयेत् । नाडीकेक समा
योगे जेह द्वीपादि गणने
सप्तद्वीपाः क्रमेणैव नक्षत्रेषु
रिं विचिंतयेत् ॥

देखणा होर इक इक नाडी
विच जेहडे द्वीप आदि सप्तद्वी
प द्वीपक्रमसे गिणने इनो।

विच शनिश्चरदा विचार कर
ना। प्रथम जेबुद्वीप १ आगे
शाकद्वीप २ कुशद्वीप ३ क्रौं
चद्वीप ४ शाल्मलीद्वीप ५
गोमेधद्वीप ६ पुष्करद्वीप ७

जेबुद्वीपस्तथा शाकः कु
शः क्रौंचश्च शाल्मलिः।
गोमेदः पुष्करद्वीपः पी
डंते सौरिपीडया ॥

यह शनिश्चरदी पीडा करके
पीडित होंदे हैन जिसनाडी
विच शनि होवे उसद्वीपको
पीडा करदा है।

इतिफणीश्वरचक्रं

अवसर्पकालानलचक्रक
हते है ऊर्द्धमाहि इति लिखी
रेखा त्रयलिखणी उनके अ
ग्रभागविषे त्रिशूलबणाने
और त्रयटेढीरेखालिखनी
टेढीरेखाकोणविचलि॰
खणीयो टेश्रृंगबणाने ।
मध्यमेंजो सूलहै उसटेढेढ

रल है हंसदेहे हंस थोंलेके सूर्यदेन
वि. नक्षथोंलेके नक्षत्रलिखेणे
२२१ सूर्यजिसनक्षत्रविचहोवे सो
सूर्यदान नक्षत्र जानना साभि

2227

अथ सूर्यकालानलचक्रं।
कुंडंगाहि त्रिशूलाग्रा लि
ख लिषेत्वक सेस्थिता: हेहे
नाड्या स्थिता कोले श्रृंगाग्र
म नेत्रेवव। मध्य त्रिशूल
दंडाग्रे भाउ भाये भमेउल
साभिजि नक्षत्रानध्या सध्य
मार्गेण सर्वदा।
जित अभिजित सहित नक्ष
त्र चक्रमे सध्यमार्गमेदेने।
जिस स्थानमे जिसदे। नाम
दानक्षत्रस्थित हो उसका शु

भाशुभफलकहतेहैं त्रिशूला
यः स्थितयोतीननक्षत्रहैं इन
मे उद्वेग वध बंधन फलहो
ताहै । आठदेवोमेजयलाभ

नामऋक्ष स्थितेयत्र हेतथे
तत्र शुभाशुभे प्रयोगतो ।
स्थितनक्षत्रे उद्वेगो वधबंध
ने । देवोष्टकेजयो लाभो
ऋक्षषट्के तथाऽत्रतः शूग
युग्मेतुजः भंगः स्वम्ः शू
लत्रये स्फुटम् ।

फलहोताहै तैसहीवेनक्ष
त्रमेफलहोताहै दोनोशूलो
मे रोग होर भंगफलहोताहै
होरतीनोशूलोमेस्वम्फलहै

रण विवाहमेंविग्रहलड़ाईमें हो
वि. युद्धमें रोगमेंगमनयात्रा।
१२८ मे इससचक्रकोविचारणा प
रसूर्यकालानलचक्रयत्न.

228

विवाहे विग्रहे युद्धे रोगा
ते गमने तथा सूर्यकाला
नले चक्रे ज्ञातव्यन्न प्रय
त्नतः यःसूर्यकालानल
चक्रवीर्यं संप्राप्य युद्धे प्र
करोति समकं महेन्मन
ल्पा मपि वैरसेनां सेनांप
ति वोड शिवाभ्रमाला

से जानणचाहिये अवसूर्य
कालका प्रभावकरनेहै ।
यो सूर्यकालानलचक्रके.

वीर्यकों घामहोकर युद्धको अच्छीतरहकरताहै सेनाप-
तिः सोवहीजो शत्रुमेनाहै उसको मारताहै जैसेवायु वह
लोंके समूहकोंनाशकरता है केआचार्योंकामतहै कि
आवश्यककृत्यहोवे तो स्ह-
र्थ वइ सा तात्कालिककरणे करकेफलदेतेहैं ॥

इतिस्वर्थकालानलचक्रम्

श्रवचेड्कालानलचक्रलि॰
खितेहैं ओमाकारगोलपरि॰
धिवणाना हेडोकरकेपूर्वा॰
दिदिशामें परस्परवेधितक

ओमाकारे हेडभि ज्ञानग
ले चक्रे चोड़े दिन्ह शूला।
णि कर्यात् नाराचक्र पूर्व
मध्ये त्रिशूला हेय तस्मिन्
मध्यमार्ग क्रमेण। त्रिशू॰
लमेयच बहिःस्थितेच म
ध्यस्थिते मध्यगते बहिस्थ

रना दिशाकेहेडोकेप्रदेशोमें
त्रिशूलवणाने इसचक्रमेंन
तेत्रगण पूर्व त्रिशूलदेमध्य
थोदेने मध्यमार्गमेदेने।
त्रिशूलविच इकनत्रदेने

१० इकनक्षत्रवृत्तेदे बाहरदेला
वि इकहृतदे अंतरदेला इकम·
१२: ध्यविषेदेना भीइकबाहरदेना
इसक्रममेंनक्षत्रलिखेने पर

भूयहिस्थल मिति लिखता·
ला मेस्थापये मंडलभिड
यिस्थात । स्थानानि चेला
नि भवेनिचक्रे स्थानत्रय
स्यात्रफलप्रदिष्टं स्थला ।
त्रिनस्थायिहि मध्यगास्य
गभीडवेष्टव यतः खरेहेः

नक्षत्र इसमें चेइनक्षत्रथो
लिखेला इसमें जिसनक्षत्र ।
विच योग्रहहोवे सोलिखना
इसचक्रमें तीनस्थानहोते·
है उनकाफललिखतेहैं ।

230

मूलाश्विन होर मघाग वाह
र होर गर्भगत रूनोत्रयश्रा
नोहाफल स्वरशास्त्रजाने
वालेलोकहाहै । संसिद्धव
लियो असिद्धवलि सिनोश्वो
संसिद्धवलोद्भव नामधि
स्य यत्राश्विने नत्स्वरला
वर्णिते वाद्यफलेशास्त्र ।
विनिश्चयोस्ये महाद्वेवश्
मिश्रजो हितायें ।

वर्णाद्योरा योनत्तत्रेहै उम ।
नत्तत्रेश्वो स्वरशास्त्रवीविधि
जाननेवालोनोफलकहना
स्वरशास्त्रदे निश्चयश्वो उत्प
त्रयोफलहै सोराजश्रोके
हितवालेकहै । ।

रण त्रिशूलमें तो मननक्षत्र होवे ।
वि. तो भरम होता है युद्धमें गर्भ
श्रा विवनक्षत्र होवे तो विजय ।
होता है जो बाहर नक्षत्र हो
वे राजा का तो भंग होता है

431

मस्त त्रिशूले विजयश्च ।
गर्भे भंगो बहिः स्थचन्द्रः ।
नामधिसे गते छत्राया
मधिकलिताया वेदेहि
ठे शाकेमितेजेयः स्यात्

जवनक्षत्र रागनका शुक्र
पक्षका भोगपती कल्पना
करेवण नटवीचो था वर
इहिय पचमा ईश जावमा
श्रके वारमें नक्षत्र विच वेर
मा होवे तो जय होता है ।

जन्मदा अष्ठमा पंचदश पंड
मा द्वाविंश २२ वाहिमा नक्ष
त्र शशांक वेइ मादा होवे ।
मो ग्रहदा देहदे साथ योगहो

जन्माष्टमे पंचदशे शशां।
के द्वाविंशमे ग्रहदेड ।
योगः नेत्रेव संग्राम बला
वधित्वा कालस्य पूर्णत्व।
मुपादिशेति । पूर्ण काले
नेष्टदे लग्ननाथ होवावी।
ये चाष्टमे वर्णवीर्ये ।

वे नो नेत्रेव उसीमें संग्राम ।
बलदी अवधी केजाननेवाले
कालदी पूर्णताकहतेहै ।
पूर्णकाले कालस्ताहोवे उस

२ए वक्रे लग्नदास्वामि शुनिष्ट
वि. फलदे देणेवालाहोवे होर ।
३३२ होतायोंहे लग्नमोवलरहित
होवे होरवर्णखरदावलश्र

232

मस्तः मंवे संगोरे भूमिहीने
नस्मिन्नेव जीवलाभोनला
भः । पनचक्रे वेइकाला
नलाछे स्थानहोदे गए
ने तिसमर[illegible] नढिस्पारे
गएने यामिनीश लस्मा
ढिस्पा झएने वेइयानः

शुभहोवे तो संपूर्णोंकामः
सहोताहै भूमिवलथोंहीन
मगर गुरुविषे जीवमात्रव
वताहै लाभनेहोता । पहवे

इकालानलचक्रकहाहै इ
समेंस्थाननक्षत्रको आदक
रके जिसनक्षत्रविच सूर्यहो
वे उसकोगिणना उसीमेंच।
इसाकोंवीगिणना उसीमें।
वेइसपानराक्षकोंवीगिणेकेफ

उक्तफल मनुष्यास्या कुह
मेस्या वेपरीतेन प्रविवि
तेनगरभेगे वक्रमिहे भू
पति गच्छेत्।

लक्षण। जो यहोंकी स्थि
ति एवोक्तप्रकारथों विपरी
तहोवे तो पूर्वोक्तफलवी श्र
मथाहोंदाहै यहचक्रविचा
रकर भूपतिराजा नगरभें।
गको यात्राकरे अर्थात् न।

रण गरभंगाकरणेवाले इसचक्र
वि कोअवश्यविचारणाचाहिये
१३२ जोइसचक्रमे जयनहीआवे
तोकोटचक्रसे नगरभंगदा
233
विचारकरनी जोदोनोमेनेहो
वे तरउतनाकोवलगनाचा

नगाभ्यंतरगो विधो विधुरि
पो वा स्था त्रिशूलाख्येन च
क्राभ्यंतरवर्तिनो यदिभवे
त्संयमः हरिस्तदा

हिये। तत्र तिसवेइकालान
लचक्रविषे चंद्रमाअंदरहोवे
होर विधुरिपु चंद्रमादा शा
त्रु राहु वाय त्रिशूलविच ।
होवे होर चक्रदे अंदरवर्तमा
न सर्यदे दृष्टिवीहोवे तद

वाजि घोड़े वारण हाथी रथ
शस्त्र नाना प्रकारों के योद्धे
इन्हों करके युक्त जि सेना हो
वे तट पौरयो ध्यायी है सो

सेयुक्ता अपि वाजि वार
ण रथैः शस्त्रैः नानावि
धैः पौराः सेना मवाप्रवे
ति समरे भेरीरवाकर्ण
नात् ॥
सेनाको भास होने है समर
युद्ध विषे भेरी यो बड़ा
नगारा है उसके श
ब्द सुणने थों ॥

इतिचंद्रस्यकालानलचक्रं

अथ घोरकालानलचक्रम्

अथ घोरकालानलचक्रकर
नेहे शलाकासप्तकमिति स
नरोबोलवुनी ह्योरमनरबोदे।
छीकरणेथों घोरकालान।

शलाका सप्तकेचक्रे लि
खिला वेद्रमादिनः त्रिशु
त्रिशुच ग्रहेषु नवग्रहयो।
दयो ग्रहाः यदेशे नामन
क्षत्रे दिनग्रहमादिजायते।

लचक्रवण्दोहे दुसचक्रवि
चवेद्रमादिनक्षत्रथोलेके।
तीननीननक्षत्रेमे ग्रहयादि
नवग्रहकल्पनाकरणे जि
सग्रहदेशेशाविचनामनक्षत्र
ह्योर दिननक्षत्रआदिथोलेके

२ए होवे उसदाफलकहतेहैं प
वि. कएकदा पृथकपृथक्फल
२३५ कहतेहैं । भानु सूर्यदेवदशामें
शोकसंतापहोताहै चंद्रमा
क्षेमलाभदेताहै मंगलमृत्यु
फलंतस्य प्रवक्ष्यामि एके
कस्य यथाक्रमं । भानुना
शोकसंतापः शशांकः क्षे
मलाभदः भूसुतो मृत्यु ।
माधत्ते बुधेप्रज्ञा प्रजायते
जीवेलाभः शुभं शुक्रे सूर्य
पुत्रे महद्भयं ।
करताहै बुधविषे प्रज्ञा बुद्धि
वृद्धिको प्राप्तहोतीहै । जी
वविषे लाभहोताहै शुक्र
विषे शुभफलहोताहै सूर्य

235

पुत्र शनिश्चरदेग्रेशविचमहा
भयहोताहै राहुदेग्रेशमेंदा
नपानहोताहै केतदेग्रेशवि
वमस्थहोताहै इसविचमेश

राहुण दानपानेव केतो
मस्थ नेमेशायः यात्राजन्म
विवाहेषु संग्रामे विग्रहे ।
पि वा घोरकालानलेच
क्रे ज्ञात्वा कर्म समारभेत

यतनहीहै । यात्राजन्मविवा
ह झेरघुइ होरलडाईविवे
पूह घोरकालानलचक्र ।
विचारकरके कार्यहाथमें
भकरना उचितहै ॥

236

इतिघोरकालानलचक्रम्

अथ शूठकालानलचक्रक
हतेहे मतेरबोवडि होरसा
नेरबोनिर्यक में चक्रवण
कर चेंडनक्षत्रथों ईशान

अथशूठकालानलचक्रे
मसरबोडव चक्रे चेडभा
ये भमंडले लिखिनाकल्प
ये चक्रे घंडेरा जयकाति
भिः । हिनक्षा क्रमणेन च
क्रे शूठमेघट करेरी ।

कोणथों नक्षत्रलिखकर ।
चक्रविच हे श्रेगकल्पना ।
करने जयदीइच्छावालेरा
जाने । हिननक्षत्रथों चक्र
में शूठादि हे श्रेग गिणने

रण शूठ संपुट कनेरी देउ कणा
वि ल वस्नोग पह हो ग्रेग स्व
१३७ श्राप्तदेजाननेवालेयोनेजा
नने जिसनतत्वविच वेइसा

237

देउ कणालके वज्ञ त्तात
थे स्वरवेदिभिः । यत्रस
मे स्थित श्रुइ स्ततादि ही
लि शूठके संपुटे नवभा
मत्र कनेरीत ततहि ।
भिः ।

होवे उसथोमयनतत्रशूठ
सतकहै श्रागे मो नतत्र
संपुटसतकहै श्रागेमय।
नतत्र कनेरी सतक होते
है। देउविध मो नतत्रहै।

कपालविषैमतनन्तमऺहै वर्त्ता
गविषै शुगालेके नन्तमऺहै एह
छोते गावानिर्णयहै । यिम ।
शुगविषै नामनन्तयुक्तक
टेडे धिस्यानिवर्णीणि क
पाले अन्तममके वर्त्ताग
र्णीणि धिमानि घड़गसे
व निर्णयः । यदेंगे नाम
नन्ते शुद्धकारसा जाय।
ने वहेय शुभाशुभे नसा ।
गूढकालानले स्थिते ।
बणेवालेदाहोवे असदाशुभ
शुभफल गूढकालानल
विविकहतेहै यो शुभफल
इसमेंस्थितहै । ॥

रण गूढमेलकभ्रंशविच नामन
वि क्षत्रहोवे तोविभ्रमभ्रांतिहो।
२३८ तीहै संपुटविचहोवे तोविज
यहोताहै कर्तरीविच नाम
नक्षत्रहोवे तोसमताकीयुद्ध

गूढस्य विभ्रमो युद्धे जयो
भवति संपुटे कर्तर्या सं
तरे युद्धे टेडे भंगोनसं
शयः ।

होताहै टेडविषे नामनक्षत्र
होवे तो युद्धविषे भंगहो
ताहै इसविच संशयनही
है परंतु नक्षत्र सेनापति
अथवा राजादा लेणा ॥

238

कपालसंज्ञकनक्षत्रोंमेंस्थि
तहोवे तो भस्महोताहै वज्र
विवहोवे तो महाभयहोता।
है एहशूळकालानलचक्र

कपालस्थे भवेद्भस्म वेज्रे
तस्य महाभयं शूळकाला
नलचक्रे वोद्भवं आदित्या
मले दिननक्षत्रादारभ्य।
योऽतुनामनक्षत्रे विचार्य
फलं वाच्यम्।

आदित्यामलविचलिखाहै।
दिननक्षत्रथों नामनक्षत्र।
तक फलविचारकरणा।
चक्रदेखणेथों स्पष्टमलूम
होताहै इतिशूळकालानल
चक्रम्॥

अश्वशशिसूर्यकालानलव
कक हुनेहै चयेरबोवडि हो
रचयचेछीलिखनी उनाथे
द्वादशारचक्रवणराहै उस

अश्वशशिसूर्यकालानल
वके द्वादशारे लिखिचक्रे
मेषादि द्वादशा लिखे नाम
युग्मेच नवेव ह्रेये भास्क
रवेद्वयोः । सिंहादिमक
रातेच भात्रुहोत्र भुदाहुने
कें भाटि कर्कपर्यंते चेष्टते
ये नसंशयः ।

विच मेषादिबारा राशी लिख
णी उनां राशी विच सूर्य वेद
माटे हैन्त अश्वान् राशी हेसे
जानने सिंहराशिओं लेके म

१ल कल्पराशीतक सूर्यदोतेत्र।
वि॰ जानला केभशो ककेटलक
२श्व॰ वेदमारा लेत्रजानना इस।
विवसेशायनहीहै। वेदमा

240

वेदलेत्रगाते सूर्य वेदलत्रे
व संस्थिते यायिनो विज।
य युद्धे स्थायिनो भंग मा।
दिशेत्। सूर्यतेत्रगातेव
दे सूर्यतत्रेवसंस्थिते या
तः स्यैज जयः स्थात दिम
के ब्रह्मयामले।

देतेत्रविच सूर्यहोवे होरवे
दमाकी उसविचहोवे तो यु
द्धविषे यायीदा विजयहोता
है स्थायीदा भंगकहणाचा

हिये। सूर्यदी राशिविचचंद्र·
मा होवे होर सूर्यवी उसी जगा
में स्थित होवे तो यायीदा रस
होता है होर स्थायीदा जय हो
ता है ए इह फल ब्रह्मयामलवि

सूर्ये सूर्यांगे संयुक्ते चंद्रे·
चंद्रांगे संस्थिते तदाकाले
भवेत् स्थायिः युद्ध तस्यविप·
र्यये। कर्तव्यं यदि चंद्रा·
र्कौ संहारः सन्यथो हयोः
यात्रायां युद्धकाले च चं·
द्रमेव हि लोकयेत्।

च लिखा है। सूर्य सूर्यांगन
क्षत्र वा राशिविच होवे होर
चंद्रमा चंद्रांगविच स्थित हो
वे तो उसविच सधी होते है।

स्व इसमें विपरीत होवे सूर्य चंद्रो
रो गावि च चंद्रमा सूर्यो गावि चहो
२४१ वे तो युद्ध होता है । कतनीसे
त्तक नक्षत्र वा राशिमें यदि
सूर्य चंद्रमा होवे तो दोनो से
नाका नाश होता है यात्रावि
वे और युद्धकाल विषे पहव
कविचारणा चाहिये ।
इति सूर्यचंद्रकालानलचक्रं

241

अथ संघट्टचक्रकहते हैं अश्वि
नीनक्षत्रसोंलेके सताईनक्ष
त्रलिखने त्रिकोणकेआका
रहोता है दोनों नक्षत्रोंकेवे·
धहोते हैं इसको लिखके आ·

अथ संघट्टचक्रे अश्विन्यादि
लिखेच्चक्रे सप्तविंशतितार·
कैः त्रिकोणनवभे वेधः क
नेऽस्तिर्यगाकृतिः अश्वि
नी रेवती वेधो वेधस्त्वाश्वि·
नि ज्येष्ठयोः मघा पौष्णे म·
घाश्लेषे अश्लेषा मूलयोस्तथा

कारवर्णना अथवेधकहते हैं
अश्विनी और रेवतीकावेध अ
श्विनी ज्येष्ठाका मघा रेवतीका
मघा श्लेषाका श्लेषा मूलाका·

रल परस्परवेधहोताहै ज्येष्ठाते ।
वि मूलाकावेधहोताहै संघट्टचक्र
२४२ मे सन्मुखनक्षत्रोंकावेध इसी
तरहसेजानना एवं इसीतर
ह चक्रविच नक्षत्रोंविचग्रह

ज्येष्ठा मूलकयो र्वेधो भ
वे संघट्टचक्रके एवं संघ
ट्टचक्रेच कार्यो नक्षत्रगता
ग्रहाः भूप नामर्क्ष संघट्टे ।
युद्धं भवति नान्यथा निर्वे
धो सौम्य वेधेच युद्धं ना।
स्ति नराधिपे ।

लिखेहे भूपराजाकेनामन
क्षत्रको संघट्टचक्रमे वेधहो
वे तदयुद्धहोताहै इसविना
युद्धनहीहोता वेधनेहोवे

तो अथवा शुभ वेध होवे तो
राजा का युद्ध नहीं होंदा । क्रू
र ग्रह का वेध होवे तो युद्ध न
स्काल मेंदा फल होवे है ठ हो
तो है युद्ध दी आ कां राजा राजा
क्रूर वेधे भवे युद्ध तात्काले
दाफल हठ युद्ध कोत्ती भ
वेद्राजा यथा भं क्रूर वेधि
ते । युद्ध हेषी भवे सौम्य
लग्न वेध विवर्जिते: सौम्य
क्रूर विभागेन मिश्रा मिश्र क्र
मेण व ।
करे यदउ मदा नतनक्रूरक
रके वेदिन होवे । यो शुभ ग्र
हो के वध में वर्जित होवे राजा
का नतत्र सो राजा युद्धका ।

रला द्वेषी का शत्रु होता है होरमें
वि. स्पग्रह क्रूरग्रहों से भेदकरके
२४२ मित्र शत्रु ग्रहों से भेदकरके ।
होर वक्रगतिग्रह अतिचारी
ग्रहों की गती करके युद्ध का

वक्रातिचारगत्याव युद्धम
त्रास्ति नास्तिच एकवेयग
नश्चन्द्रः क्वचि त्संग्राम सूव
कः । द्विवेधे वम्य माहेश्व
त्रिवृधे मत्यचातने शनिभौ
माके पानेस्न शशी विहल

यहिने ।
होरा होरने होरा पहला
नकरणा जो चंद्रमा को दूक
ग्रह द्वावेधहोवे नो कोई जः
गासे संग्राम को तत्तकर

ताहै। जोदोग्रहवेधकरे चंद्र-
माको तो श्रवणयुद्धकहणा
जोतीनग्रहवेधकरे तो सेना-
दानाशकहणा होर जद श
नि भौम राहु इनतीनोंग्रहोंक
रकेचंद्रमा विद्धहोवे जिसदि
तद्दिने जायते युद्धं तत्का-
लेचैव दारुणम ग्रहवेध
युते चंद्रे चतोपग्रहसंयुते
नैमे उसदिन उसीकालवड़ा-
दारुण भयानकयुद्धहोताहै
ग्रहवेधकरकेयुक्तहोवे चंद्र
मा होर चातउपग्रहकरके
युक्तहोवे। खानपानकास-
मायोगहोवे तद संग्रामयुद्ध
वड़ादारुण भयानकहोताहै

रम होरफलकहतेहै। शनिकरके
वि शुक्रचंद्रमा नाडीवेधविवगत
२४४ होवे नरनिश्चयकरकेवधोहो
तीहै वधोपलजो प्रहलहै उ
सेट सहित। भोमकरकेशुक्र
गतपात समायोगे संग्रा
मो दारुणो भवेत शनिना
चंद्रशुक्रेन नाडीवेधगतेन
व नरा हहि भवेन्नेवधो
पलभवेः ततेः भोमेनाग्नि
भवेत्तत्र राहुणा लोहपात
के भाउना चंद्रवानस्त सवे
सवे भवेत्तहि।
चंद्रमाहोवे तो अग्निभयहो
ताहै राहुकरकेशुक्रचंद्रमा
नाडीवेधयुतहोवे तो लोह-

पातहोताहै भाउसूर्यकरके
युतहोवे तो प्रचंडवायुचल.
ताहै सोमसूर्णोकवके युतहो
वे तो सपूर्णवातानहीहोता
शुक्रदा अगेलपात कावेध
होवे तो पासूफलिरीवर्षा.

शुक्रेण गेलपातेन पौष
वृष्टिः शशांकजः गुरुणा
पसुषो वातः क्रूरनाद्वा
दिसंभवः ।

होतीहै वेदूसादापत्ररुप.
उसदापुरुकेसाथ अगेला
मेपातहोवे तो वडाकठोर
वायुचलताहै झोर दिशा.
ध्यो वडाशाहहोताहै ॥

अबप्रस्तारचक्रकहतेहैं यथो
दशोर्ध्वका खडीरेखाकरणे
दशरेखा तिर्यक का आडीक
रणी इसचक्रमें इकसौ अष्ट
कोष्टक होतेहैं। कवर्गयोंहै

अथप्रस्तारचक्रम् यथोद
शोर्ध्वगा रेखा दशरेखाश्च
तिर्यगाः भवेयुः कोष्टका
लत्र सख्येयाष्टोत्तरंशतं
कवर्गो नवधा लेख्यं को
ष्टके प्रथमेष्टके ।

कखगघङ. उसको नवधाका
नौ प्रकारसे लिखेगा प्रथम
कोष्टकमें क अष्टममें ख द्वि
तीयमें सप्तममें चकारादि।

रण लिखने दूसरेमें च सप्तमें
वि च लिखणा होर दा ञादिवर्ण
४९५ तीसरे छेमे कोष्ठकमें लिख
णा ट तीसरेमें ठ छेमे कोष्ठक
में लिखणा यवर्ग होर शव
द्वितीये सप्तमे चाद्या षा।
द्यान्यस्य त्रिषट्के । यश
वर्गौ चतर्थैव अवर्गः पंच
मे तथा नव द्वादशकेता
द्या शेषाः पाद्या द्विकोष्
के
गे च तर्थेविच लिखने अ
वर्ग पंचमविच लिखणा न
वम होर द्वादशकोष्ठकवि·
च तकारादिवर्ण लिखणे ।
शेष बाकीके दो नवम दश

म कोष्टकमें उनोंविच एकआ
दि दोदो लिखले इनोंकोलिख
के आगे अथ पंक्तिटे क्रमकरे
अगले अक्षर लिखलेले चक्र
देखले स्पष्टमालूम होगा ।
बारबार अक्षरोंके संयोगसे
चलअक्षर संयोगे अश्विना
दिक्रमसे एव नेया नक्षत्र
का वर्ण मेषादि राशिमंडले
अश्विनी आदि नक्षत्र कल्पना
करले और एकएक वर्णवि
च एकएक नक्षत्र मेषादि ।
क्रमसे कल्पना करले कोष्ट
कोके ऊपर एकग्रह स्वामीक
ल्पना करने ग्रहोंका क्रमयह

२ग हैं। भौम शुक्र बुध चंद्र भाउ
वि. बुध शुक्र मंगल गुरु शनि श
२४७ नि बृहस्पति कोष्टकोटे ग्रन
हैं ष्ठों तात्कालिकचंद्रमा जा

भौमे शुक्रे बुधे चंद्रे भाउ।
सौम्ये मित्रे कुजे ग्रेह सौरि
शनि जीवे विरघा कोष्ट
कोपरि। कोष्टनरगतो
ज्ञेयश्चंद्र स्तात्कालसंभवः
तदधीने फलं सर्वं लाभा
लाभे शुभा शुभम्‌।

नना। उस तात्कालिकचंद्र
माके अधीन संपूर्ण शुभ अशु
भफल है। इष्टकालपर्यंत
जितनी गतघटी होवे उनोंको

सत्ताईकने २७ गुणने जोगु·
णफलहोवे उसविच सठादा
भागदेणा जोलब्धि होर शेष
होवे उसको अश्विन्यादिचंद्र
माहे ऋक्षविच जोडना सोता
त्कालविषेचंद्रमाहोताहै ।

इष्टनाड्योगताधिष्ण्यैः ष
ष्टिभागाप्त शेषकैः अश्वि
न्यादौ ऋक्षेन युक्ता ता·
त्काल चंद्रमाः ।

उदाहरण जैसे कृत्तिकाऋ
क्षघटी ५ इसको २७ कने गु
णनेसेहोए १३५ इसविच
सठांदाभागदेनेलब्धि २ मि
ली शेषबचे १५ इष्टेगतनक्ष
त्र अश्विनी भरणी दोथे सो·

रम लखिविचजोशी ४ होए गत।
वि. नक्षत्र तो तात्कालिक चंद्रमा
२४८ अश्विनी थों पंजमे नक्षत्र विच
होआ मृगशिरा दे पहिले पा
द विच चंद्रमा है । क्रूरग्रह
दे जेहड़ा नक्षत्र पाद अंतर
क्रूर होवे गते चंद्रे न शुभं ।
सर्वकर्मसु शुभ होवे शुभं
चेव मस्तारे चंद्र निर्णयः
विच चंद्रमा होवे तो संपूर्ण ।
कार्यों को अशुभ होता है हो
रजो शुभ ग्रह दे नक्षत्र पाद
विच चंद्रमा होवे तो शुभफ
ल करदा है पर प्रस्तारचक्र
विच चंद्रमा दा निर्णय है ।
होर सर्वगेसे आवेगे दरल

248

व शाखमास नाडीफलों का
यहींविचफलकरदेहैन श्रव
णे अआइईउऊऋॠ लृलॄए
ऐओऔअंअः एकदिनविचलाभ
करदाहै कवर्ग कखगघङ
एत्तविच चवर्ग चछजझञ ।

नाडीफलों यद्येवर्गो श्रव
णे दिनलाभदः कः प्रत्ते
एच मासेन ज्ञता‥ वय
ना नेते ।

मासविच फलदेनाहै टवर्ग
टठडढण जुन दो महीनेमें
होर तवर्ग पवर्ग तथदधन
पफबभम श्रयनमें का छे
महीनेमें फलकरदेहैन ।

२ल १२राशियोंके फलकहतेहै
वि चारस्थानविषे ऋनि सत १।१
२४५ १ १ सम १ सर्व १२ मेट ४ गुण
३ ३ष्ठ ५ मास १२ शेला १ इना
249
चत्वारः अनयः १११ सम
१ सर्व १२ नेत्रा ४ गुणे ३ ष
वः ५ मासाः १२ शेला १ ३
ना १२ सब राशीनो फल
काइमे। प्रश्नकाले विवा
हेवा याने जन्मनि संगरे।
शुभाशुभ फलं श्रेष्ठं सर्व
शास्त्रेषु गोपितम् ।
१२ इहराशीदेफलवैहै। प्रश्नका
लविषे विवाहविषे यात्रा
विषे जन्मविषे युद्धविषे पर
शुभाकवेइमाराफलश्रेष्ठ।

संख्या शास्त्रों में उसके है होरवी
कहते है । उदाहरण ३ शेला
मन २ युगाचार पंच ५ अष्ट
यः मन २ पंच ५ अंगके ६

उदा ३ शैला २ युगा ४
पंचा ५ इयो २ पंचा ५ ग
यो ६ युगाः ४ नागा ८ ।
बाण ५ रसा ६ भूता ५
मेषाद्ये उदका भ्रमी ।

युग ४ चार नागाश्च ८ बाण
पंज ५ रसा के ६ भूतापंज ५
मेषादिराशियोंके उदकप
हैहै । स्ठं विषुदिन वेदमा
विषुतणदोघटी मेगलवि
षे वहुतदिन उपविष मन

१८ दो मङ्गीने बृहस्पतिविषेम·
वि हीना शुक्रविषेपक्ष पंक्ताटि
२५· न कार्यसिद्धिदाकालकहा
है । सिंघपक्ष शनिश्चरदाव
ल्लैये टिनातला श्वेहे टिना
मारे नक्षत्रघे अनवश्व ·
ग्रेरो मासाः शुक्लपक्षप्रकी
तिनाः । सिंघपक्षे समाहे·
वि सर्वदैवविधिः सनः ल
ग्नस्येशाकोदेवि तस्याका
मिश्रयो ग्रहः ।

250

हे हेदेविपार्वति पहकार्यसि
द्धिदीविधीकहीहै हेदेवि हो
रलग्नदायो नवांशहे उसदा
यो सामिग्रहहे ॥

तद्दशात् जिसके वसथोंका
येमिद्दिका कालजानणा ।
तत्कालविषे उदितथोवेद्दमा
दानवांशाहोवे उसथोजान।
ना कैसेजानना पूर्वोक्तप्रका

तद्दशा त्कालविज्ञान शुदि
नोशाकसेज्ञया यथा पूर्वो
क्तविधिना तत्काले स्पष्
लोक्तनः । यथा यत्र नवां
शेशा स्तस्या द्वारा भियेवि
उः श्रेशेना ष्णशाके उणे
क्रवत्रुक्ते क्रते ष्ठनः ।

एकारके तात्कालिकवेद्दमा
वनाणा । जैसे जिसजगान
वांशस्वामीहोवे उसथोंग्रह
चारादिजानणे । ।

१ण अंशकने अंशगुणना उसवि
वि च ध्रुवक जोडना फेर उसवि
२५। च भुक्त अंश जोडने मूलांके
विभजेत अर्थात अंशाकी सं
ख्याका भाग देणा होर उदित
भुक्तांशकेन संयोज्यं मू
लांके भाजयेत्लब्धीः उदि
तांशो दिनेवाले इतना राशि
नवांशके । कालोदये स
मूलेन भुक्तकालो वशेषके
यो अंश होर उदितयोवाले ।
उनको राशिदे नवांशकने
गुणने । मूलकरके सहित
कालका उदयजानणा जो
शेषबचे सो भुक्तकालजा
नणा । षष्टि ४२ १. वाणवि

सूपंका १५ नेत्रदो २ पक्षदो २
अग्नि तीन ३ श्रुति दो २ रवि
बारा १२ यह क्रमसे वेदमा
भूसुत मंगल शुक्र अर्क हर्थे
बधि १० कोणविधु १५ नेत्र
२ पक्ष २ अग्नि ३ श्रुति २ रवि १५
लथा वेद भूसुत शुक्रार्क
शनि ज्ञ गुरव लथा तका
ले हें शाक कनि कला अ
वयुना लथा ॥

शनि गुरु बृहस्पति इनके अ
वेट श्रेक है तात्कालिक वेद:
मा जिस नवांशविच होवे ।
उसदा वर्ग करना उसविच अ
वे अपने अपने जोडने होर ।

रत्न अपने अपने जलकोंसे जल
वि. ना मलेहै एकादा भागदेना
२५२ उद्दिवानने आज्ञो शुद्धविधि

स्वगेणे गुलये सञ्ज्ञा ।
स्वलोके भोजयेत्स
धीः आज्ञो सेयो वि
यहेच वीक्तनीय मि
हे फलम् ॥

संधिविधि वियहलङाईवि
धि देखला चाहिये
यत्नसे पढफल

इतिप्रस्तारचक्रम ।

र.ल द्वादशारप्रस्तारचक्रविधेनः
वि. तत्र प्रस्तरोंके क्रमसेलिखेल
२५३ चार चार प्रस्तरोंमें इक इक
नक्षत्रदेणा नवांशोविधेश्चि

अथतेवरचक्रविधिः प्रस्ता
रेद्वादशारेच अस्तातरक्र
मेणच नवांशराशिमार्गे
ण चक्रं भवति तेवरु ।
यत्र मेषादिराशिस्थस्तत
कालेडुः प्रजायते ।
तेषेराशी तिनोंकेक्रमसेते
वरुचक्रवणताहै चक्रदेख
लेसेस्पष्टमालूमहोवेगा ।
जिसस्थानमें मेषादिराशियो
विषेस्थित तात्कालिकचंद्रमा
होवे उसकोग्रहोंकीदृष्टिहै।

253

वस्थों शुभाशुभमे सर्वफल
कहना अब ग्रहोंकी दृष्टि कह
ते है। त्रिदशे तीसरे दशमे ।
स्थानको ग्रह एकपाद दृष्टि दे
खते है पंचमे धर्मे पंचम नव
ग्रह दृष्टि वशात्सर्वे ह्येयेन
म शुभाशुभे त्रिदशे पंचमे
धर्मे चतुर्थाष्टमसप्तमे पा
दवृद्धया निरीक्षंते प्रयच्छं·
ति फले तथा ।
मरो पाद दृष्टि होती है चोथे
अष्टममे तीनपाद दृष्टि जानने
होर सप्तमस्थानमे चारपाद
का पूर्णदृष्टि होती है ग्रहोंके
होर तीसरे दशमे शनिके पू
र्णदृष्टि नवम पंचम गुरुकी

रल· पूर्णदृष्टि चतुर्थ अष्टम मंगल
वि· की पूर्णदृष्टि सप्तम सप्तमनोदी
२५४ पूर्णदृष्टिहोती है यह विशे।
षजाननला। ऊर्ध्वदृष्टि सूर्य
मंगल ऊर्ध्वदृष्टिहै बुध शुक्र
ऊर्ध्वदृष्टीच भोमाकों केक
रे बुधभार्गवो समदृष्टी
च जीवेन्दू शनि राहू तथो
श्रवो। मेष वृष सगः क
न्याः कर्क मीन तुला लथा
केकरदृष्टिहै भीगीदृष्टिहै।
बृहस्पति चंद्रमा समदृष्टि
वालेहै शनि राहू अधोदृष्टि
दृष्टिवालेहै। मेष वृष मक
र कन्या कर्क मीन तुला य
हराशी सूर्यादिग्रहोंकीउच्च

है यो जिसदी उच्चराशीयों सप्त
मराशीहोवे सोनीचराशिहै।
होर सूर्यादिग्रहोंके परमोच्च
अंशकहतेहैं दिशा दश १०

आदित्यादिग्रहेषुच्चा नीचे
यद्यस्य सप्तमे। परमोच्च
दिशो १० रामा ३ अष्टाविं
शति २८ तिथी १५ इंद्रियाः
सप्तविंश स्तथाविंश २०
सूर्यादीनां तथांशकाः

रामा ३ अठाई २८ तिथी १५
इंद्रिय ५ सप्तविंशति २७ वि
शति २० एह सूर्यादिग्रहों
केपरमोच्च अंशहै। ।

उच्चनीचचक्रम्

परमउच्चथोंआगे के राशीहै तै
तरजितने अंशहोवे उतने अंशा
पर परमनीच होता है नीचस्था
नथों क्रमकरके उच्च होता है

परमोच्चात्परे नीच मर्धच ।
क्रोश मात्रया नीचस्थाना
त्क्रमेणोच्च मुक्तोमो यत्र ।
विचरः । उच्च नीचाख्य यत
र्ये समस्थाने तऽच्युते उ ।
च्चनीच समस्थाने चेदैता
ना फलं क्रमात् ॥

जिसग्रह व्ययग्रह होवे । उच्चहोर
नीचथों चतुर्थ चतुर्थस्थानस
मसंज्ञक होता है उच्च होर नी
च होर समस्थान विषे चेदैता

रण स्थित होवे उसको ज्ञान करफ
वि लकहना । होर उच्चस्थान वि
२५। षे चंद्रमा स्थित होवे उसको ।
भोम सूर्य देखता होवे श्रेष्ठक

उच्चस्थाने स्थिते चंद्रे भौमा
दिभ्यो प्रपश्यतः श्रेष्ठके नो
शके ज्ञानं श्रवणे के हुते
प्रनः । स्वज्ञाने ज्ञानेय स्व ।
श्रा स्थलो के भोजये ततः
षष्ठि १० वाण विषु १५ नेत्र
पक्षा २ ग्रा ३ लि २ रवि १२
लक्षा
ने श्रेष्ठ ज्ञानना उस विच ध्रुवा
जोडना । फेर स्वज्ञानेति ।
अपने अपने ज्ञानको सेज्ञान
ना स्वलटे श्रेकारा भागदे ।

𑆟 𑆩𑆼𑆬𑆧𑆴𑆩𑆴𑆬𑆼 𑆩𑆾𑆲𑆗𑆴𑆢𑇀𑆫𑆾
𑆠𑆵𑆑𑆼 𑆓𑆶𑆟𑆑𑆳𑆢𑆼𑆑𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟𑆼 𑇅
𑆧𑆳𑆲𑇀𑆪𑆼 𑇑 𑆧𑆳𑆬𑆮𑆴𑆁𑆯 𑇑𑇕 𑆤𑆼𑆠𑇀𑆫 𑇒
𑆥𑆑𑇀𑆰 𑇒 𑆃𑆓𑇀𑆤𑆴 𑇓 𑆯𑇀𑆫𑆶𑆠𑆴 𑇔 𑆫𑆮𑆴 𑇑𑇒
𑆠𑆡𑆳 𑆤𑆽𑆩𑆼𑆲𑆵 𑇅 𑆮𑆑𑇀𑆫𑆩𑆳 𑆨𑆼𑆢
𑆮𑆑𑇀𑆫 𑆨𑆼𑆢𑆤𑆯𑆶𑆑𑇀𑆫𑆳𑆟𑆳𑆁 𑆓𑆶𑆫𑆶 𑇅
𑆑𑆼 𑆫𑆮𑆴 𑆩𑆾𑆫𑆴𑆟𑆳 𑆱𑇀𑆮𑆓𑆶𑆟
𑆑𑆳 𑆥𑆤𑆼 𑆩𑆥𑆯𑆥𑆤𑆂 𑇅 𑆱𑆩
𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤𑆼𑆤 𑆓𑆶𑆫𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆵𑆖𑆱𑇀𑆡𑆳
𑆤𑆳𑆢 𑆱𑆠𑇀𑆪𑆘𑆾 𑆧𑆶𑆣𑆯𑆶𑆑𑇀𑆫𑆾 𑇅
𑆠𑇀𑆫𑆴𑆑𑆾𑆟𑆱𑇀𑆡𑆾 𑆮𑆑𑇀𑆫𑆠𑆑𑇀𑆫𑆳𑆬
𑆱𑆩𑆼 𑇅
𑆤 𑆯𑆶𑆑𑇀𑆫 𑆓𑆶𑆫𑆶 𑆧𑆶𑆣 𑆫𑆮𑆴 𑆯𑆤𑆴
𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟𑆓𑆶𑆟𑆑𑆳 𑆃𑆑𑆫𑆤𑆳𑆢𑆼𑆓𑇀𑆫𑆲𑆳
𑆢𑆲𑆼𑆤 𑇅 𑆱𑆩𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤𑆮𑆴𑆰 𑆓𑆶𑆫𑆶
𑆑𑇀𑆫𑆼𑆲 𑆮𑆑𑇀𑆫𑆩𑆳𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆲𑆾𑆮𑆼 𑆤𑆵𑆖 𑇅

रण स्थानविषै राहु स्वर्थ होवे उप
वि शुक्र त्रिकोणविषे स्थित होवे
१५७ और तात्कालिक चंद्रमा शु
भग्रह स्थित होवे उसको ग्रह
नै देखते जैसा कोई जानेगा।

श्रमत्रस्थे नपश्यंति नाने
था इव विचराः सौम्यदृष्टि
स्थिते चंद्रे सर्वे सौम्ये प्रजा
यते क्रूरदृष्टिगते पैसा स
र्वहानि सेहूइये ।

नै होणा। शुभग्रहदीदृष्टि।
विच चंद्रमा स्थित होवे तो से
हत्त शुभफल होते है और जो
चंद्रमा क्रूरदीदृष्टिविच स्थि
त होवे तो सर्वहानि व डाभ

यथास होता है । एवं क्रूरतया
शुभग्रह करके युक्त चंद्रमा
होवे तो शुभफल सब होता है
क्रूरों करके युक्त होवे तो क्रू
रफल होता है शुभपाप मिश्रि

एवं शुभयुते चंद्रे सर्वं सौम्यं
प्रजायते क्रूरैः क्रूरफलं त
त्र मिश्रे मिश्रफलं भवेत् ।
रक्ते पीते सिते कृष्णे चंद्रे
वर्णे चतुष्टये ज्ञातव्यं
प्रयत्नेन प्रश्नकाले सदा
बुधैः

तेयुक्त होन तो शुभ अशुभ ।
मिश्रित फल होता है । रक्तव
र्ण पीतवर्ण श्वेतवर्ण कृष्णव
र्ण एह चार वर्ण चंद्रमा दे हैन

रत्न यह बात यत्नसे प्रश्नकालमें
वि॰ भी सदैव काल विद्वानोंने वि
२५८ चारणी चाहिये सूर्य भौम शु
क्र बुध गुरु शनि चंद्रमा राहु
यह ग्रह क्रमसे अवर्गादिव॰

रवि भौमः शुक्र सौम्यौ गु
रुः सौरिः शशीतमः वर्गे
शा अकवर्गादो ग्रहास्ते या
विचक्षणैः । यत्र शनिरु
च्चस्थः तत्स्थाने राहुरप्यु
च्चः यत्र शनिः नीचः तत्र

ऐों के स्वामी जानने बुद्धिवा
नोंने । जिस राशिविच शनि
उच्च होता है अर्थात् तुल रा॰
शि शनिका उच्च है सो तुलरा

शि राहुदाभीउद्ववजानणा है
रजो शनिदानीवहै सोराहुदा
वीनीवजानणा सूर्य भौम
रक्तवर्णहै जीव बुध पीतश्च
राहुपि नीलः स्याते रवि ।
कुजौ रक्तौ पीतौ जीवबु ।
धौ ग्रहौ शशि शुक्रौ सितौ
वर्णौ कृष्णौ राहुमन्दयोः
हैहै चंद्रमा शुक्र श्वेतवर्णहैं
शनि राहु कृष्णवर्णहै ।

रण ग्रहगौरइति स्निग्धगौरेवर्णवि
वि॰ चंद्रमा होवे उसवर्णका स्वा
२५९ मी योग्रह होवे उसग्रहका यो
वर्ण कारंग होवे वहरंग वस्त्र

ग्रहगे वर्णेन वस्त्र लक्ष्य ।
स्वामी च यो ग्रहः तस्य वर्णे
न वर्णस्य शशांकस्य प्रजा
यते । रक्ते चंद्रे भवे युद्धं कु
ले रक्तं न संशयः पीते शु
भं विजानीयात् सिते शुभत
रं फलं ।

मारा होता है जो चंद्रमा व(र्ण)
रक्त होवे तो युद्ध होता है ।
जो कृष्णवर्ण होवे तो रक्त ।
होता है पीतवर्ण होवे तो ।

259

शुभफल होता है और जो अंत
र्गत होवे तो अंत शुभफल
होता है अब नैवरचक्र टेलि-
खने का प्रकार कहते हैं ॥

अथ नैवरचक्रन्यासो लिख्य
ते द्वादशारे लिखेच्चक्रे ।
नाड्येकैका त्रिधा पुनः ।
पंचमे पंचमे स्थाने निषेधे
द् तथाक्रमम् । अष्टोत्तरश
ते चैव नाडी संख्या प्रजाय
ते अश्वान्तराणि चक्रस्य
नाडीकाग्रेषु विन्यसेत् ।
दशारनाडीचक्र लिखणा फे
र एक एक तीन तीन विभाग
करणे और पंचम पंचम स्था
न विषे निधकवेधकल्पना ॥

रण करना। अथोत्तरशात इकसो
वि· अठसख्या नाडीकी होती है अथो
२१· के अन्तर नाडीयोंके अग्रविषे
सलग्नलिखेहे। जट क्रूरग्रह·

क्रूरवेधा ह्वरेचेश्च यदाता
कालसंभवः तदा तस्य फ
ले वक्ष्ये विवाहादि शुभाशु
भे। विवाहे क्रूरवेधेन वैध
व्यंव विशीलता यात्रायांव
भवेद्धानि र्गृहे भंगो महा
हवे।

टीका वेध जिसनक्षत्रकोहोवे उ
सनक्षत्रमेंतात्कालिक उसस·
मयदाचइसाहोवे उसदाफ·
लविवाहादिशुभकार्योंमेंक
हतेहै। विवाहविषे क्रूरवे

260

यमे वेधसहोताहै होरसी
माउस्वभाववाली होतेहै हो
रयाआविद्धहानिकरोतेहै हो
रयुक्र विद्धमस्तहोताहै क्रूर।
ग्रहसेसंपूर्णहानिकरणेवाले
सर्वेहानिकराः क्रूराः ग्रहाः
सौम्या फलार्थदाः । शा।
दिवेधो भवेद्यस्य सस्य
स्यन संशयः तत्कालेउफ
ले सर्वे यउक्त मादियाम।
ले
होतेहै शुभग्रह सर्वफलक
रतेहैन। दोतीन शादिपाप
ग्रहोंकावेधहोवे जिसरेना
मनक्षत्रकोंहोवे उसदास्त
होताहै इसमेंसंशयनहीहै

रत्न नत्कालचंद्रमाहासेमुहूर्तफल
वि॰ यो भ्रादियामलविचलिखोहै
२११ पहत्र सम्यशास्त्रोमेयोपितहै
होरशास्त्रोमेनेलिखयामेने
इससशास्त्रविशेषप्रकाशितकी

योपितेत्रसशास्त्रेण म
याचात्र प्रकाशितं अत्र
केचित्स्वरयः पूर्वोक्षित
स्थानचक्रे त्ववरवेधनि
र्णयं करोति पूर्वं प्रस्थान

नाहै अवविशेष कहतेहै।
इसमेंके पंडित पूर्वकथित
स्थानचक्रमें तेबकचक्रका
वेधनिर्णयकरतेहै योआ
चार्यानेकहाहै पूर्वं प्रथम

प्रस्थानचक्रविषे वर्गअन्तर ।
क्रमसे होर उच्चनीचसे होरकु
लपीतआदि वर्णोंसे फलका
विचारकहाहै होरतेंवरचक्रच
क्रविचवी तात्कालिकवेधसमा
चक्रे वर्गान्तरक्रमेणचोच्च
नीच कुलपीतादिफले वि
चार्य तेंवरवेधेपि तात्का।
लवेधसमः फले वर्गान्तर
नाडीसंभवांश वेधक्रमेण
संज्ञामेफलेविचार्य वक्रचे
अन्योन्य चक्रस्पांशकवेधच
क्रे तेंवरचक्रेच संज्ञाद्वयं ज्ञा
तव्यम्
हाफल वर्गान्तर नाडीसंभव
अंशोकेवेधसे क्रमकरकेशु।
द्धिच फलविचारणाकहाहै

रण इसकारणथो इसचक्रदानाम
वि अशेषधमे होरतेबरचक्रपडदो
४१२ सक्ता है। अबपातचक्रकहते
है सूर्यकेहा यो संघटचक्रहै
कृत्तिकादि नक्षत्र जिसमत्रिको

अथपातचक्रे संघट्टचक्रे।
प्राहुके कृत्तिकाद्ये त्रिको
णगे ग्रहयोग फलवाञ्छ
नानापात समुद्भवे एक
रेखागतेर्लीह एककाकिं
शितीडभिः।

णोमेगतहै इसचक्रमे ग्रहोंके
योगदेवसथो फलकहणा
नानापातोंसे उत्पन्नहोयादा
एकरेखामेगतहोवे सूर्य शा
नि केत चंद्रमा तालोहपात
का शास्त्रपानहोदाहै ॥

होर शनि सूर्य चंद्रमा पकरे।
खा गतहोवे तदवी लोहपात
जानना भुध चंद्रमा पकरेखा
मेंहोवे तदवीलोहपातहोंदा
है जिसरेखाविच कृतिका।
मंदार्के शशिभि लींहे तेंदु
भ्यो लोह मादिशेत कृति
का यत्र रेखायां भाद्र भाद्र
जु राहवः तत्र वक्रे गत।
स्वझे मेघलोहे विनिर्दिशे
त
होवे उसरेखाविच शनि रा
हुहोवे उसजगाचंद्रमावी
होवे ता मेघराशिकों लोह
पात का शस्त्रप्रहार होंदा
है ॥

रण प्रजापतिनक्षत्र रोहिणीदाहै ।
वि उसविच शुक्रहोवे होर चतुर्थ
२१३ नाडीविच क्षीणचंद्रमाहोवे ता
दुष्कलग्नविच अद्भुत वायुदापा
तहोताहै होर धीरे धीरे जल

263

प्रजापते भे भृगुसुत युक्ते ।
चतुर्थनाड्यां त्वथ क्षीणचे
न्द्रः दुष्कोदये वाद्भुतवायुपा
तः सकृत्सकृद्वैव जले प्रव
र्तते । सौम्ये रौद्रे तद्दिशो वा
तेरवा जीव भौम भार्गवे
नत्र संस्थिते ।

वर्षदाहै । मृगशिरा आर्द्रा
जिसदिशामेंहै उसदिशादी
जो रावाहै उसविच जीव भौ
म शुक्र स्थितहोवे तो कुम

मीनलग्नविषे जलपातहोंदा
है और प्रकाशमें सोमानी वि.
जली होरबदलगजेदाहै ।
पृच्छा होर प्रश्नादेस्थानमेंगन
थोरेखोहे उसस्थानविखेरा

कुंभे मीने जायते चांबुपातः
खे सोराशी गर्जिते वासव-
स्त्र । पृच्छा प्रश्ना स्थानयो
र्याचरेखा तत्रस्थाने चाग
ते राहुकेतो लग्ने कीटे स
स्थितो भौमचंद्रो प्राहुरार्या
निश्चिते वज्रपाते ।

राहुकेतूहोवे जवनदहृश्चिक
लग्नविखेस्थितहोवे भौम चं
द्रमा तदनिश्चयकरके वज्र
पातका विजलीपातहोताहै

रण यहफलआचार्यवर्यकहतेहै
वि एकाद्यो आदिलेके रुद्रदिक
३१४ ईशानकोणगतयो रेखा उ।
मविच सूर्य भोम धिसा हृह।
स्पतिहोवे तो सिंहलग्नविषे

264

पित्रे पूर्वो रुद्र दिग्गाचरेखा
भाउ भोम धिषण स्तन्नक्ष
केठे लग्ने जायते वह्निपाता
मध्यपादे नस्पृशे देगनाया
रक्ता हसा एकरेखाग्रहा।
स्तुः पिंगा रक्ता राशियः स
ख्यिनास्तुः ।

वह्निपात होता है कन्या राशि
है मध्यपादको नेस्पर्शकरे।
जवतक । रक्तवर्णवालेग्र
ह सूर्य भोम हसवर्णवाले

शनि राहु एक रेखा मे होवे ।
होर पिंगवर्ण रक्तवर्णवा ।
ली राशीकी उसनाडीमेंहोवे
श्रेसनलोहपानहोंदाहै ति ।
नार्थपर्थेननिश्चयकरकेश्र ।
श्रम्बड्डतो जायते लोहपा
तो वत्सपार्थे नूनमाहुः
मुनीश्वाः । शनि लथा भा
स्कर एकरेखा चक्र त्रिको
णे लग्न पछ्रएव सिंहेच भा
ग्में करे शनिश्च उभवलग्न
त्वेन शीघ्रलोह
नीश्चोनेकहाहै । शनि होर
सूर्य एक रेखामें त्रिकोणच
क्रमेंहोवे तो निश्चयकरके
लोहपानहोताहै होरसिंह

रण विच सूर्य होवे मकर विच श-
वि नि होवे तां दोनों लग्नां विच सिं-
२१५ ह मकर विच लोह पात होता
है । अष्टेंद्र शुक्रादी रेखोंमें
265 रेख अष्टम त्रिक दशम सुत
अष्टेंदस्य रेखायां रेख त्रि-
क सुत सप्तमाः चेद्वेद्रा
मजो यत्र वाडुपाते विनि
र्दिशेत् । एकोनविंश रेखा
यां जीव सूर्ये महीसुताः ।
लग्नेशे षष्ठमे लोह द्विती
योशेन वज्रकं ।
पंचम सप्तम इनां स्थानोंमें चं
द्रमा ते बुध होवे उस जगा वा
ज्रपात होता है । एकोनविं
श उन्नीमें १९ रेखामें जीव ।

सूर्य महीसुत मंगल होवे त
ग्रहे पञ्चम अंश विच लोहपा-
त होता है होरती सरे अंश में
वज्रपात होंदा है। त्रिस रेखा
दे विच चंद्रमा स्थित होवे उस

यत्र रेखा स्थितः सूर्य तद्रे-
खा यांत चंद्रमाः जलपा
तं विनिर्दिष्टं सर्वथा गण-
कोत्तमैः। राहुस्तत्र गतश्चे
व लोहपातं विनिर्दिशेत्

विच सूर्य भी होवे तां जलपा-
त जानना कहना गणकोत्त
मों ने यां सूर्य चंद्रमा राहु प
क रेखा में स्थित होवे तां लो
हपात होता है इति कार्थो

रल लैके यो आठमीरेखाहै उसमें
वि॰ हथ शनि स्थित होवे । उसस्था
२११ न विषे महालोहपात लग्नदे
अंशविषे होताहै यिसरेखा
विच वेड्मा स्थित होवे उसवि

हतिकाया छमी रेखा अ
कोकी यत्र संस्थितो । तत्र
स्याने महालोहे लग्नांशा
तत्र वर्तते यस्मि ज्ञेविस्थित
अंशे भस्मतो वाकारिनः कवि:
च मंगल बृहस्पति शुक्र होवे
जिसदा जलचर लग्नदा अंशा
होवे नट वड़ी अद्भुत बृश्चिक
हली । वक्के त्रिकोणे त्रिको
णचक्र विषे आयरेखा अल्प

266

केचर प्रवेशकरकेशुभहोवे
तो वायुचलताहै वज्रपातहो
ताहै त्रिकोणविषेप्रसिद्धहो
ताहै शेषस्थितांशविषेअ-

जलस्थ्य यमलग्नांशे ह्यग्नि
हृष्टि महाद्भुते । चके त्रि-
कोणे खल चायरेखा पश्च
मांशे अनिलस्य वेगम् ।
प्रसिद्धपातं कथितं त्रिको
णे शेषे स्थितांशे कथयंति
वह्निं ।

ग्निपातहोताहै । मध्यविषे
स्थितांशहोवे तो जलपात वा
युपात होताहै आदिस्थितांश
होवे तो निश्चयकरकेलोह

रत्न पातहोताहै। उद्दीशानेत्रके।
वि· वाकाकहतेहैं निश्चयकरके
२६१ स्थितहोवे होरदो कुसविट।
कुलवर्णकेग्रह तिसदोरेखा

267

मध्ये स्थिरांशे सलिलेववा
यु गांदा स्थिरांशे फवलोह
पाते उद्दीशावाका कथ्यंय
ति निश्चितं स्थिता पतावा
हय कुसविटः। तस्मिन्स
मायाति विधु हिरेखे वन्हि
समीप फवपववन्हिः

तिसदोरेखाकेसंपातमें कृ
तिकादसमीपविषे विधू चं
द्रमाहोवे तो निश्चयकरके
अग्निपातहोताहै ग्रादविषे

वरश्रेशाविषे चंद्रमा होवे तो
लोहपात होता है मध्यकेच
रंभशाविषे चंद्रमा होवे तो व
षा सहित वायु होता है । और
चंद्रमा यद सूर्य राहु मंगल
शनैश्चर राशि खल लोहपा
त मध्येच राशि सलिलव
वायुः । एकरेखागतश्च
ओ रविणा राहुणा सन्ना
जायतेच महद्दौर्घ दारुण
लोमहर्षणम् ।

देसाथ एकरेखा में जिसदिन
होवे उसदिन बड़ी दारुणवर्षा
होते है रोगों को खेडे करणेवा
ला और यद शनि देसाथ ।

रण चंद्रमा शुक्रहोवे तो कारोबारोंमे
वि नटकविग्रह कराकलमेंग्रह
१८ होरविचात मारणा इनोंकेवा
ले शेकाकोडीके प्रवेशकह
268 नाचाहिये। जबचंद्ररेखामें

शनिना युतचंद्रस्यादेक
रेखागत स्तथा कविग्रह
विचारेच निर्विशेट विश।
कितः चंद्ररेखागताः क्रूराः
संग्रामे सूचयेत्कवितं हो
वेट वशमादेशं त्रयश्च।
सैन्यचालिनः
क्रूरग्रह युक्तहोवे नटकीसी
जगामे संग्रामसूचनकरतेहै
दोक्रूरग्रहहोवे तो अवश्ययु
द्धकरना जोत्रयक्रूरग्रहहोवे

तो मैं नारायन करदे है न श्रव
श्रवणाय यो नीहार है तिसकर
के शुक्ल श्रेष्ठ किरणवाले हो
तीन क्रूर ग्रह एकरेखा में स्थित

श्रवणांशगताः शुक्रे क्रूराखे
टहयंत्रये एकरेखागतवापि
भवेदाहवसंस्थितिः तथार
किरणो शुक्रः क्रूरेणच शु
भेनच संग्राम स्तवकोनस्या
दवरः क्रूरशुभभवेत ।

होवे तो युद्धकी स्थिति होती है
और तथार किरण चंद्रमा क्रूर
ग्रह करके अथवा शुभ ग्रह क
रके युक्त होवे । संग्राम युद्धका
स्तवन करणेवाला न होता य
द अवर शुभ और क्रूर युक्त होवे

२० रोहिणेय बुध उसना शुक्रके।
वि० साथयुक्तहोवे नीहारधूरके।
२४४ साथ शेशकेयुक्तहोइकेउदय
होवे यदपकरेखाकरकेरहि

रोहिणीयो शनेश्चच नी
हारोशुभि रुद्रनः। एकरे
खा वियुक्तावा जलपाते न
दाविशे कृशानु केत्र भौमा
भ्यां युक्ता शुना जले।

नहोवे तो जलपातहोताहै।
केतु भौम करके चंद्रमा युक्त
होवे तो अग्निपातहोताहै बृह
स्पति शुक्रकने युक्त चंद्रमा।
होवे तो जलपातहोताहै ।
इसी शनिकने चंद्रमायुक्तहो
वे तो लोहपान का युद्ध होता

269

है सूर्य मंगलकने चंद्रमाशु
क्र होवे तो मिटी दी वर्षा होंदी
है राहु शनि करके शुक्र होवे
तो सस्त्र होंदा है योधयों का
बुध बृहस्पति कने चंद्रमा
लोहपातमिना किंभ्यो यु
क्तः कर्यो त्रिशाकरः सू
र्योराभ्यां सहे कथा नमो
किंभ्यो युतो सतिम् । गु
रुभ्यां युतः संधिं शुभेशु
क्रेण शीतगुः धी विक्रम
मयसून यमिशशुत नज्ञयः
क्र होवे तो संधी होंदी है याके
वल शुक्र कने चंद्रमा शुक्र होवे
तो शुभफल करदा है धीकर
के पंचम स्थान विक्रम करके

रण तृतीय व्यय करके द्वादश स्थ
वि न सप्तम धर्मे नवम शत्रुषष्ट
१३. न तु लग्न इनो स्थानों विषे चन्द्र
माको यो ग्रह स्थित होवे शु.
भ सव्य मार्ग करके मेष वृषा

270

शशांका टपसक्रोन स्थितः
सोपि शुभो भवेत् ग्रहाणां
क्रूर सौम्यानां मिदं ज्ञात्वा।
बलाबले। युद्ध याने वि
वाते च कुर्या नटत्रसारतः
श्रमद्धार्ये विशेषः

रिगिणनेस्थों सो ग्रह वी चन्द्रमा
कने शुभ होता है क्रूर सौम्य
ग्रहों का बला:बल जाणीके
युद्ध यान यात्रा विवाह मार
ण इनके अनुसार करणा।

होरविशेषकहतेहैं शशिचंद्र
माराचक्रकहतेहैं राजयोंके
हितरीकामनाकरके रवीति
सूर्य बृहस्पति तथा बुध इनो
देमाध्य चंद्रमायुक्त होवे तो

शशिचक्रं प्रवक्ष्यामि नृपा
णां हितकाम्यया रविर्जी
व स्तथा सोम्य होरस्थ चंद्रे ।
समागते। जलपातो भवे
त्सम्य मित्युक्तं ब्रह्मयामले
रविजीव स्तथा शुक्र होरस्थ
चंद्रे समागते ।

जलपात वर्षाहोतीहै निश्च
यकरके यह ब्रह्मयामलवि
चलिखाहै होर सूर्यगुरु शु
क्र इनके माध्य चंद्रमायुक्त।

२० होवे तो वायुचलताहै पह।
वि विष्णुयामलविचलिखाहै स्र
२१ ये जीव शनि वेद्दमा कर्नेयुक्त
होवे तो अग्निपात का अग।
लगतीहै निश्चयकरके पह

वायुपातो भवेत्सत्य मिस्र
के विष्णुयामले रवि जीव
तथा सौरि निश्च वेद्द समा
गते अग्निपातो भवेत्सत्य
मिस्रके शाक्तियामले। र
वि भौम तथा राहु नेश्च वे
द्दे समागते

शाक्तियामलविचलिखाहै
रवि सूर्य भौम मंगल होर।
राहु इनोंदेसाथ वेद्दमादा
योगहोवे तो लोहपातहो।

271

ता है अर्थात् वशग्गा होकर के
युद्ध होता है पह ब्रह्मयामल
विच लिखा है होर सूर्य राहु ।
केतु इनों दे साथ चंद्रमा युक्त

लोहपातो भवेत् होर रु
द्रके रुद्रयामले । रवि
राहु स्तथा केतु लेस्व चं
द्रे समागते पाषाणपातो
पि भवे दिसके भाउयाम
ले ।
होवे तो पाषाणों की वर्षा हो
ती है पह सूर्ययामल विच ।
लिखा है ।

रण इति पातचक्रस्यान्तरे शाशान्ते
वि· वरचक्रविन्यासः ॥
२२२

272

अव भूचर खेचर चक्र कहते हैं अधस्थ का पृथिवी पर स्थित अर्थात् नीचे का चक्र भूचर चक्र है ऊर्ध्वस्थ का ऊपर आकाश में स्थित ऊपर का खेचर चक्र है ।

अथ भूचर खेचर चक्रद्वय विधिः अधस्थे भूचरं चक्र मूर्ध्वचक्रं तु खेचरम् चर स्थिर विभागेन स्थायि या यि फलं क्रमात्

इस चक्र में चर स्थिर विभाग करके स्थायी यायी दे भेद कर के फल क्रम से कहणा । मेषादि राशि द्वादश कोष्ठ क चक्र में क्रम से लिखणी ।

रण यो वाममार्ग में भूचरचक्रवि
वि. चलिखणी यो होर दक्षिणमा
२२३ र्ग में मेषादि राशि खेचरचक्र में
लिखणी यो योग्रह राङ्कमार्ग।
विष स्थित होवे अर्थात् वक्रग

273

मेषादि द्वादशारेच वाममा
र्गेण भूचरे नक्षत्रांश्च खेचरे।
चक्रे सव्यमार्गेण विन्यसे।
त् येग्रहा राङ्कमार्गस्था भू
चक्रे ते अवस्थिताः सूर्यमा
र्गेण ये लग्नाः खेचराः खेच
रस्थिताः

तो होवे सो भूचरचक्रविचलि
खने। होर योयो ग्रह सूर्यमा
र्ग में स्थित होवे का सीधे चल
ने होवे उनको खेचरचक्रवि

वलिवला । भूचरचक्रविषेण
पीग्रहहोवे होर खेचरचक्रवि-
षे सोम्यग्रहहोवे तो क्रमसेख्या
पीयापीकोवलजानना । भू
चक्रविचपापीहोवे तो ख्या-

भूचक्रे संस्थितैः पापैः खेच
क्रे सोम्यखेचरैः ख्यापिया
पि वलंज्ञेयं क्रमा त्खेचरवि-
वर्तनैः । सोम्याश्च भूचरे
चक्रे क्रूराः खेचरगा यदा
संहारो जायते तत्र सेन्ययो
रुभयोरपि ।

पीवलीहोनाहै होर खेचरच
क्रविचशुभहोवे तो पापीदा
जयहोनाहै । होरशुभग्रहभू
चरचक्रविचहोवे पापीग्रह ।

२० खेचरचक्रविचहोवे तोवडासं
वि. हारहोताहै दोनोसेनाका ।
२२४ भूचरचक्रविचपापी औरशुभ
ग्रहहोवे तो यायीका संहार ।
224 कानाशहोताहै । यो खेचर
भूचरस्था ग्रहायत्र दृश्यंतेच
शुभाशुभाः यायी संहारमा
याति स्थायी चावितते ज-
यी । खेचक्रे खेचराः सर्वे-
सौम्याः सौम्यगतायदि स्था
यिनो बलसंवनो यायी ज
यति सर्वतः ।
चक्रमें सम्पूर्ण शुभाऽशुभग्र
हगतहोवे तो यायी स्थायी
है सेनासमूहको जीतताहै
परंतु यायीहतधाओं करके

शुभ होता है। और यो भूचर खेचर चक्र में शुभाऽशुभ मिश्रित ग्रह होवे तब यायी स्थायी को मिश्रित फल होता है तत्र तिस

भूचरे खेचरे चक्रे यदा मिश्राः शुभाशुभाः तदा मिश्रफलं वाच्यं स्थायिनो यायिनो पिच तत्र पूर्वं मायार्थ (?) एक स्थितं यथा उक्तं खेचरं चक्र मथो भूचर मुच्यते

विषे पूर्वाचार्यों ने ऐसा कहा है उत्तर खेचर चक्र है हेठ भूचर चक्र है इनों का फल निर्णय करके युद्ध काल विषे पीछे मरके पाताल करके इसा करके युद्ध कालानल चक्र की व्याख्या है।

रल परीक्षाकरणी पद्मभावग्रन्थे
वि पनयोः फलनिर्णीय युद्ध ।
२७५ काले पश्चात्कालं चेद्दृशो
व राहुकालानलवत् परी।
क्षा कार्येति भावः ।

275

इतिभूचरखेचरचक्रहृदयम् ।

अबनाडीचक्रकहतेहैं पहना
डीचक्रलिखीके अश्विनीआदि
नक्षत्रोंके चरणोंकी पंक्तीयां
लिखणीयां इसचक्रमें वारां

अथनाडीचक्रे पञ्चक्रमस
मालिख्य दक्षिणाद्यैस्त्रिपं
क्तयः वेधो द्वादशनाडीभि
:कर्तव्यः पन्नगाकृतिः। आ
द्येशेन चतुर्थांशे चतुर्थां॰
शेन वादिमे।

नाडीकरकेवेधदेखणा चक्र
मर्णकारलिखणा और नक्ष
त्रदेआदिअंशाकने चतुर्थअं॰
शाकोवेधहोदाहै चतुर्थदा
आदिअंशाकनेवेधहै इसेदा
नीसेकने नीसेदा इसेक

रत्न ने वेधज्ञानरत्न । इसतरांसे न·
वि· क्षत्रैं वरलोंकावेध वरहोव·
२२१ कन्याकों इसचक्रविचहोवे·
तो उनका मृत्यु होताहै इसवि

द्वितीयेन तृतीयेन तृतीये
न द्वितीयकं एवं सांशाख्य·
यो यत्र जायते वरकन्ययोः
तेषां मृत्युः न संदेहः शेषांशा
ः स्वल्पदोषदाः

वसंदेह नहीं है बाकीदेवेशा·
थोडा दोषकरदेहैन जिसनक्ष
त्रदे जिसचरणकोवेधहोवे उ
सचरणमें विवाहादि शुभकर्म·
स्नेकरणा दोषदेवेशां विवर्ज
रोरी होवे तो करीलेना थोज
रोरी ने होवे तो सारानक्षत्रा

276

गकरणा जिसकोवेधहोवे ।
गऊवनाणाहोवे अथवामित्र
ग्रहणाहोवे होरदेवनाराय
ननकरणाहोवे तो इसचक्र
विच वेधाशावेधवाले अंशवि

गऊमेत्राशु देवाश्च वेधांश
स्थान ष्णभनाः भ्रमांशाक
गनाभत्र्याः तातत्र्याः स्वर
वेदिभिः । अभुः पएणगना
मिंत्र हेशेत्रामे पुंवग्रह अंश
वेधस्थिते मळे विहंडे वेध।
वर्जिते ।
वहोवे तो शुभनहीहोता हो
र अंशविचहोवे तो भळंगशु
भहोताहै स्वरदेजानने वाल
नेजानने होर प्रभुस्वामी पएण

२८ अपार श्रेगना स्त्री मित्र देश
वि॰ ग्राम पुर शृह पुर जव श्रेश्रावे॰
२३१ यवाले नत्तत्रविच स्थितहोन
तो चेगहोतेहै होर जववेधस
वर्जितहोवे तो शुभहोताहै

तस्य मृत्यु नेमेदहो याज्ञाग्र
है रुगुडवे एवंजानाति य॰
श्चक्रे चक्रराजे त्रिनाडिके
तस्य पालितले राज्य सर्वदे
व प्रतिष्ठिते

त्रिसदानत्तत्र वेधयुत होवे तो
उसको मृत्युहोताहै याज्ञावि
धि युद्धविधि रागविधि इसविच
मंदेहनहीहै इसतरांसेयो ३
सत्रिनाचकोंजानताहै केसा

वृक्षहै संपूर्णवृक्षोंकाराजाहै
जो इसकोजानताहै उसराजा
के हाथकेहेठ राज्यमेंदेवस्थित
रैंदाहै ॥

शनिनाडीचक्रम्

अश्विनी त्यों आदिलेके नक्षत्रपं
क्तिदीयुक्तिदे क्रमकरकेलिखे
उप विहाय चारनाडीविषे वेध
होताहै सर्पटे आकार पथ्यचं
क्रलिखणा क्रूरग्रहहैवेदविखे

अथपथचक्रे अश्विन्यादीनि
धिस्नानि पंक्तियुक्ता लिखे
हुधः नाडीचतुष्टये वेधः स
र्पाकृति यथाख्येके क्रूरवेध
ष्यितानाडी नद्दिसेन शुभेदि
ने यात्रायुद्धं नकर्नेसे पथ्यच
क्रे विदे फल ।
ष्यित यो नाडीहै उसविचष्यि
नयो नक्षत्रहै वह उसदिन शु
भनेहोता यात्रायुद्धनेकरणा
ध्यिसदिनविद्धनक्षत्रहोवे पर

पथचक्रदाफलहै ।

279

इतिपथचक्रम् ।

अबकालचक्रकहतेहैं जोनक्ष
त्र ऊपरलिखेहै जोनक्षत्रहैव
लिखने चारनाडीदावेधहोता
है इसविचत्रयनक्षत्रोंकोवेध

अथकालचक्रं नवोर्ध्वगानि
धिष्ण्यानि नवतिर्यग्गतानि
च अधोगतानि धिष्ण्यानि न
व चैव विनिर्दिशेत्

नहीहोताहै सर्पाकारचक्र।
उत्पन्नहोताहै यहकालचक्र

बडादारुणहै। जयनक्षत्रमध्य
विध्यमानहै उनकीकालअवस
ताहै कोणविधिस्थितयोनक्ष
त्रहै उनकीदेष्टामेंत्ताहै दिन

चन्द्र नाडीकृतो वेधो मध्यञ्च
त्रयोस्त्रिका सर्वाकार सम
द्भूते कालचक्रे सुदारुणे।
त्रीणि मध्य गतस्त्रीणि ना
निकालश्रवाणिच कोण॰
स्थितेबधेयोले नेचदेष्टा
हयं मतं।

नक्षत्रोंकेआटमेंलिखीकेना
मनक्षत्रनकविचारणा अव
विच देष्टाविच जिसदानक्ष॰
त्रहोवे उसकोंमरणफलहोता

रण है होर जगा होवे तो शुभफल
वि· कहणा होर कोई जीवउत्पा·
५८· होजावे उसविषे होर सर्पादि
के देशविषे विवाहविषे ल·

280

दिनर्क्षे मादितः कृत्वा ना
मर्क्षे यत्र संस्थिते शुभदं।
ष्टागते रसः शुभ मन्यत्र
संस्थिते। ज्वरिते नष्ट उद्वे
च विवाहे विग्रहे रणे का
लदेशापगे नामे यस्य त
स्य महद्भये दिन नक्षत्रा
दारभ्य नामनक्षत्रं ताव
द्गणनीयम्॥
उईविषे शुद्धविच कालदेश
होर ग्राम शहरविच जिसदा
नक्षत्र होवे उसको वडाभय

होताहै इतिकालचक्रम्।

281

नं० ५४४६-घ (हिन्चामे

व. श्रीरणवीरविजयम

युद्धविषयम (ज्योतिषम)

३४ संख्याके-पत्राणि २८२ (२ऽ२ द्वे पत्रे स्त:)

(सम्पूर्णम)

नं० ५४४६-घ

५४४६-घ